श्रीः ।

विज्ञानगीता ।

महाकवि केशवदासजी रचित.

जिसमें

शिवाशिवके सम्वादमें महामोह और विवेक
का युद्ध तथा स्पष्ट उदाहरणोंके द्वारा
ज्ञानका निर्णय वर्णितहै ।

जिसको

मुमुक्षुजनोंकेलाभार्थ

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुम्बई

स्वकीय "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानेमें

छापकर प्रसिद्ध किया ।

श्रावण सं० १९५१ वि०

श्रीगणेशायनमः ।

अथ

विज्ञान गीता ।

कविवर केशवदास कृत ।

छप्पय—

ज्योति अनादि अनन्त अमित अद्भुत अरूप गुनि ॥ परमानँद पावन प्रसिद्ध पूरण प्रकाश पुनि ॥ नित्य नवीन निरीह निपट निर्वाण निरञ्जन ॥ सम सर्व्वग सर्व्वज्ञ चिन्त चिन्तत विद्वज्जन ॥ वरणी न जाइ देखी सुनी नेति नेति भापत निगम ॥ ताको प्रणाम केशव करत अनुदिन करि संयम नियम ॥ १ ॥

सवैया—सँग सोहतिहैं कमला विमला अमलामति हेतु तिहूँपुरको ॥ भवभूप दुरन्तरनन्त हते दुख मोह मनोज महाज्ुरको ॥ कहि केशव क्योंहूँ बने न निवारत जारत जोरनिहूँ उरको ॥ अति प्रेमसों नित्य प्रणाम करै परमेश्वर को हरको गुरको ॥ २ ॥

दोहा—केशव तुंगारण्य में, नदी वेतवै तीर ॥
जहाँगीरपुर वहु वसै, पण्डित मण्डित भीर ॥ ३ ॥

सवैया—ओड़छे तीर तरंगिणि वेतवै ताहि तरै नर केशव कोहै ॥ अर्ज्जुनवाहु प्रवाह प्रवोधित रेवा ज्यों राजन की रजमोहै ॥ ज्योंतिजगै यमुनासी लगै जग लाल विलो-

चन पाप विपोहै ॥ सूरसुता शुभसंगम तुंग तरंग तरंगिणि गंगसी सोहै ॥ ४ ॥

नराच—तहाँ प्रकाश सो निवास मिश्र कृष्णदत्त को ॥ अशेप पंडिता गुणी सुदास विप्रभक्तको ॥ सुकाशिनाथ तस्यपुत्र विज्ञकाशिनाथ को ॥ सनाढ्य कुंभवारअंश वंश वेदव्यासको ॥ ५ ॥

दोहा—तिनके केशवदाससुत, भापा कवि मतिमंद॥करी ज्ञानगीता प्रगट, श्रीपरमानँदकंद ॥ ६ ॥ देव देव भापाकरैं नागनाग भापाणि॥नरहो नरभापा करी,गीताज्ञानं प्रमाणि ॥ ॥ ७ ॥ मूढ़ लहै जो गूढमतु, अमित अनंत अगाधु ॥ भापाकरि ताते कहौं, क्षमियो वुध अपराधु ॥ ८ ॥

दण्डक—काम क्रोध लोभ मोह दंभादिक केशोराइ पापण्ड अखण्ड झूठ जीतिवेकी रुचि जाहि ॥ पापके प्रताप ताके भोग रोग सोग जाके शोध्यो चाहै आधि व्याधि भावना अशेप दाहि ॥ जीत्यो चाहै इंद्रिगण भाँतिभाँति माया मनु लोपिकै अनेक भाव देख्यो चाहै एक ताहि ॥ जीत्यौ चाहै काल इहु देहु चाहै रह्यो गेहु सोई तौ सुनावै सुनै गुनै ज्ञान गीतिकाहि ॥ ९ ॥

दोहा—परमारथ स्वारथ दुओ, साधनकी आशक्ति ॥ पढौ ज्ञानगीताहि तौ, जो चाहौ हरिभक्ति ॥१०॥ सुनो ज्ञानगीता त्रिमति, छोड़ि देहु सब युक्ति ॥ रत्नाकर विज्ञानया ... की सुक्ति ॥११॥ वेद देखि ज्यों सुमृतिभव, सुमृ-

तिनि देखि पुरान ॥ देखि पुराणनि त्यौं करी, गीताज्ञानप्रमान ॥ १२ ॥ सोरहसै वीते वरष, विमल सतसठा पाइ ॥ भई ज्ञानगीता प्रगट, सवहीको सुखदाइ ॥ १३ ॥ केशव ज्ञानसमुद्र की, मुनिजन लही न थाह ॥ मैं तामें पैरन लग्यो, क्षमियो कविजन नाह ॥ १४ ॥ विदित ओछे नगरको, राजा मधुकर शाहि ॥ गहरवार काशीशरवि, कुल भूषण यश जाहि ॥ १५ ॥

विजय ॥ देव कुदेवनिके चरणोदक बोरत्यो सबै कलिको कुलमानी ॥ दारिद दुःख बहाइ दये दिन दीरघ दान कृपानके पानी ॥ लोकहिमें परलोक रची धरिदेह विदेहनि की रजधानी ॥ राजा मधूकर शाहि से और न रानी न और गणेशदे रानी ॥ १६ ॥ वापी ववेलको राज सुखायगो तोंवरक्षुद्र पठानी नठानी ॥ केशव तौर तरंगिनि पोखरि सूखि गई सिगरी वहु वानी ॥ शाहि अकव्वर अंकउदे मिटि मेघ महीपतिकी रजधानी ॥ उजागर सागर ज्यों मधुसाहिकी तेग वढ़्यो दिनहीं दिन पानी ॥ १७ ॥

दोहा ॥ दोऊ दीन पुकारहीं, जगमें जयकी कीर्त्ति ॥ कृष्णदत्त मिश्रहिदई, जिन पुराणकी वृत्ति ॥ १८ ॥ तिनके विरसिंहदेव सुत, प्रगट भयो रणरुद्र ॥ राजश्री जिन मथिलई, समर अनेक समुद्र ॥ १९ ॥

विजय ॥ जौन ज्यों पुंज पँवार पुवारसे तोंवर तूलके तूल उड़ाए ॥ सिंह ज्यों वाघ ज्यों कच्छप वाहु हते गज

ज्यों युवराज ढहाए ॥ केशवदास प्रकाश अगस्त्य ज्यों शोक अलोक समुद्र सुखाए ॥ वीरनरेशके खड्गखुमानके विक्रम व्याल अनेक विलाए ॥ २० ॥

दोहा ॥ वीरसिंह नृपकी भुजा, केशव यद्यपि तूल ॥ एक शाहिको शूलसी, एक शाहको फूल ॥ २१ ॥

दण्डक ॥ दानिनमें वलिसे विराजमान जिनिपाँहि भागिवेकोहै गतित विक्रम तनकसे ॥ सेवत जगत प्रमुदितनिकी मंडलीमें देखियत केशोदास सौनकशनकसे॥ जोधनिमें भरत भगीरथ सुरथ पृथु विक्रममें विक्रम नरेशके वनकसे ॥ राजा मधुकर शाह सुत राजा वीरसिंह राजनिकी मण्डलीमें राजत जनकसे ॥ २२ ॥

दोहा—द्विजन दिए सुखदानविनु, दानवेश निःकाम ॥ अभयदान देतुनखलक, निपरत्रिया रसकाम ॥ २३ ॥ कुलवल विक्रम दान वश, यश गुण गनत अलेप ॥ चतुर पंचपट्सहस मुख, कहि न जाइ सविशेप ॥ २४ ॥ भूपण सूरज वंशको, दूषण कलिको मानु ॥ दास एक द्विजजातिको, सवहीको प्रभु जानु ॥ २५ ॥

दंडक—केशोराइ राजा वीरसिंहहीके नामहिते अरि गजराजनिके मद मुरुझातहैं ॥ सजल जलद ऐसे दूरिते विलोकियत परदल दिलवल दलकेशे पातहैं ॥ भैरोंकेसे भूत भट जग वट प्रतिभट घट घट देखे वल विक्रम विलातहैं ॥ पीरी पीरी पेखत पताका पीरे होत मुख कारी कारी ढालें देखे कोरेई है जातहैं ॥ २६ ॥

सोरठा—एक समय नृपनाथ, सभामध्य बैठे सुमति ॥ बूझी उत्तम गाथ, कवि नृप केशवदाससे ॥ २७ ॥

नृपवीरसिंह उवाच ॥ कुण्डलिया—गंगादिक तीरथ जिते, गोदानादिकदान ॥ सुनी यथामति देवकी, महिमा वेद पुरान ॥ महिमा वेद पुराण सबै बहु भाँति बखानत ॥ यथाशक्ति सब करत सहितश्रद्धा गुणगानत ॥ यथाशक्ति सब करत भक्ति हरि मन वच अंगा ॥ चित्त न तजत विकार न्हात नर यद्यपि गंगा ॥ २८ ॥

केशव ॥ दोहा—वीर नरेश धनेश तुम, मोहिं जु बूझी गाथ ॥ सोई श्रीशिवको शिवा, बूझीही नृपनाथ ॥ २९ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ तारकछन्द—सुनि शैलसुता सब धर्म्मते साँचे ॥ बहु वेद पुराणनिके रसराँचे ॥ मद क्रोध मनोज महातमछण्डे ॥ जबहीं करियै तबहीं फलु मण्डे ॥ ३० ॥

श्रीपार्वत्युवाच—सुनियै सुरनायक नायकभर्त्ता ॥ तुमही कर्तापरिपालकहर्त्ता ॥ कहियै किहिभाँति विकार नशावै ॥ जिव जीवतहीं परमानँदपावै ॥ ३१ ॥

श्रीशिव दोहा—जब विवेक हति मोहको, होई प्रबोध सँयुक्त ॥ तबहीं जानो जीवको, जगमें जीवनमुक्त ॥ ३२ ॥

श्रीपार्वत्युवाच ॥ तोमर—तुम सर्व्वदा सर्व्वज्ञ ॥ नर कहा जानहिं अज्ञ ॥ कहँ होत प्रगट प्रबोध ॥ प्रभु देहु जीव निसोधु ॥ ३३ ॥

श्रीशिव–सुनि प्रिये प्रेमनिधान, तुम विज्ञ विविध विधान ॥ वाराणशी सुप्रमान ॥ वहहै प्रबोध निधान ॥ ३४ ॥

वीरसिंह–दोहा ॥ केशव हमहिं विवेकको, महामोहको युद्ध ॥ वरणि सुनावहु होइ ज्यों, जीव हमारो शुद्ध ॥ ३५ ॥

इति श्रीचिदानंदमग्नायां विज्ञानगीतायांश्रीशिव पार्व्वत्युप्रश्नवर्णननामप्रथमःप्रभावः ॥ १ ॥

दोहा ॥ विशद द्वितीयप्रकाशमें, यह वर्णिवो प्रकाश ॥ कलह काम रतिको रुचिर,मंत्रविनोद विलास ॥ १ ॥ महादेवकी बात सब, कही सुनी कलिकाल ॥ केशवदास प्रकाशवश, उपजे शूल विशाल ॥ २ ॥ बात कही कलिकाल सब, कलह चल्यो उठि धाम ॥ महामोह पै बीचहीं, आवत देख्यो काम ॥ ३ ॥

सवैया–भूषण फूलनिके अँग अंग शरासन फूलनिको अंग सोहै ॥ पंकज चारु विलोचन चूमत मोहमयी मदिरा रुचि रोहै ॥ बाहुलता रति कण्ठ विराजत केशव रूपको रूपक जोहै ॥ सुन्दरश्याम स्वरूपसने जगमोहन ज्यों जगके मन मोहै ॥ ४ ॥

दोहा–कलह कह्यो कलिको कह्यो, करि प्रणाम अवदात ॥ काशी उदौ प्रबोधको, सुनियतुहै मन तात ॥ ५ ॥

काम–हीरछंद ॥ देव दनुज सिद्ध मनुज संयम व्रत धारहीं ॥ वेदविहित धर्म सकल करि करि मनहारहीं ॥ मो-

हिं निकट तोहिं प्रगट वंधु अरु विरोधको ॥ शुद्ध सदय उदय हृदय होइ क्यों प्रवोधको ॥ ६ ॥

रतिं ॥ दोहा–प्राणनाथ सुनि प्रेमको, जग जन कहत अनेक ॥ महामोह नृपनाथको, सुनियत वड़ो विवेक ॥ ७॥

काम ॥ भुजंगप्रयात–सजौं फूलकेहैं धनुर्व्वाण मेरे ॥ करों शोधिकै जीव संसार चेरे ॥ गनैको वली वीर वज्री विकारी ॥ भए वश्य शूली हली चक्रधारी ॥ ८ ॥

रति ॥ दोहा–सव विधि यद्यपि सर्वदा, सुनियत पिय यह गाथ ॥ वहुसहाय संपन्न अरि, शंकनीयहै नाथ ॥ ९ ॥

काम ॥ विजय–शील विलात सवै सुमिरे अवलोकत छूटत धीरज भारो ॥ हासहि केशवदास उदास सवै व्रत संयम नेम निहारो ॥ भाषण ज्ञान विज्ञान छिपे क्षितिको वपुरा सो विवेक विचारो ॥ या सिगरे जग जीतनको युवती मय अद्भुत अस्त्र हमारो ॥ १० ॥

रति॥ दोहा–संतत मोह विवेक को,सुनियतु एकै वंश॥ वंश कहा गजगामिनी, एकै पिता प्रशंश ॥ ११ ॥

काम ॥ रूपमालाछन्द–ईश माय विलोकि के उपजाइयो मन पूत ॥ सुंदरी तिहि द्वै करी तिहि ते त्रिलोक अभूत ॥ एक नाम निवृत्ति है जग एक प्रवृति सुजान ॥ वंश द्वै ताते भयो यह लोक मानि प्रमान ॥ १२ ॥

योगवाशिष्ठयथा श्लोक–चित्तंचेतोमनोमाया प्राकृतश्चेतनामपि ॥ परस्मात्कारणादेव मनःप्रथमसुच्यते ॥ १३॥

दोहा–महामोह दे आदि हम, जाए जगत प्रवृत्ति ॥ सुमुखि विवेकहि आदि दै,प्रगटत भई निवृत्ति ॥ १४ ॥

रति ॥ दोधक–जौं कुल एकरु एकपिता ज्यौं ॥ तौ अति प्रतिम प्रेम निशायों ॥ आपुस माँझ सहोदर साँचे ॥ क्यों तुम वीर विरोधनि राँचे ॥ १५ ॥

काम ॥ वैर विमातनि में चलि आयो ॥ आजु नयो हमहीं न उपायो ॥ देव अदेव बड़े अरु बारे ॥ जूझत पन्नग पक्षि विचारे ॥ १६ ॥ मातु पितै सबही हम भावैं ॥ वै कलि-मध्य प्रवेश न पावैं ॥ है उनसों जग काजु न काहू ॥ तातें वै चाहत मारयो पिताहू ॥ १७ ॥

रति ॥ दोहा–ऐसेही पिय कहत हौ, कै पायो कछुभेद ॥ करिहै कौन उपाइ करि, तुव कुलको उच्छेद ॥ १८ ॥

काम–एक मंत्र अति गूढ़है, मोसों कहिये कन्त ॥ कहिये कैसे त्रियनिसों, दारुणकर्म दुरन्त ॥ १९ ॥

रति ॥ सोरठा–यद्यपि ऐसी बात, तदपि कहो पिय करि कृपा ॥ महाराज मनजात, तुम सर्वंग सर्वज्ञ हौ ॥ २० ॥

काम ॥ रूपमालाछन्द–भामिनी भव भावना तिहि भूलि चित्त न राँचु ॥ किं प्रवृत्तिनिको गनै वह झूँठ होइ किसाँचु ॥ रति किंदशा वह किंच दन्ति कहौहै एकहि अंश ॥ मृत्युमूरति राक्षसी इक होइगी ममवंश ॥ २१ ॥

रति ॥ नगस्वरूपिणीछन्द-प्रसिद्ध पापचारिणी ॥ अशेष वंश [illegible] ॥ विवेक सम्मता भई ॥ किधौं असम्मता भई ॥ २२ ॥

काम ॥ दोहा–करै विनाश जु औरको, ताको नित्य विनाश॥केशवदास प्रकाश जग, ज्यौं यदुवंश विनाश॥२३॥

केशव ॥ दोहा–काम कह्यो तव कलहसों, दिल्ली नगरी जाइ ॥ दंभहि दे उपदेश तव, देखहि प्रभुको पांइ ॥ २४ ॥

इति श्रीचिदानन्दमग्नायांविज्ञानगीतायां कलह रतिकाम-सम्वादवर्णननामद्वितीयः प्रभावः ॥ २ ॥

दोहा–या तीसरे प्रकाश में, दीह दंभ आकारु ॥ अहं-कार अरु दंभ को,कहिवो मिलनविचारु ॥ १ ॥ दंभ विलो-क्यो कलह जो, दिल्लीनगरी जाइ ॥ वंचतु जग जैसे फिरतु मोपै वर्णि न जाय ॥ २ ॥

मरहट्टा–काम कुतूहल में विलसै निशवार वधू मनमा-नहरे॥प्रात अन्हाइ वनाइ दै टीकनि उज्ज्वल अम्वर अंग धरे॥ ऐसे तपोतप ऐसे जपोजप ऐसे पढ़ो श्रुति शारुशरे ॥ ऐसो योग जयो ऐसे यज्ञ भयो वहु लोगनिको उपदेश करे ॥३॥

दोहा ॥ कलह कह्यो कालिको कह्यो, सवै दंभसोंजाइ ॥ दंभ तवहिं नृपनाथ सों, जाइ कह्यो अकुलाइ॥४॥कलह गए तववे गही,वासरकेआरंभ॥कालिन्दी सरिताहि को, उतरत दे-ख्यो दंभ॥५॥जरत मनो अभिमान ते, ग्रसत मनो संसार ॥ निन्दत है त्रैलोक को,हँसत विवुध परिवार ॥ ६ ॥

कामरूपमालाछन्द ॥ कवहूँ न सुन्यो कहूँ गुरुको कह्यो उपदेशु ॥ अज्ञ यज्ञ न भेद जानत धर्म्म कर्म्म न लेशु ॥ स्नान दान सयान संयम योग याग सँयोग ॥ ईशता तनु

गूढ़ जानत मूढ़ माथुर लोग ॥ ७ ॥ वेद भेद कछू न जानत घोप करत कराल ॥ अर्थ को न समर्थ पाठ पढ़ै मनो शुकवाल ॥ मेखला मृग चर्म्म संयुत अछत माल विशाल॥ शीशपै वहुवार धारण भस्म अंगन डाल ॥ ठौर ठौर विराजहीं मठपाल युक्त कुतर्क ॥ घोप एक कहा रहो जा संगते वहु नर्क ॥ ८ ॥

दोहा–शूद्र निसों मुद्रित करै, उर उदार भुज दण्ड ॥ शीश कर्ण कटि पानि कुश, दंभ परचोव प्रचण्ड ॥ ९ ॥

केशव ॥ दोधक–दंभहि देखिगयो जव नीरे ॥ हूं कृत सों वरज्यो मतिवीरे ॥

शिष्य–दूरि रहो द्विज धीरज धारो ॥ पाइँ पखारि इहाँ पशु धारो ॥ १० ॥

दंभउवाच ॥ दोहा–जानतहों दिल्ली पुरी, तुरुक वसत सव ठाँइ ॥ अतिथिनि को दीजतु न यह, आसन अर्घ सुभाइ ॥ ११ ॥

शिष्य ॥ तारकछन्द–कुल शील न कोविद जानियै जाको ॥ कहि क्योंकरि अर्चन आवत ताको ॥ सुधि मूढ़ सयान सुन्यो सवुतेरचो ॥ तुम काननहूँ न सुन्यो यश मेरचो॥ १२ ॥

सरस्वतीछन्द–मायापुरी इक पावनी जग गौड़ देश प्रसिद्ध ॥ माता पिता मम धर्म संयुत लोक लोक प्रसिद्ध ॥ जाए सुपुत्र अनेक मैं तिनमाहिं सुविप्रहि युक्त ॥ विश्वंभरायल देव दक्षिण जानि जीवन मुक्त ॥ १३ ॥

दोहा—पाँयपखारि यहीं भयो, अहंकार अनुकूल ॥
बैठि दूरि द्विज जनि छुवो, गुरु को आसन मूल ॥ १४ ॥

सोरठा—परसि तुम्हारो गात, पथिक विलोकि प्रस्वेद कण ॥ जगस्वामीको गात, ज्यों न छुवो त्यों बैठिये ॥ १५ ॥

दोहा—प्रभु को करत प्रणाम जब, देव देव मुनि भाल ॥
छ्वै न सकत आसन क्षिती, मुकुट मणिन की माल ॥ १६ ॥

दंभउवाच ॥ सवैया—एक समै हम सत्यपुरी हि गए अवलोकन पाप प्रनाशन ॥ ब्रह्मसभामहँराइ उठी कहि केशव केवल पाप विनाशन ॥ देव सहाइक लोक विनाइक बैठिबेको हम ल्याइकै आसन ॥पावन बावनके पग को थल मोहिं बताइ दयो कमलासन ॥ १७ ॥

अहंकार॥विजय—काम न कामकी सुंदरताई पुरंदर की प्रभुता कहि को है ॥ बुद्धि के बंधु गणेश मै नाहिने को कुरखेत की बृद्धि हि टो है ॥ पीतकके तनतेजुरती कन बात मै पातक सों बरुसोहै॥ केतिक शुद्धि है गंगमें केशव सिद्धि महेश की मोहित मोहै ॥ १८ ॥

दोहा—दंभ लोभ हँसि हँसि गहे, अहंकारके पाँइ ॥
अहंकार आशिष दई, शोभन सुखद सुभाइ ॥ १९ ॥

अहंकार॥ दोहा—पुत्र अनृत युत कुशल हो, बीत्यो काल अपार॥प्रभु प्रसाद ते कुशल है, अब मेरो परिवार२०॥

अहंकार॥ दोधक—कारज कौन इहाँ प्रभु आए ॥ पुत्र

सुनो हम काम पठाए ॥ द्योसकु ह्याँ रहिये अब ताते ॥ आवत हैं प्रभु देवसभा ते ॥ २१ ॥

अहंकार ॥ तारक—किहि कारण आवत हैं सुधिपाई ॥ सुविवेक कथा न सुनो दुखदाई ॥ कहि पुत्र विवेक कथा वह कैसी ॥ कहिवे कि नहीं कहि मेरी सों तैसी ॥ २२ ॥

दंभ—सरस्वतीछन्द ॥ वाराणशी सुनियै बढ़्यो बहुधा विवेक विचार॥विज्ञान को तिनते कहैं सब होइगो अवतार॥ सोई प्रवृत्ति अनेक वंश विनाश हेत सुभाउ ॥ ताके अशेष विलोपु कारज आइहै इहि गाउँ ॥ २३ ॥

अहंकार ॥ सवैया—भागीरथी जहँ ऐसिहै केशव साधुन के जहँ पुंज लसैं रे ॥ सन्तत एक विवेक सो वेद विचारन सों जहँ जीउ कसैं रे ॥ तारक मंत्रके दाइक लाइक आपु जहाँ जगदीश बसैं रे ॥ साधन शुद्ध समाधि जहाँ तहँ कैसे प्रबोध उदोत नसैं रे ॥ २४ ॥

दंभ ॥ सवैया—शोक गिरावत है अति क्रोध गुमान गहैं कहि आवै न हाँ जू ॥ लोभ लए दश हूँ दिश डोलत हैं अपमान प्रहार तहाँ जू ॥ झूठकी ईठइ नर्क के नीरधि बूड़त ना अवलम्ब जहाँजू ॥ काम करैं बहु भाँति फजीहति शोधनि को अवकाश कहाँ जू ॥ २५ ॥

दोहा—को बरजै प्रभु को प्रगट, बरजे होइ अनर्थ ॥ बोध उदैके लोपको, एकै पेट समर्थ ॥ २६ ॥

कवित्त—केशव क्यों हूँ भरयो न परै अरु जोर भरे

भय की अधिकाई ॥ रीतत तौरि तयो न घरी कहुँ रीति गये अति आरतताई ॥ रीतो भलो न भरो भलो कैसहुँ रीते भरे विनु कैसे रहाई ॥ पाइयै क्यों परमेश्वरकी गति पेटनकी गति जानि न जाई ॥ २७ ॥

सवैया–पेटनि पेटनि हीं भटक्यो वहु पेटनि की पदवी ननक्योंजू॥पेटतें पेटलियो निकस्यो फिरके पुनि पेटही सों अटक्योजू ॥ पेटको चेरो सबै जग काहूके पेटन पेट समात तक्यो जू ॥ पेटके पंथन पावहु केशव पेटहि पोषत पेट पक्योजू ॥ २८ ॥

दोहा–तृपा बड़ी वड़वानली, क्षुधा तिमिंगिल क्षुद्र ॥ ऐसो को निकसै उपरि, उदर उदार समुद्र ॥२९॥ मन वच कर्म्मंजु कपटतजि, सेइ रहे नर कोइ ॥ केशव तीरथ वासको, ताहीको फलु होइ ॥ ३० ॥

अगस्त्यसंहितायां यथा श्लोक–यस्यहस्तौचपादौच मनश्चैवसुसंयतं॥विद्यातपश्चकीर्त्तिश्च सतीर्थफलमश्नुते ३१॥

इति श्रीचिदानन्दमग्ना विज्ञानगीतायां अहंकार दंभ सम्वाद वर्णनंनामतृतीयःप्रभावः ॥ ३ ॥

दोहा–महामोह को वर्णिबो, चौथे मांझ प्रयानु ॥१॥सागर सरिता वर्षसुर, सातो द्वीप प्रमानु ॥ महामोह विहरत हुते, पर्वत लोकालोक ॥ कलह विलोके जाइ तहँ, ब्रह्मदोपयुत शोक ॥ २ ॥

तोमरछंद–कलह की सुनि वात ॥ १ ॥ उठि चले मन के तात॥बहु उठे दुंदुभि वाजि ॥ तहँ विविध सेना साजि ॥ ३ ॥

चामरछंद–धर्म कर्म शर्म के सुशर्म यज्ञ दोष वन्त ॥ तात मात भ्रात दोष दीन दोष जे अनंत ॥ मित्र दोष मंत्रि दोष मंत्र दोष के जुनाथ ॥ देवदोष ब्रह्मदोष लेचले अनेक साथ ॥ ४ ॥

दोहा–महामोह अति कोहकै, दोपनि के अवनीप ॥ कीनो प्रथम मिलानु महि, मोहन पुष्कर द्वीप ॥ ५ ॥

चामरछन्द–चारिलाख योजन प्रमाण मान नाखिये ॥ शुद्धनीरको जहां प्रसिद्ध सिंधु भाषिये ॥ ब्रह्म रूपको जहाँ अशेप जंतु सेवहीं ॥ मान तत्त्वको गिरीश खंड द्वै विराजहीं ॥ ६ ॥

मल्लिका छन्द–योजन प्रमाण दीश ॥ द्वीपलक्ष है वतीश ॥ सातखण्ड हैं सुदेश ॥ सातऊ नदी सुवेश ॥ ७ ॥

दोहा–एकसुधुम्नानी कहै, और मनोजव जानु ॥ चित्ररेफहै तीसरो, चौथो गणि पवमानु ॥ ८ ॥ पंचम जानि पुरोजवहि, छठो विमल वहु रूप ॥ विश्व धातु है सात जो, यह खंडनि को रूप ॥ ९ ॥ उपसृष्टि अपराजिता, आयुर्दा अनघासु ॥ निज धृति नदी सहस्र धृति, पंच पदी सु प्रकाशु ॥ १० ॥ सब जन शाका द्वीप को, प्राणायामनि साधि ॥ वायुरूप जगदीश को, सेवत सहित समाधि ॥ ११ ॥ केशव शाकादीप को, समुझै सकल सुजानि ॥ सागर क्षीर समुद्र तहँ, श्रीपति को सुखदानि ॥ १२ ॥ उचक्यो शाका

दीपते महा मोह अकुलाइ॥ मेल्यो क्रौंचहिं दीप जहँ, दधि सागर सुखदाइ॥ १३ ॥ जलरूपी जगदीशको, सेवत सकल सुजान ॥ केशव योजन जानि सो, सोरह लाख प्रमान ॥ १४ ॥ मेघपृष्टि प्राविष्टय पुनि, प्राणायाम सुधाम ॥ लोहितानु तहँ शोभियै, खण्ड वनस्पति नाम ॥ १५ ॥ शुक्ला, अभया, अज्ञका; अरु पवित्रवति नाम ॥ तीर्थवती अरु रूपवति, अमृतौघा सुखधाम ॥ १६ ॥

तोमरछन्द–कुशदीप में लिय जाइ ॥ घृतके समुद्रहि पाइ ॥ तहँ अग्निरूप अशोक ॥ जगदीश पूजत लोक ॥१७॥

दोहा–सत्यव्रत शुचि भक्ति भट, रुचिव केशव दान ॥ नाभि गुप्त ममदेव तहँ, सातो होत प्रमान ॥ १८ ॥ रस कुल्या मंत्रावली, मधुकुल्या श्रुतिविंद ॥ घृतकुल्या शुचि गामिनी, नादि सहिता मृत बिंद ॥ १९ ॥ आठलाखयोजन सबै, कुशद्वीप सुखदाइ ॥ सो तजि शाल्मलि दीपमैं, मेल्यो जग दुखदाइ॥ २० ॥

चामर–चारिलाखयोजन प्रमाण दीप जानियै ॥ मध्व को समुद्र देखि देखि सुःख मानियै ॥ सात खण्ड सातहीं तरंगिनी वहैंजहीं ॥ सोमरूप ईश को अशेष जंतु सेवहीं ॥ २१ ॥

दोहा–पारिभाद्र सो मनस अरु, आविज्ञात सुखर्ष ॥ रमणक अप्याजन सहित, देउ सुरोचन हर्ष ॥ २२ ॥ सिनीवाली रजनी कुहू, मंदा राका जानु ॥ सरस्वती अरु अनुमती, सातो नदी बखानु ॥ २३ ॥

नाराचछन्द–लक्षदोइ योजन पलक्ष दीप जानिये ॥ तरंगिणी समेत सात सातखण्ड मानिये ॥ दिनेश रूपदेव को अशेषजंतु सेवहीं ॥ नृदेव देव शत्रु मोहि आनि मेलि जोवहीं ॥ २४ ॥

दोहा–सातक्षेमससुद्र शिव, जय यश वर्णि प्रमान ॥ अमृत अभय इहि नाम युत, सातो खण्ड, प्रमान ॥ २५ ॥ अरुना नमना संभवा, वत्सरता अवदात ॥ सावित्री अरुसुप्रभा, सुरसा सरिता सात॥२६॥ रस सागर अवलोकियो, महा मोह तिहिठौर ॥ केशवदास विलास जहँ, करत देव शिरमौर ॥ २७ ॥ आयो जम्बूद्वीपमै, महा मोह रण रुद्र ॥ योजन लक्षप्रमाण तहँ, देख्यो क्षार समुद्र ॥ २८ ॥

मधुछन्द–है नव खण्ड विराजत जाके ॥ मानहुँ सुंदर रूपक ताके ॥ एक इलावृत खंड कहावै ॥ मंदरते अतिशोभहिंपावै ॥ २९ ॥ ताते चली सरिता बहु मोदा ॥ नाम कहावति है अरुणोदा ॥ चारि तहाँशुभ बाग विराजैं ॥ नित्य नए फल फूलनि साजैं ॥ ३० ॥

दोहा–चित्ररथ अतिचारु तहँ, वैभ्राजकु इहि नाम ॥ और सर्वतोभद्र पुनि, नन्दनसव सुखधाम ॥ ३१ ॥

सुन्दरीछन्द–भूत लहैं शिवके वन को जहँ ॥ पारवती पति केलि करैं तहँ ॥ भूलि जो कोऊ तहाँ जनु आवै ॥ सो तबहीं तरुणीपद पावै ॥ ३२ ॥

दोहा–भद्राश्वनाम धर्मसुत, सोभद्राश्वक खण्ड॥ हयग्रींव जगदीशको, सेवत जीव अखण्ड॥ ३३॥

हरिगीतिकाछन्द–हरि वर्ष खण्ड नृसिंहको प्रहलाद सेवत साधु॥ शुभ केतमाल रमारमेशहिं काम कर्म करालु॥ शुभता हिरण्मय खण्ड मण्डित यत्र कूरम वेष॥ पितृनाथ सेवत अर्जमा, मन काय वाक विशेष॥ ३४॥

दोहा–मत्स्यरूप भगवंतको, सेवत बुद्धि अखण्ड॥ मनसा वाचा कर्मणा, मनु नृप रम्यक खण्ड॥ ३५॥ महामोह को पुरुष लखि,भाग्यो सेन सँयुक्त॥ केशवदासप्रकाश सुख, हँसे देव मुनि मुक्त॥ ३६॥

रूपमालछंद–आदिब्रह्म अनन्त नित्य अमेय श्रीरघुवीर॥ सावधान अशेप भावनिसंग लक्ष्मण धीर॥ शुद्ध बुद्धि प्रबोध युक्त विदेहया अतिसाधु॥ सर्वदा हनुमंत सेवत नित्य प्रेम अगाधु॥ ३७॥

दोहा–भरतखंडमें आनिकै, कीनो मोह मिलान॥ नारायण को भजन तहँ, नारद बुद्धिनिधान॥ ३८॥ आयो तव पापण्ड पुर, देश अशेषनि जीति॥ कीनो तहाँ मिलान कछु, वासर बाढ़ी प्रीति॥ ३९॥

सवैया–काम कुमार से नन्दकुमार की केलि थली जहँ नित्य नई है॥ वानकी पावन तातन लागत पापिनिहूं कहँ मुक्ति भई है॥ पुष्प शरासन हा घरही व्रही रति

कीरति जीति लई है ॥ पुष्प शरासन श्रीमथुराभव भान भवा गुण भोर भई है ॥ ४० ॥

इति श्रीचिदानन्दमग्नायां विज्ञानगीतायां सप्त द्वीपवर्णनं नामचतुर्थप्रभावः ॥ ४ ॥

दोहा—पाँचें प्रगट प्रभाव में, कहिबो मिथ्या मंत्र ॥ संतत मिथ्या दृष्टि सों, महामोह को तंत्र ॥ १ ॥

महामोहउवाच ॥ कुण्डलिया—देही न्यारो देहते, कहत सयाने लोग ॥ दुसह दुःख ह्याँ देखि पर,लोक करहिं गे भोग ॥ लोक करहिंगे भोग योग संयम व्रत साधें ॥ भूले जहँ तहँ भ्रमत सकल शोभा सुखबाँधें ॥ भूले जहँ तहँ भ्रमत होत तन सों न सनेही ॥ जो झूठो है देह ततो अति झूठो देही ॥ २ ॥

मधु—तीरथवासी यहै सब जानै ॥ देह ते देहि को भिन्न बखानै ॥ देहको देखत ज्यों सब कोऊ ॥ त्यों किन देही को देखत सोऊ ॥ ३ ॥ साँचो जो जीव सदा अविकारी ॥ क्यों वह होत पुमान ते नारी ॥ जो नर नारी समान कै जानै ॥ तौ क्यों परनारि को दोष न मानै ॥ ४ ॥ जौं तम देही अवर्ण कै लेखौ ॥ देह धरे बहु वर्णनि देखौ ॥ देही को मानत हौ अविनाशी ॥ पातकी होत क्यों देह विनाशी ॥ ५ ॥ जौं तुम देह अनित्य बखानो ॥ नित्य निरंजन देही को मानो ॥ आपनी बात जनावहु काहू ॥ काहे को गंगहि हाड़ लै जाहू ॥ ६ ॥

भुजंगप्रयात छन्द–वहै शास्त्र ताते सदा सत्य लेखो ॥ प्रभा सिद्धिता मध्य प्रत्यक्ष देखो ॥ धरातेज वाताम्बु है तत्त्व चारयो ॥ सदा इष्टतो अर्थ काम्ये विचारयो ॥ ७ ॥ वहै लोक तो लोक है मुक्त विवै ॥ सदा चर्य चर्व्वाक ते औरु निन्द्ये ॥ विलोपो जहाँ धर्म धर्म्माधिकारी ॥ विलोपो सदा वेद विद्या विचारी ॥ ८ ॥

दोहा–देखि सवै पाषण्ड पुर, अपनी सिगरी सृष्टि ॥ रावर माँझ गए जहाँ, रानी मिथ्या दृष्टि ॥ ९ ॥

भुजंगप्रयात–दुराशा जहाँ तृष्णिका देह धारैं ॥ दुहूँ ओर दोऊ भले चौंर ढारैं ॥ बड़ी आरसी चारु चिन्ता दिखावैं ॥ गुमानी धरे पान निन्दा खवावैं ॥ १० ॥ पिपासा क्षुधा क्षुद्र वीना बजावैं ॥ अलच्छी अलज्जी दुओ गीत गावैं ॥ लिये अन्न शंका असाभानि राचैं ॥ नए नृत्य नाना असंतुष्ट नाचैं ॥ ११ ॥

दोहा–अँचवाती मदिरा अरुचि, कुमतिन कथा विधान॥हिंसासो हँसिजाति सुनि, रतिके के वचन पिछान॥१२॥

राजा ॥ अनकूल–आय कछू देखति दुचिताई ॥ लोकनिमैं यद्यपि प्रभुताई ॥ शासन मेरो सवै जग पारै ॥ एक विवेक सुमोमन सारै ॥ १३ ॥ कौन भाँति वह जीतन पाऊँ ॥ मंत्र देहि चित ताहि लगाऊँ ॥ बूझि बूझि देखे हम मंत्री ॥ पुत्र मित्रजन सोदर तंत्री ॥ १४ ॥

रानी ॥ तोमर–सुनि राज राज विचारु ॥ वह शत्रु दीहनि-

हारु ॥ सहसा न दीजै दांड ॥ यह राजनीति प्रभाउ ॥ १५ ॥

भुजंगप्रयात—जु वाराणशी मैं जिते जीव देखो ॥ सुकाहू न शङ्कै महासाधु लेखो ॥ जुताको तजो नाम जी मोहिं लाजा ॥ सुवंदे सबै लोक लोकेश राजा ॥ १६ ॥

दोहा—गंगा अरु वाराणशी, महादेव तिहि ठौर ॥ पांउ न धरिये पंथ तिहि, सुनो रसिक शिरमौर ॥ १७ ॥

राजोवाच ॥ भुजङ्गप्रयात—कहा कामिनी तैं कही बात मोसों ॥ छमी प्रेम नातें कहों बात तोसों ॥ वहै ग्राम होतौ सुलेही रह्योहों ॥ सदा सर्वदा लोक लोकेशहोहों ॥ १८ ॥ तहाँ लोग मेरे रहैं वेषधारी ॥ जटी दण्ड मुण्डी यती ब्रह्मचारी ॥ पढ़ैं शास्त्रको वेदविद्या विरोधी ॥ महाखण्ड पाषण्ड धर्म्मीपरोधी ॥ १९ ॥

विजय—मारत राह उछाहनीसों पुर दाहत माह अन्हात उचारैं ॥ बारविलासिनि सों मिलि पीवत मद्य अनोदिकके प्रतिपारैं ॥ चोरी करैं विभिचार करैं पुनि केशव वस्तु विचारि विचारैं ॥ जो निशि वासर काशीपुरी महँ मेरेई लोग अनेक विहारैं ॥ २० ॥

रानी ॥ तोटकछन्द—यह बात सुनी जबहीं तबहीं ॥ हँसि बोलि उठी सु सुनी सबहीं॥जिनि भूलहु भर्म मृषानि अबै ॥ हमपै सुनिये पुर धर्म्म सबै ॥ २१ ॥ इक यज्ञ यजैं तपसानि करैं॥इकश्रीहरि श्रीहरि नामररैं॥इक वेद विचारनि चित्त हरैं ॥ इक न्हान विधाननि पाप तरैं ॥ २२ ॥

इक नीर अहारनि वायु धरें ॥ इक साधि समाधि न आधि हरें ॥ इक शुद्ध सदा भगवंत भये ॥ जगजीवन मुक्त शरीर सये ॥ २३ ॥

सुंदरीछन्द–सुंदरिकी यह वात सुनी जव ॥ रोष कर्‌यो कलिनाथ कछूतव ॥ जानत नाहिं न मोवल तू शठ ॥ मैं जग वश्य करौं हठही हठ ॥ २४ ॥

इतिश्री विज्ञानगीतायां चिदानंदमग्नायां मिथ्यादृष्टि महामोह मंत्रवर्णनं नाम पंचमप्रभावः ॥ ५ ॥

दोहा–छठे माँझ तीरथ नदी, महा मोह दल भाउ ॥ गंगा शिव वाराणशी, मणिकर्णिका प्रभाउ ॥ १ ॥

राजोवाच ॥ दोहा–मैं जितने तीरथ लए, तितने कहों वखानि ॥ त्यों लैहौं वाराणशी सुनु, सुंदरि सुखदानि ॥ २॥ माता पुर मायापुरी, महाकाल अघहर्ण ॥ मलिकाअर्ज्जुन मैं लियो, मिश्रकुमाहि गोकर्ण ॥ ३ ॥ महिटंतरु माहि केशरी, चंडीसुर केदार ॥ कारिनूकुनख वश कर्‌यो, कुरुपेत कपर्दुअपार ॥ ४ ॥ काहिल कोलापुर लयो, कालिंजर पलु एक ॥ काँवरु कन्यानिकी पुरी, कार्त्तिकेय करि टेक ॥ ५ ॥ गया गयापुर गोमती, गोदावरी विशेषि ॥ विश्वनाथ अरु विश्वजित, ब्रह्मावर्त्तहि लेखि ॥ ६ ॥ विरूपाक्ष त्र्यम्बक लयो कुशावर्त्त अनयाश ॥ जयन नृसिंह पुरी लई, नागेश्वरी प्रकाश॥७॥अवधपुरी पुर योगिनी, जालंधर सुनुवाल ॥ मान

सरोवर मानिनी, जगन्नाथ सविशाल ॥ ८ ॥ वदरीवर द्वारावती, अमरावती प्रमान ॥ जम्बूक्राश्रम मैं लयो, तव कुसुनहिं सुजान ॥ ९ ॥ सोमनाथ त्रिरंत है, आल नाथ एकंग ॥ हरिक्षेत्र नैमिष सदा, अंशतीशु चित्रंग ॥ १० ॥ प्रगट प्रभासु सुरेनुका, हर्म्य जापु उज्जैनि ॥ शंकर पूरनि पुष्करु, अरु प्रयाग मृगनैनि ॥ ११ ॥ वृंदावन मथुरा लई, कान्तिका कहँजीति ॥ को वपुरी वाराणशी, जाकी मानति भीति ॥ १२ ॥ करतोया चर्म्मानला, चर्मन्वती सुनि चारु ॥ वप्रद्रन्त मंदाकिनी, विदिशा कृष्णा चारु ॥ १३ ॥ चित्रोत्पला पिशाचिका, वपचा वध्या जानि ॥ तपसा सेनी मंजुला, शुक्तिमती उरआनि ॥ १४ ॥ लूती तापी अंगुली, अभया हिरन दशान ॥ लिखिधावतीसुवाहिनी विमला वेना जान ॥ १५ ॥ उत्पलावती इच्छुला, भेमरथी शुभचारु ॥ वैतरणी अरु शुक्तिमा, वैलासिनी निहारु ॥ ॥ १६ ॥ मंदवाहिनी मंदगा, कावेरीहि वखानि ॥ त्रिदिवाताम्रपन्निका, कुसुदवतीहि सुमानु ॥ १७ ॥ कृतमाला कालांगुली, वंशकरारि विकाहि ॥ महेन्द्राल तपती सवेशा पुन्याको चितचाहि ॥ १८ ॥

भुजंगप्रयातछन्द—शिवाधूतपापा शतद्रू विपासा॥वितस्ता [illegible] सदा कर्मनासा॥गणो गण्ड[illegible] [illegible] ऐरावती पारिजाता ॥ १[illegible]

गोमतीसी॥ इलावाहु दापामणी देवकीसी॥ कुमारीक्रुपा पाप पुंजै नसावै॥ कलौ वेत्रवतीं सुगंगा कहावै॥ २०॥

नाराचछन्द–अशेषशर्मदा विशेष जीति नर्मदा लई॥ जग प्रभास कोशुना कृतांतसोदरी जई॥ सरस्वती पतिव्रता चिन्हाउजोर आपने॥ लईजुजन्हु एकहीं चुरू अँचैसु को गने॥ २१॥

दोहा–पावन सरिता सवलई, भरतखण्डकी वाम॥ औरो नदी अपारको, वरणै तिनके नाम॥ २२॥

तोटकछंद–बहु दान अनाथनिदे जु डरै॥ द्विज गाइनि के दिन पांइ परै॥ परनारि विलोकि हिये हहरै॥ कहिमोसों क्यों दीन विवेकु लरै॥ २३॥

दोहा–मेरेकुल के सर्वदा प्रोहित हैं पाखण्ड॥ जाको चाहत सर्वदा, इहि सिगरे ब्रह्मण्ड॥ २४॥

मधुछन्द–नित्य तपीनि जपीनि जुभावै॥ जापक पूजक सों मनुलावै॥ तंत्रनि मंत्रनि के उर सोहै॥ जोधनि वोधनिके मनमोहै॥ २५॥ शान्तनि रातनि लै उर धारै॥ भागिचलै हरि भक्त विचारै॥ जाहि डरै रसभाव शमानो॥ को यह एकु विवेकु अयानो॥ २६॥ देहुखरोग वड़ो सुतजाको॥ वंदिपरे सिगरे जगताको॥ आनंद रूप विरूपकरे हैं॥ चित्त अनेक विवेक टरे हैं॥ २७ वंधु विरोधु वड़ो मम मंत्री॥ वश्य करै सिगरेजन यंत्री॥ वानर वालि वली जिहिं मार्‍यो॥ रावणको सिगरो कुल

जारयो ॥२८॥ प्रेम डरैं हियमै सुनि जाको ॥ एक विवेक कहा रिपुताको ॥ वर्त्तत झूठ प्रधान हमारे॥ लोक चतुर्दश जाकहँ हारे ॥ २९ ॥ जाइ जहाँ तहँ देश नशावै ॥ नित्य नरेशनि भीख मगावैं ॥ सत्य डराव हिए अति भारो ॥ को वपुरा सुविवेक विचारो ॥३०॥ क्रोध वड़ो दलपत्ति है मेरे ॥ जो जिय मांझ वसै सवकेरे ॥ अस्त्र धरे अपमान हमारे ॥ देवनिके पति रंक कै डारै ॥ ३१ ॥

दोहा—अग्रेसर कलिकहत है, अपने चित्त विचार ॥ दुरद विनोदनको जहाँ, है केहरि अनुहार ॥ ३२ ॥

मधुछंद—राखत लोभ भँडार भरेई ॥ जौ लगि काज कहा न करेई ॥ मातु पिता सुत सोदरछोड़ै ॥ कौनपै शत्रुन अंचल ओड़ै॥३३॥शोक दरिद्र अहंकृत देखो॥आलस रोग भले भट लेखो ॥ है भ्रम भेद वशीठ सयाने ॥ प्राकृत काम न भेद वखाने ॥ ३४ ॥ काम महा इक सोदर मेरे ॥ युवती निव जीति करयो जग चेरे ॥ या जग में जन रंगन रांचे ॥ गोविंद गोपिन के सँग नाँचे॥ ३५ ॥ है व्यभिचारु वड़ो सुत जाको ॥ इंद्र भयो भगवंत भो ताको ॥ पुत्र कलंक भलो तिहि जायो ॥ सोमको शीशु सिंहासन पायो ॥ ३६ ॥ नामकृतघ्न पिता त्रिय तेरो ॥ ता कहँ जानि सदा गुरु मेरो ॥ हारि रही वसुधा सव जेती ॥ एक विवेक कथा कहि केती ॥ ३७ ॥

रूपमालछन्द—स्वामि घात विश्वास घातक मित्र दो-

घनि देषि ॥ राजदोष कृतघ्नके सुनि मंत्र दोष विशेषि ॥ आस पास सदा रहैं मम सुन्दरी सुनि धीर ॥ को विवेक अनेकधाकरि डारिहैं तववीर ॥ ३८ ॥ ब्रह्मदोष महाबली सुतते जन्यो वलि वण्ड ॥ क्षत्रहीन वसुन्धरा वाधा करी नवखण्ड ॥ संहर्‍योयदुवंश सो जिहिं बांधियो सुरनाथ ॥ रुद्र जानत हैं प्रतापहि को विवेकु अनाथ ॥ ३९ ॥

दोहा—एक एक जग सँहर्‍यो, पुनि सिगरे एकत्र ॥ मोसों प्रभुता को करै, शंकर सहित कलत्र ॥ ४० ॥

तारकछंद—जब नृप मंत्र कर्‍यो रस भीनो ॥ सुनि त्रिय मौन गही दुखदीनो ॥

राजोवाच—अबहीं नहिं मौन गहो तुम रानी ॥ सुखमें नहिं दुःखनि देहु सयानी ॥ ४१ ॥

रानी—हम जाति नारि मति मूढ़ सही ॥ हरुवाई सुवात बनाइ कही ॥ पिय मंत्रनि मंत्रिनि सों कहियै ॥ सुखमैं दुख देहनि क्यों दहियै ॥ ४२ ॥

राजोवाच—कछु मोसहुँ तोसहुँ अंतर नाहीं॥कहि मंत्र दुर्‍यो किहि बूझन जाहीं॥ हितकी हितसों दुख देन कहे जो ॥ यश सों मिलिकै सब काज नसे तो ॥ ४३ ॥

रानी ॥ सरस्वतीछंद—गंगानहीं नदी कहैं निज आदि ब्रह्म अरूप ॥ संसार तारन कों रच्यो अवतार ह्वै द्रवरूप ॥ विद्या विना तपसा विना विनु विष्णु भक्ति विधान ॥ ब्रह्माण्डभेदत ब्रह्मघातक पातकी इक न्हान ॥ ४४ ॥

राजोवाच ॥ मधुछन्द–वामन को चरणोदक गंगा॥ निर्गुण होत क्यों सागर संगा ॥ चित्त विचारि सुलोचनि भाषो ॥ है गजगामिनि पर्व्वत नाखो ॥ ४५ ॥

दोहा–जन्हु अँचै करि काढ़ियो, बाहिर जंघा फारि ॥ क्यों अपवित्र न मानियो, मुनिगणयोंपै बारि ॥ ४६ ॥

रानी ॥ मधु–वामन के पद को पिय पानी ॥ जो तुम भागीरथी भव मानी ॥ पांइ जहाँ बलिराज पखारे॥ ते जल क्यों न त्रिलोक सिधारे ॥ ४७ ॥ वामन को चरणोदकै ऐसो ॥ माधव माधव वर्त्तु कैसो ॥ ताते सबै जग झूठहि जानो ॥ साँचि सदाशिव गंगहि मानो ॥ ४८ ॥ (वृहन्नारदीय पुराणे–यथा, श्लोक॥ तस्माच्छृणुध्वंविप्रेन्द्रा गंगाया महिमोत्तमा ॥ ब्रह्म विष्णु शिवैश्चापि पारं गन्तुं न शक्यते ॥ ४९ ॥

दोहा–इक विवेक सतसंग जहँ, अरुगंगा तटवासु ॥ सपने हूँ पिय होइ नहिं, तुम पै ताको नासु ॥ ५० ॥

मधु-रुद्रसमुद्र सदा तपसा के॥ देव अदेव सबै जन जाके॥ इंद्रहु की प्रभुता हरि लेहीं ॥ चौदहलोक वरीक में देहीं॥ ५१ ॥

रूपमालाछंद–बहु सिद्धि शुद्धसमेत सेवत रोम रोम प्रबोध ॥ पल एक मध्य अनन्त केशव फोरि डारहिं क्रोध ॥ छिन्न की समाधि विकल्प कल्प अनल्प होत वितीत ॥ इहि भाँति सों बहुधा पितामह विष्णुगावत गीत ॥ ५२ ॥

दोहा–तिनके शरणविवेकु है, कैसे जीतहु कन्त ॥ जब जरि जैहो काम ज्यों, तब समुझोगे अंत ॥ ५३ ॥ सिगरे

तीरथ सवपुरी, जितने मुनिगण देव॥ सब सेवत वारांणशी अपने अपने भेव ॥ ५४ ॥

सरस्वतीछंद–वाराणशी अरु विन्दु माधव विश्वनाथ वखानु ॥ भागीरथी मणिकर्णिका यह दिव्यपंचकु जानु ॥ वैकुंठ भूतल मध्य अद्भुत भाँति नित्य प्रकाश॥ संसार नाश हि करत हैं तिनको न कवहूँ नाश ॥ ५५ ॥

राजो० ॥ दोहा–कहि देवी मणिकर्णिका, नाम भयो केहिभेव ॥ काशी मैं केहि देवता, प्रगट करी केहि देव ॥५६॥

रानी ॥ रूपमाला छंद–वाराणशी मैं विष्णु एक समैं करचो तप आनि ॥ जैसोकियो अत्युग्र सो हम पै न जात वखानि ॥ तिनके तपोवल शंभु को शिर कंपियो भुवपाल ॥ भूमिगिरि प्रियकर्ण ते मणिकर्णिका तिहिकाल ॥ ५७ ॥

चामरछन्द–माँगिये महानुभाव चित्त वृत्ति मैं लही ॥ शंभु जू प्रसन्न ह्वै सुवात विष्णु सों कही ॥ ॥ श्रीविष्णुरुवाच ॥ राज देहु जू सुमोहिं लोक लोक को अवै ॥ करो अजेय मोहिं सर्व भाँति शक्ति दे सवै ॥५८॥

दोहा–अंतरजामी होउ हों, लक्ष्मी को पति आशु॥ एवमस्तु हर हँसि कह्यो, पूरण होइ प्रकाशु ॥५९॥ खोदि लई मणिकर्णिका, भूमि चक्र की धोर॥सो थल भरचो प्रस्वेद जल, भयो हरन अघ घोर॥६०॥ तीरथमें तीरथ भयो, तादिन ते तेहि ठौर॥नाम भयो मणिकर्णिका, देइसवै सुखगौर ॥६१॥

तारक–वरणे अपने सिगरे तुमयोधा ॥ उनके हम पै

सुनिये बुधि बोधा ॥ जबहीं पिय वस्तु विचारहि देखो ॥ सिगरो दल राज को होइ अलेखो ॥ ६२ ॥ तुम भूले जे द्विज दोष भरोसे ॥ जननी न कहूँ सुतकेवल कोसे ॥ द्विज दोष जहाँ सुसमूल नशेजू ॥ द्विज दोष विना न कहूँ विनशेजू ॥ ६३ ॥ अपनो थल ज्यों प्रभु पावक दाहै ॥ अनु संगति कारक हो हठि चाहै ॥ द्विज दोष भए पिय वंशतुम्हारे ॥ वल कौन विवेक चमूहि विदारे ॥ ६४ ॥

दोहा—जोही शोक विरोध सव, कलह कलुष उर आनि ॥ स्वामि दोषदै आदि सब, दोष एकही वानि ॥ ६५ ॥

राजोवाच ॥ हरिलीला छन्द—नारिन को यह वूझत वात जाइ ॥ सो अज्ञान फल खाइ अघाइ ॥ वात सुने मरन की अतिही डेराइ ॥ सव सांचे मरे मरि स्वर्ग जाइ ॥ ६६ ॥

सवैया—लोक विलोक मैं जाग विराग मैं पाठ मैं आलस वास वसाऊं ॥ एक विवेक कहा बपुरा गुण ज्ञान गुरूनि के गर्व्व घटाऊं ॥ हौं अपने विविचार विचार अचार विचार अपार वहाऊं ॥ धीरज धूरि मिलै कहि केशव धर्म के धामनि धूरि जमाऊं ॥ ६७ ॥

दोहा—करी प्रतिज्ञा राज जव, मन क्रम वचन प्रमान ॥ मंत्र बतावति तरुनि तव, दुखसुख जानि समान ॥ ६८ ॥

रानी ॥ तारकछंद—सुनिये त्रिय को पिय के दुख ते दुख ॥ सव जानत हैं पिय के सुखते सुख ॥ तिहिते हित वात कहों सु करो अव ॥ हठ छाड़हु जू मनके मनते सव ॥ ६९ ॥

दोहा–ज्यों तुमहीं सारत सबै, त्यों वै श्रद्धहिलीन ॥ जो उनको श्रद्धा तजै, तौ केशव वलहीन ॥ ७० ॥ श्रद्धा छल वल राज तुम, धरि पाखंडहि देहु ॥ तौ उनको साधन विटप, फलन फलहि करि तेहु ॥ ७१ ॥

राजोवाच॥गीतिकाछन्द–त्रिय साधु साधु भली कही यह बात मोसन आजु॥ तुव तात मोहिं दियोहुतो तिहुँ लोक को जब राजु॥ तब ठौर ठौर करी सबै बहु भाँति दासनि भक्ति ॥ सुनि दैन मैं तिनको कही जगदीश की सब शक्ति ॥ ७२॥ शुचि दंभ को लखि लोभको निधि रोग को गणि वृद्धि ॥ गुनि गर्व को गरिमा दई कलहेंदई सब सिद्धि ॥ विभिचार को रुचि नित्यही अपलोक को दइ प्रीति ॥ महिमा दई महामोह को सब ब्रह्मदोपनि जीति॥ ७३ ॥

दोहा–सुनु सुंदरि पापंड को, श्रद्धा दैहों आजु ॥ तव विवेक को जीति कै, काशी करिहौं राजु ॥ ७४ ॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां चिदानन्दमग्नायां मिथ्यादृष्टि महामोह सम्वादवर्णनं नामषष्ट प्रभावः ॥ ६ ॥

दोहा–चार्वाक अरु शिष्य को, सातैं मै सम्वाद ॥ विनती सब कलिकाल की,उपजै सुनत विषाद ॥ १ ॥ कह्यो भैरवी वोलिकै, महामोह सुखपाइ ॥ श्रद्धागहि पाखण्ड को छलबल दीजै आइ ॥ २ ॥ महामोह आए सभा, असत संग के साथ ॥ चार्वाक बैठे जहाँ, करत शिष्य सों गाथ ॥ ३ ॥

चार्वाक उवाच ॥ दोधकछंद—देखतुहै कछु शिष्य सयाने ॥ भूलत हैं मुनि वेद पयाने ॥ लाज बई जग खेत जमै जो ॥ होम करैं परलोक फलै तो ॥ ४ ॥

शिष्यउवाच—साँचो जो है जग खैबोरु पीवो ॥ तौ यह झूठ तपोबल पैबो ॥ मूढ़ दुराश के मोदकुखाहीं ॥ तपसा मिसु देखत नर्कहिं जाहीं ॥ ५ ॥

सवैया—हास विलास विलासनिसों मिलि लोचन लोल विलोकन रूरे ॥ भाँतिनि भाँतिनि के परिरंभन निर्भय रागविरागनि पूरे ॥ नाग लता दल रंग रँगे अधरामृत पान कहासुखसूरे ॥ केशवदासकहा व्रत संयम संपति माँझ विपत्तिनकूरे ॥ ६ ॥

दोहा—तीरथ वासी यह कहत, तजत त्रियनके साथ ॥ कलुषनि मिश्रित विषय सुख, त्यागनीय है नाथ ॥ ७ ॥

चार्वाक उवाच ॥ दोहा—वै सिगरे मतिमूढ़ हैं,अमल जलज मणि डारि॥सीपिनके संग्रह करत, केशवराइ निहारि ॥ ८ ॥

दण्डक—माता जिमि पोषति पिता ज्यों प्रतिपाल करै प्रभु जिमि शासन करत हेरि हियसों ॥ भैया ज्यों करै सहाइ देतहै सखा ज्यों सुख गुरुह्वै सिखावै सिप हेतु जोरि जियसों ॥ दासी ज्यौं टहलकरै देवी ज्यौं प्रसन्नह्वै सुधारै परलोक नातो नाहीं काहू वियसों ॥ छकेहै अयान मद क्षितिके छनकक्षुद्र औरसों सनेह करैं छांड़ि ऐसी तियसों ॥ ९ ॥

दोहा–महामोह तव हँसिगहे, चार्वाकके पाँइ ॥ चार्वाक आशिष दई, शोभन सुखद सुभाइ ॥ १० ॥

चार्वाकउवाच–कलियुग करत प्रणाम प्रभु, अवलोको विषहर्ण ॥ धनते जन सब कालकरि, देखत प्रभु को चर्ण ॥११॥

कलियुग उवाच ॥ रूपमालाछंद–शूद्र ज्यों सब रहत हैं द्विज धर्म कर्म कराल ॥ नारि जारानि लीन भर्त्तनि छाँड़िके इहि काल ॥ दंभ सों नर करत पूजन न्हान दान विधान ॥ विष्णु छाँड़त शक्ति भूषण पूजनीय प्रमान॥१२॥

सवैया–ब्राह्मण बेचत वेदनिको सुमलेच्छमहीप की सेव करैं जू ॥ क्षत्रिय छाँड़त हैं परजा अपराध विना द्विज वृत्ति हरैं जू ॥ छाँड़िदयो क्रय विक्रय वैश्यनि क्षत्रि न ज्यों हथियार धरैंजू ॥ पूजत शूद्र शिला धनु चोरति चित्त में राजनिको न डरैंजू ॥ १३ ॥

दोहा–विष्णु भक्ति जग में करी, यद्यपि विरल प्रचार ॥ तदपि शान्ति श्रद्धा सखी, तजति न प्रेम प्रकार ॥ १४ ॥

मोह ॥ दोहा–श्रद्धा हम पाषण्ड को, दई कलह के तात ॥ शान्ती वपुरी मरैगी, श्रवण सुनतही बात ॥ १५ ॥

कलि ॥ रूपमाला छंद–वाजि वारन वाहने सुत सुंदरी सुखदाइ ॥ क्षेत्र ग्राम पुरीनि सुख धन देश द्वीप वसाइ ॥ भूमिलोक विलोकि पावन ब्रह्मलोकहि पाइ ॥ लोभ होतन ऐनिरनूर शान्ति होति नराइ ॥ १६ ॥

मोह ॥ सवैया—कौन गनै इनि लोकन रीति विलोकि विलोकि जहाजनि बोरे ॥ लाज विशाल लता लपटी तन धीरज सत्य तमालनि तोरे ॥ वंचकता अपमान अयान अलाभ भुजंग भयानक तृष्णा ॥ पाटु वढो कहुँ घाट न केशव क्यों तरिजाइ तरंगिनि तृष्णा ॥ १७ ॥

लोभ—भूलतहै कुल धर्म सबै तबहीं जबहीं वह आनि ग्रसैजू ॥ केशव वेद पुराणनि कौन सुनै समुझै न त्रसै न हँसैजू ॥ देवनि ते नरदेवनि ते सुत्रिया वर बार न ज्यों विलसैजू॥यंत्रन मंत्रन मूरि गनै जग योवन काम पिशाच वसैजू १८।

दोहा—ताते शान्ती की कथा, कहे सुकिन्नर लोक ॥
जोर मूढ़ कह गूढ़ है, मरिहै श्रद्धा शोक ॥ १९ ॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां चिदानंदमग्नायां चार्वाक महा मोहकलिदंभ मंत्र वर्णनं नामसप्तमप्रभावः ॥ ७ ॥

दोहा—शान्ती करुणाको कह्यो, आठे माँझ विषाद ॥ पाषण्डन्हको वर्णिबो, श्रद्धा रहित विवाद ॥ १ ॥ परंपरा सिगरी पुरी, पूरि रही दुखदात ॥ शान्ती के श्रवणानि परी कैसे हूँ यह बात ॥ २ ॥ गंगा काछनि वरतिहीं, पूजत साधु अपार ॥ पाई कपिला गाइसी, पटु पपण्ड चंडार ॥ ३ ॥

शान्ति ॥ रूपमाला—मो विना न अन्हाति जेंवति करति नाहिं न पान ॥ नेकु के विछुरे भटू घट में न राखति प्रान ॥

चेतिका करुणा रची सब छांड़ि और उपाइ॥ क्यों जियों जननी विना मरि हूँ मिलै जो आइ॥ ४॥ नैन नीरनि भरि कहै करुणा सखी यह बात॥ मोहिं जीवत क्यों मरै सुनि मंत्र अब अवदात॥ योग राग विराग के थल सूरनंदिनि तीर॥ मुनिन आश्रम ठौर ठौर विलोकियै धरिधीर ५॥

करुणा॥ दोहा—सपनेहूँपापंडके, श्रद्धा परै न हाथ॥ शान्ति विधी प्रतिकूल भे, कहा न सुनियै गाथ॥ ६॥

रूपमालाछंद—रघुनाथ की तरुणी हरी दशकंध अंध लवार॥ अरु जो दई दुरयोधनै गहि द्रौपदी करतार॥ निजज्ञासि जो कपटी न कर त्यो श्रद्धा ऊपरि जाइ॥ सुनियै न कहा विलोकियै बहु काल जीवन पाइ॥ ७॥

दोहा—ताते पुनिहूँ देखियै, नीके कै अब जाइ॥ जहाँ वसत कलिकाल अब, पापण्डानि को राइ॥ ८॥

करुणा॥ रूपमाला—यह कौन आवत है सखी मल पंक अंकित अंग॥ शिरकेश लुंचित नग्न हाथ शिपीशिखण्ड सुरंग॥ यह नर्क को कोड जीवहै जिनि याहि देखि डेराहि॥ निज जानियै यह श्रावका अति दूरितें तजि ताहि॥ ९॥

श्रावकोवाच॥ दोहा—देह गेह नव द्वार में, दीप समान लसंत॥ मुक्तिहु ते अति देत सुख, सेवहु श्री अरहंत॥१०॥

रूपमालाछंद—मिष्ठ भोजन वीटिका मृगनाभ मै घनसार॥ अंग शुभ्र सुगंध संयुत सेव श्री सुकुमार॥ कन्यका भ-

मोह ॥ सवैया—कौन गनै इनि लोकन रीति विलोकि विलोकि जहाजनि बोरे ॥ लाज विशाल लता लपटी तन धीरज सत्य तमालनि तोरे ॥ वंचकता अपमान अयान अलाभ भुजंग भयानक तृष्णा॥ पाटु बढो कहुँ घाट न केशव क्यौं तरिजाइ तरंगिनि तृष्णा ॥ १७ ॥

लोभ—भूलतहै कुल धर्म सबै तबहीं जबहीं वह आनि ग्रसैजू ॥ केशव वेद पुराणनि कौन सुनै समुझै न त्रसै न हँसै जू ॥ देवनि ते नरदेवनि ते सुत्रिया वर वार न ज्यों विलसैजू॥यंत्रन मंत्रन मूरि गनै जग योवन काम पिशाच वसैजू १८।

दोहा—ताते शान्ती की कथा, कहै सुकिन्नर लोक ॥ जोर मूढ़ कह गूढ़ है, मरिहै श्रद्धा शोक ॥ १९ ॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां चिदानंदमग्नायां चार्वाक महा मोहकलिदंभ मंत्र वर्णनं नामसप्तमप्रभावः ॥ ७ ॥

दोहा—शान्ती करुणाको कह्यौ, आठे माँझ विषाद ॥ पाषण्डिन्हको वर्णिबो, श्रद्धा रहित विवाद ॥ १ ॥ परंपरा सिगरी पुरी, पूरि रही दुखदात ॥ शान्ती के श्रवणानि परी कैसे हूँ यह बात ॥ २ ॥ गंगा काछनि वरतिहीं, पूजत साधु अपार॥ पाई कपिला गाइसी, पटु पषण्ड चंडार ॥ ३ ॥

शान्ति ॥ रूपमाला—मो विना न अन्हाति जेंवति करति नाहिं न पान ॥ नेकु के विछुरे भटू घट में न राखति प्रान॥

श्रावक ॥ दोहा–कपाली कहो विभत्सवपु, कैसे तेरे धर्म ॥ पूजत हौ किहि देवको, करि करि कैसे कर्म ॥ १८ ॥

कपाली ॥ सोरठा–केवल अंगनियोग, देखो हों जगदीश को ॥ सुनो सयाने लोग, जगते भिन्न अभिन्न है ॥ १९ ॥

चंचरी–वेद मिश्रित मांस होमत अग्नि में वहु भाँति सों ॥ शुद्ध ब्रह्म कपाल शोणित को पियो दिन रातिसों ॥ विप्रवालक जालले बलि देतहों न हिए लजों ॥ देवसिद्ध प्रसिद्ध कन्यनि सों रमों भव को भजों ॥ २० ॥

केशव ॥ दोहा–शान्ती करुणा भजि चली, कान मूँदिकै हाथ ॥ संन्यासी इक देखियो, शिष्यनि लीने साथ ॥ २१ ॥

रूपमालाछंद–कोपीन मण्डित दण्डसों नख काँख दीरघ बार ॥ मालाक्ष शोभित हस्त पुस्तक करत वस्तु विचार ॥ संसारको बहुधाँ विरोध कुचित्त शोधकजानि ॥ ठाढ़ी भई तहँ शान्ति सो करुणा सखी सुख मानि ॥ २२ ॥

दोहा–इहि विधि संयम नियमसों, सोंए प्रभुके पाइ ॥ हमहूँ दीजै सिद्धि कछु, शोभन सुखद सुभाइ ॥ २३ ॥

संन्यासी ॥ रूपमालाछंद–सीखौ सवै मिलि धातुकर्मनि द्रव्य बाढ़तु जाइ ॥ आकर्षणादि उचट मारण वशीकरण उपाइ ॥ देहों अदृष्ट तिनैन अंजन अग्नि वंधननीर ॥ शिक्षा कहों परकायमध्य प्रवेशकी धरि धीर ॥ २४ ॥

दोहा–कान मूँदि वह तजिगई, जी धरि दीह विपाद ॥ शूद्र जहाँ त्रिय वेष धरि, ताको सुनो विवाद ॥ २५ ॥

गिनी वधू मिलि जो रमै दिन राति ॥ चित्त मलिन न कीजई गुरु पूजिये इहि भाँति ॥ ११ ॥

करुणोवाच ॥ नगस्वरूपिणीछंद—तमाल तूल तुंगहै ॥ पिसंग चीर अंगहै ॥ शचूड़ मुण्ड मुण्डये ॥ सखी सुको विलोकियै ॥ १२ ॥

शान्त्युवाच ॥ दोहा—बुद्धागम यह जानियै, सजनी भिक्षुक रूप॥सुनि लीजै कछु कहत है, पुस्तक हस्त विरूप॥१३॥

भिक्षुक ॥ रूपमालाछंद—हम दिव्य दृष्टि विलोकहीं सुख भुक्ति मुक्ति समान ॥ जग मध्य है यति सिद्धि शुद्ध सुनो सुशिष्य प्रमान ॥ कवहूं न रोकहु भिक्षुकै रमणीनि सों रम मान ॥ निज चित्त कोमल ईरषा तजि दूरि ताहि सुजान ॥ कहि कौनको उपदेश है सर्वज्ञ सिद्धिहि जानु ॥ सर्वज्ञ वुद्ध कहा कहै वहुग्रंथ ग्रंथनि मानु ॥

श्रावक—अव तोहिं है सर्वज्ञता कछु वातही महँ मूढ़ ॥ हमहुँ है सर्वज्ञता मद दास तो कुल गूढ़ ॥ १४ ॥

दोहा—छाँड़िशासना वौधकी, अरहंत न की मानि ॥ सुरता छाँड़ि पिशाचिता, काहे को करि वानि ॥ १५ ॥ तन मन जीवन जाइलों, लोक विलोक विलास ॥ ज्यों वाहर के दीप पै, सदन न होत प्रकास ॥ १६ ॥

नलिनीछंद—लिये नृकपाल नृदेह कराल ॥ करे नर मुंडनि की उरमाल ॥ पिये नर श्रोन मिल्यो मदिरासो ॥ कपालि कु देखिये भीमप्रभासों ॥ १७ ॥

शूद्र ॥ तारकछंद—यह जानत हों अतिही यडकायो ॥ कहि जीवतको नर नारि कहायो ॥ वह साधन कौन मिलै जिहि राधा ॥ हम हूँ उपजी जिय साध अगाधा ॥ ३४ ॥

नारीवेप—अब तोसों कहों जिनि काहु सुनावै॥सुनि जाहि सुने उर और न आवे ॥ तीरथ दान सबै व्रत छाँड़े ॥ सो इहि साधन सो हित माँड़े ॥ वेदको भेद सु व्यासहिं पायो ॥ याहि ते नाहिं पुरणानि गायो ॥ कोनहिं भागनिसों तुम जान्यो॥ जानिकै अद्भुत मंत्र वखान्यो ॥ ३५ ॥

सरस्वतीछंद—एक अद्भुत मंत्र तामें ताहि साधतु कोइ॥ जापैं त्रिकोटि जपै सुमंत्रहि नारियो तव होइ ॥ नारि ह्वै तव राधिका कृत कुण्ड माँझ अन्हाइ ॥ राधिका सखि ह्वै मिली तव श्यामसुंदर पाइ ॥ ३६ ॥

दोहा—कान मूदि यह सुनतहीं, भागी कहि कहि त्राहि ॥ श्रद्धाके आशावँधी, देखति है उर दाहि ॥ ३७ ॥

करुणा ॥ विजय—चंद्रमुखीनि में चारु चकोर कि चन्द चकोरनि मै रुचिरो है ॥ लोचन लोल कपोलनि मध्य विलोकत यों उपमा कहँयो है ॥ सुंदरता सरसीनि में मानहु मीन मनोजनिके मनु मोहै ॥ माणिक सों मणि मंडल में कहि को यह वाल वधूनि में सोहै ॥ ३८ ॥

सती॥दोहा-नित्यविहारनि को मढ़ी,त्रिय गण देखि सिहाति॥एक पियति चरणोदकनि, एक उसारनि खाति ॥ ३९॥ पुत्री दक्षिण राजकी, आई तजि कुल तंत्र ॥ देउ कृपा करि

ऋषि ॥ हीरछन्द—कौन करम कौन धरम कौन सजत काम ॥ राधा वजूटी भपतमनितपररतिनाम ॥ ज्ञासि तिथिहि छाँड़ि करत भोजन न अचेत ॥ जासि न परसाद कननि पूजत हरिहेत ॥ २६ ॥

नारिवेष ॥ दोहा—ज्ञासि तजे परिहरे नर, पावत कहा प्रसाद ॥ श्यामवंदनिहि भागु हों, लावत छोड़ि विपाद॥२७॥

चामरछंद ॥ कौन वेद मध्य देव श्याम वंदनीकही ॥ वेदको प्रमाण पूज हों न मानिहों सही ॥ राधिका कुमारि काहि नित्य श्याम वंदही ॥ तत्र कुण्ड मृत्तिका सु श्याम वंदनी सही ॥ २८ ॥

नारिवेष ॥ दोहा—जो तू राधाकुण्डकी, माटी मानतु इ-ष्ट ॥ तौ तू मेरो शिष्यह्वै, देखे वस्तु अदृष्ट ॥ २९ ॥

शूद्र उवाच ॥ दोहा—पीछेह्वैहों शिष्य हों, पहिले सुनो विचार ॥ कौन हेतुते, तू करयो नारीको शृंगार ॥ ३० ॥

नारिवेष ॥ तोमरछंद—तप जाप मंत्र अयज्ञ ॥ मत में तजे गुणि अज्ञ ॥ वहु पाइ जे जेहि शर्मु, ॥ यह मैं धरयो भपि धर्मु ॥ ३१ ॥

तारकछंद—पतिनी प्रिय तोहि किधों पति भावै ॥ इहई ऋतु तो पति को उपजावै ॥ नर देह तजे मरि होइ सुनारी ॥ तव होइ भले पतिको अधिकारी ॥ ३२ ॥

नारिवेष ॥ दोहा—हो ह्वै होइहि देहहीं, नरते सुंदरि ना-रि ॥ राधा जू की ह्वै सखी, मिलिहों श्याम निहारि ॥३३॥

श्रद्धा ॥ सरस्वतीछन्द–असी हुती हों भैरवी लइ विष्णु भक्ति छुड़ाइ ॥ ताको मिलो तुम जाइ जी सुख पाइ दुःख नशाइ ॥ दौरि दुऔ सुनि मात गातनि की भली कुशलात ॥ सु विलोकि दुरिते पंथ में आवत उर अवदात॥४॥

तारक–निज आजु जिये कुल केशव कोऊ ॥ अति काँपति गात निरोवति दोऊ ॥ अकुलाइ मिली अति आतुर भारी ॥ चितवै चहुँघा विन जीव विहारी ॥ ५ ॥

श्रद्धा ॥ दोहा–महा भयानक भैरवी, देखी सुनी न जाति॥ देखति हों दशहूँ दिशा, मेरो चित्त चवाति ॥ ६ ॥

शान्ति–विष्णु भक्तिको संगपल, तजतु नेह तो मात ॥ पठई हुती विवेकसों, कहन गूढ़की वात ॥ ७ ॥ शान्ति श्रीहरिभक्ति पै, गई सुनतहीं वात ॥ करुणाजू श्रद्धा गई, जहँ विवेक नर तात ॥ ८ ॥

रूपमालाछंद–वाग राग रमे विराजत जह्नुनंदिनि कूल ॥ यत्र तत्र अनेक रंगनि शोभियै फल फूल ॥ बुद्धिके सँग शोभियै तहँ राज राज विवेक ॥ रेणुका मय शुद्ध आसन चित्तमें प्रभु एक ॥ ९ ॥

गीतिका–गुण गानमान विधानसो कल्यान दान सयान सो॥अनुराग याग विराग भाग सँयोग भोग प्रमाण सो ॥ सुख शील सत्य सँतोष शुद्धस्वरूप आनंद हाससो ॥ तप तेज जाप प्रताप संयम नेम प्रेम हुलास सो ॥ १० ॥

याहि प्रभु, नित्य विहारी मंत्र ॥ ४० ॥ सेवेगी तुमको स-
दन, छोंडि जु सबै विकल्प ॥ तन धन मन को प्रथमही, क-
रवाये संकल्प ॥ ४१ ॥ सिखए मंदिर माँझ लै, मोहन मंत्र
विधान॥इन दीनी गुरु दक्षिणा, सधर अधर मधुपान ॥४२॥

शांति ॥ तारक—इनको कबहूं न विलोकन कीजै ॥
अरु यों करियै तो निरै पग दीजै ॥ विपदा महँ आनि
भजो दुख कीजै ॥ बूड़ि नदी मरियै विष पीजै ॥ ४३ ॥

दोहा— इहि विधि पाखण्डीनि के, थलनि विलोकि प्र-
काश ॥ वृंदा देवी पहँ गई, बूझन केशवदास ॥ ४४ ॥
जब लागी देहै तजन,वाणी भई अकाश ॥ सुखसों श्रद्धा मि-
लन अब, ह्वै है केशवदास ॥४५॥ पूजा शालग्राम की, क-
रि षोड़श उपचार ॥ वंदन आठो अंगते, करति हुती तिहि
काल ॥ ४६ ॥

इति श्रीचिदानंदमग्नायां विज्ञानगीतायां पाषण्ड
धर्म वर्णनोनाम अष्टमप्रभावः ॥ ८ ॥

दोहा—नवे माँझ श्रद्धा मिलन, हिय विवेक वैराग ॥ राज
धर्म वर्णन सबै, उद्यम कथा सभाग ॥ १ ॥ वृंदा देवी हँसि
मिली, श्रद्धहिं कंठ लगाइ ॥ कुशल प्रश्न बूझी सबै,कहि के-
शव सुखपाइ ॥ २ ॥ मथुरा वृंदावन सबै, ढूँढ्यो देवि अ-
शेषु॥ कबहुँ न श्रद्धा देखियै, चित विचार करि देखु ॥३॥

राजोवाच ॥ दोहा–शासन श्रीहरिभक्तिको, सबको सदा प्रमान ॥ सुनि श्रद्धा इहि भाँति के, हम को कठिन विधान ॥ १९ ॥

रूपमालाछंद–तात मात विमात सोदर बंधु वर्ग अशेष॥कौन भाँतिनि हों हतों सग संगहें सुविशेष॥ पापके अपलोक के वनितानि दै वहु शोक ॥ कोप दै वहु भाँति शोकनि घालि लोक विलोक ॥ २० ॥

सतसंग–राज राज भली कही यह बात नित्य प्रमान ॥ मित्र कौन जु शत्रुको जग आपु रूप समान ॥ सर्व्वदा सब भाँति वहु करि एक आनँद शक्ति ॥ और बात न मानिए मन छोड़ि श्रीहरि भक्ति ॥ २१ ॥

राजधर्म ॥ दोहा–राजा ह्वै प्रभु जिनि कहो, तपसी कीसी बात ॥ सिंह जियत क्यों मृगनि सों,नातौ मानै तात ॥ २२ ॥ दान दया मति शूरता, सत्य प्रजा प्रतिपाल ॥ दण्डनीति ए धर्म हैं, राजनिके सब काल ॥ २३ ॥

रूपमाला छंद–दान दीयत विज्ञ को अति अज्ञ कौ वशमीत ॥ दीनको द्विजवर्ण को बहु भूख भूपित भीत॥दीन देखि दयाकरै अति अज्ञ को भुवपाल ॥ गाइको त्रिय जाति को द्विज जातिको सबकाल ॥ २४ ॥

दोहा–धरणी को धन धर्म को, सत्य शील संतान ॥ नृप अपने उद्धार को, सदा रहत मतिमान ॥ २५ ॥

दोहा—धीर धारिणी ज्ञान शम, दम सुभाव आचार॥ बल विक्रम शुभ आदि दै, सकल धर्म परिवार॥ ११॥

रूपमालाछंद—बुद्धिकी सजनी क्षमा शुचि सिद्धि कीरति प्रीति॥ वृद्धि सुंदरता सदा शुचि माधुरीयुत जीति॥ धीरता अवधारणा तपसा प्रभा अति उक्ति॥ वर्णता अवधानता सुसमाधि संततयुक्ति॥ १२॥

दोहा—राजधर्म सतसंगयुत, शोभतहै सुखदाइ॥ श्रद्धा करुणा युतगई, दई आशिषा जाइ॥ १३॥

स्वागता—राज राज उठि पांइनि लागे॥ राज धर्म सतसंग सभागे॥ राज पत्नि उठि कंठ लगाई॥ सिद्धि वृद्धि पग धोवन धाई॥ १४॥

दोहा—प्रथम प्रश्न कुशलातकहि, तब बूझी नृप नाथ॥ करुणायुत श्रद्धागई, कहन आपनी गाथ॥ १५॥

श्रद्धा—प्रसीहुती हों भैरवी, महामोहके हेतु॥ विष्णु भक्ति हों छीनिली, पठई राज निकेतु॥ १६॥ शासन श्रीहरि भक्तिजू, दई कृपा करि एहु॥ लीजेजू शिर मानिके, कीजै नहिं संदेहु॥ १७॥

विजय—कामके काम अकाम करो अब बेगि अकामनि आनि अरोजू॥ मोहके मोहको लोभके लोभको क्रोधके क्रोधको नाश करोजू॥ कीजै प्रवृत्ति निवृत्ति प्रवृत्ति के पंथ निवृत्ति के पांइ धरोजू॥ आपने बापको आपने हाथकै जीवहि जीवनमुक्त करो जू॥ १८॥

यह धर्म नवीनो ॥ एक पुरातन बात सुनावो ॥ मोहके मोह ते मोहिं छुड़ावो ॥ ३४ ॥

राजधर्म ॥ दोहा—रामचद्र जगचंद सों, कीन्हो हो संग्राम ॥ रामचंद्र के सुतनि जब, बाजि गह्यो गुणग्राम ॥ ३५ ॥

विवेक ॥ तोटकछंद ॥ अनजानतहीं उन रोप धरे ॥ पहिचानि पिता तब पांइ परे ॥ हम जानि पिता रण क्यों हनिये ॥ यह धर्म कथा कहु क्यों गुनिये ॥ ३६ ॥

राजधर्म ॥ दोधक—यद्यपि हैं अति धर्म प्रवीने ॥ युद्ध मरुत्त पिता कहँ कीने ॥ अर्ज्जुन के सुत अर्ज्जुनही को ॥ शीश हत्यो रणमैं अतिनीको ॥ ३७ ॥ राजनि केवल राज के काजै ॥ मारत केशव काहु न लाजै ॥ कै अति प्रेम पिता समुझावो ॥ मोह के मोह ते मोहिं छुड़ावो ॥३८॥

दोहा—ब्रह्म दोप युत मारने, कहा तातकहँ मात ॥ जौं न मारियै राज तौ, नर्क परहु सुनि तात ॥ ३९ ॥ सिगरे जम्बूद्वीप में, पूरि रह्यो परिवार ॥ राजा सिगरे तंत्रको, राम नाम है सार ॥ ४० ॥

उद्यम॥दोहा—बोलि लयो उपकार कहँ,गहि उद्यमको हाथ॥ राज सभा में आइ कै, बैठे तब नरनाथ ॥ ४१ ॥ याचक पूजक योग युत,पण्डित मण्डित धर्म ॥ वरणे आनि विवेक सों, महामोह के कर्म ॥ ४२ ॥

राजधर्म ॥ विजय—भूलत जीव चिदानंद ब्रह्म समुद्र के स्वादहि सूँघत नाहीं ॥ पीवे न वेद पुराण पुकारि

रूपमाला छन्द–शूरता रण शत्रु को मन इंद्रियादिक जानि ॥ सत्य काय मनो वचादिक संपदा विपदानि ॥ चोर ते वटपार ते व्यभिचार ते सबकाल ॥ ईतिते ठगलोग ते जुप्रजानि को प्रतिपाल ॥ २६ ॥

दोहा–सखा सहोदर पुत्र सम, गुरुहू को अपराधु ॥ क्षमे न राजा विप्रहूँ, वनिता विहरत साधु ॥ २७ ॥

दोधकछंद–संतत भोगनिनैरस जाके ॥ राजन सेवक पाप प्रजाके ॥ ताते महीपति दण्ड सँचारे ॥ दण्ड विना नर धर्म न धारे ॥ २८ ॥

दोहा–कै तुम तजो कहाइबो, राजा आजु विवेक ॥ महा-मोह को दण्डकै, दीजै भाँति अनेक ॥ २९ ॥

राजा–यद्यपि ऐसोई सदा आदि अंत है राजु ॥ तदपि आपने वंश को, कैसे मारों आजु ॥ ३० ॥

राजधर्म ॥ दोधक–होहठ ऐसो युधिष्ठिर कीनो, ॥ लोग रहे कहि क्यों हनदीनो ॥ अंत खिसाइकै युद्ध सँचारे ॥ घर मांझ ते नारि समेत निकारे ॥ ३१ ॥

दोहा–बंधु नाश अर्ज्जुन कियो, श्रीहरि के उपदेश ॥ तिनहीं अघ मोचन कह्यो, होइहि न्यारे देश ॥ ३२ ॥

राजधर्म ॥ स्वागता–पाप मारि प्रभु धर्म सँचारो ॥ लोक लोक यश को न पसारो ॥ ३३ ॥

विवेक ॥ बाप सों युद्ध कहो किनि कीनो ॥ आजु चल्यो

गोधावोधा युद्ध को, गहे हाथ हथियार ॥ ४८ ॥ उनके रा-
जा काम है, सब योधनिको सार ॥ ताको राज प्रयोग ये
एकै वस्तु विचार ॥ ४९ ॥

वस्तु विचार ॥ सवैया—वासरहूँ निशिनो दरवार व-
सै मल धार रहै न घरीको ॥ सूरति शूकरिकीसी सलोम
कहा वरणों थलकाम थरी को ॥ शूकरसे विषयी जन ताहि
महा सुख पावत अंक धरी को ॥ मारो कहा अब मार मर्यो
कहु ठाकुर कामनिरै नगरी को ॥ ५० ॥

राजा ॥ दोहा—को कहिये कहि कुशल मति, क्रोध जी-
तिवे जोग ॥ ताको राज प्रयोगिये अब एकै संतोष ॥ ५१ ॥

संतोष ॥ सवैया—निर्मल नीर नदीनि के पान बनी
फल मूल भखो तमपोषे ॥ सेज शिलान पलास के डास-
न डासिके केशव काज सँतोषे ॥ जो मिलि बुद्धि विला-
सिनि सों निशिवासर राम के नामहिं घोषे ॥ राज तुम्हारे
प्रताप कृशानु दशा इहि लोक समुद्रनि सोषे ॥ ५२ ॥

दोहा—परत्रिय जननी जानिये, परधन सुख विष तूल ॥
लोभ कहा सब मोह दल, जरि जैहैं यहि शूल ॥ ५३ ॥ अपने
दल वल समुझियै, रे भट आलस छोड़ि ॥ प्रभु की तुम
पाषण्ड पुर, फेरो प्रतिदिन डौंड़ि ॥ ५४ ॥

इतिश्रीचिदानंदमग्नायां विज्ञानगीतायां विवेक राज
धर्म उद्यम मंत्रवर्णनं नाम नवमप्रभावः ॥ ९ ॥

पुकारि पिवावत है वहुधाहीं ॥ झूठे विषै विष सागर तुंग तरंगिनि पीवतहीं न अघाहीं ॥ मज्जत है उन मज्जुत केशवदास विलास विनोद बृथाहीं ॥ ४३ ॥

दण्डक—जैसे चढ़े बाल सब काठ के तुरंगपर तिनकेस-कल गुण आपुही में आनेहैं ॥ जैसे अति बालिकावे खेलति पुतरि अति पुत्र पौत्रादि मिलि विषय वितानेहैं ॥ आपनो जो भूलि जात लाज साज कुल कर्म जाति कर्म कादिक नहीं सो मनमाने हैं ॥ ऐसे जड़ जीव सब जानत हो केशौ-दास आपनी सचाई जग सांचोई कै जाने हैं ॥ ४४ ॥

सवैया—अंध ज्यों अंधनि साथ निरंध कुवां परिहूं न हि-ए पछितानो ॥ बंधुके मानत बंधन हारिनि दीने विषै विष खात मिठानो ॥ केशव आपने दासनि को फिरि दास भ-यो भवयद्यपिरानो ॥ भूलि गई प्रभुता लग्यो जीवहि बं-दिपरे भले बंदि अघानो ॥ ४५ ॥

राजधर्म ॥ मदिरा— रूप रचे यहि लोकहि केशव चेत को आपु प्रवेश कर्‌यो ॥ चेतु भले गुन हेतु भये सुख दुःख सुतो सबही है कुर्‌यो ॥ तिनके कहि के चल भोगनि को सुरनर्कनिरें पद पैंड धर्‌यो ॥ इहि भाँति रच्यो जग झूठ महा सुकहा जगदीशके हाथ पर्‌यो ॥ ४६ ॥

राजा ॥ दोहा—उद्यम कीजे आजु ते, वह उद्यम अकुला-इ ॥ जीति शत्रु जन कहँ मिलो, देखो प्रभु के पाँइ ॥ ४७ ॥

उद्यम ॥ गज वाजी सम्बर घने, ठाढ़े हैं दरवार ॥

गजगामिनि ॥ जलधार वहै बहु नैननि ते न रहे केहि केशव वासर यामिनि ॥ कबहूँ कबहूँ कछु बात कहैं दमकै दुति दन्तानिकी जनु दामिनि ॥ पिय पीय रटे मिसु चातकके वरषा हरषी कि वियोगिनि कामिनि ॥ ८ ॥

सवैया—कोप कर्यो द्विजराजसों केशव कोविद चित्त चरित्रनि लोपति ॥ साधनहू अपमारग लावति दूरि करै सतमारगकी गति ॥ चोरनिको बिभिचारिनेको निशि चारनिको उपजावतिहै रति ॥ वातक चातकते समुझे वरषा हरषी कि वियोगिनि की मति ॥ ९ ॥ दूपतिहै परपंकज श्रीगति हंसनिकी न तऊ सुखदाई ॥ अंबर ओट किये मुख चंदहि छूटि छपै छन भान छपाई ॥ सोहतिहै जलजावली केशव पीन पयोधरमें दुखदाई ॥ मारग भूलती देखतहीं अभिसारिणि सी वरषा बनिआई ॥ १० ॥ भव कारण जीवन देति भली विधि भूलिहुतो न भई हित हीनी ॥ द्विजराजकी नेकहुँ कानि करी नहिं तीनिहुँ लोकनि कीरति लीनी ॥ परिताप हरे सब भूतलके रविके कुलको पदवी बहु दीनी ॥ कहि केशव चातक मोर रटें वरषा हरषीकी सती रिसकीनी ॥ ११ ॥ इति वर्षा वर्णनम् ॥

अथ शरद ॥ दोहा—वीति गई वरषा सबै, आई शरद सुजाति ॥ केशव वासर शोभसी, वीती कारी राति ॥ १२ ॥

दंडक—छूटि गयो प्रजनि चलीवो अपमारगको आपने आपने सतमारग समीतिहैं ॥ सोहति परमहंस सुर

दोहा–केशव दशम प्रभाव में, क्षेपक कवित विलास॥ वर्णन के मिसु प्रगटहीं, वरषा शरद प्रकाश ॥ १ ॥

तोटक–तापुर में यह वात॥ डोंड़ी वजी अधरात॥ आयसुदेत विवेक॥ ब्रह्म धरो चित एक॥ २॥

सोरठा–महामोह यहि वात, कीनो कोप विवेक पर॥ कूंच वड़ेहीं प्रात, करि काशी सनमुख चल्यो ॥ ३॥

चार्वाक॥ दोहा–कूंच न कीजै राज अब, आयो वरषा काल॥ शरदहि आवतहीं वरद, करो विवेक विहाल॥ ४॥

विजय–लोग लगे सिगरे अपमारग पोच भलो बुरो जानि न जाई॥ चंचल हस्तिन को सुखदा अचला विपदामिनि को दुखदाई॥ हंस कलानिधि शूरप्रभा हत खंडशिखंडनि की अधिकाई॥ केशव पावस काल किधों अविवेक महीपति की ठकुराई॥ ५॥ ज्वाल जगै कि चलै चपला नभधूम घनो की घनो घनघूरो॥ खेचरलोगनिके अँशुवा जल बूँद किधों वरनो मति शूरो॥ केकी कहै इह कीकई केशव गौ जरि जोर जवासो समूरो॥ भागहुरे विरहीजन भागहु पावस कालकी पावक पूरो॥ ६॥ घनघोर किधों भट पुञ्जनिपै तरवार कढ़ी तड़िता दुति भीनी॥ गहि शक्र शरासन केशव जोति समूहनिकी पदवी वहुलीनी॥ कमला तजि पद्मिनि बूड़ि मरी धरनी कहँ चंदवधू गहि दीनी॥ वरषा हरषीकि वजाइ निशान पुरंदर सूरज को रिस कीनी॥ ॥ ७॥ मिलि मेलेहिं गात सुअंवरनील रह्यो लगि वात सुनो

सुचन्दन चढ़ायो साधु मन वच काइकी ॥ कृशकटि केहरि कमलदल पदकर खंजननयन कुंद दन्त सुखदाइ की ॥ आछेतनु गंगा जल सहित शृंगार हार केशौदास हंसगति सुंदर सुभाइ की ॥ वीतेनिशि वरषाके आईहै जगावनको शरदकी शोभा वृन्द दासी रघुराइकी ॥ १७ ॥

इति श्रीचिदानन्दमग्नायां विज्ञानगीतायां वर्षा शरद वर्णनोनाम दशमःप्रभावः ॥ १० ॥

दोहा—महामोह नरनाथ तव, कूच करचो अकुलाइ ॥ शोभन शरदहि पाइ वहु, दुन्दुभि दीह वजाइ ॥ १ ॥

भुजंगप्रयात—चले मत्तमातंग भृङ्गावली सों ॥ चले वाजि कुद्दनृ चितावली सों ॥ चलेस्यन्दनस्थाययोधाप्रवीने ॥ चले पुंज पैदा धनुर्बाण लीने ॥ २ ॥

चामर छंद ॥ रथ राजि साजि वजाइ दुंदुभि कोहसों करि साजु ॥ विंदुमाधव को चल्यो दल भूमिको अधिराजु ॥ उठि धूरि भूरि चली अकाशहुँ शोभिजे जुअशेष ॥ जनु सोधु देन चली पुरंदर को धरा सुविशेष ॥ ३ ॥ वाराणशी अति दूरि ते अवलोकियो मन पूत ॥ ऊँचे अवासनि उच्च सोहति हैं पताक विधूत ॥ शोभाविलास विलोकि केशवराइ यों मतिहोति ॥ वैकुंठ मारग जात मुक्तनिकी नवै ज्यों जोति ॥ ४ ॥

मंदिरा ॥ गंग अन्हाइ के ईशहि पूजत फूलनिसों तन

सभ कलानिधि गाइ द्विज देवतानि पूजिवेकी प्रीतिहै॥ पावै न प्रवेश विभिचारी निशिचारी चोर धामनि धामनि रामदेवजू की गीतिहै ॥ केशौदास सबहीके हृदय कमल फूले शोभित शरद कीधों आछी राजनीति है ॥ १३ ॥ वन्दे नरदेव देव केशव परमहंस राजे द्विजराज वपु पावन प्रवलहै ॥ अवनि अकाशहूं प्रकाशमान केशौराइ दिशि दिशि देश देश इच्छतु सकलहै ॥ पितर प्रयाण करैं दूषण सकल हरैं मन वच काइ भव भूषण अमल है ॥ ठौर ठौर वरणत कवि शिरमौर और शरद प्रकाश किधों गंगा जू को जलहै ॥ १४ ॥ जहाँ तहाँ दुर्गापाठ पठत प्रवीण द्विज धाम धाम धूम धर मलिन अकाशसो ॥ राज राज सिद्धासन सँयुत चँवर छत्र बाजत निशान गजगाजत हुलास सो ॥ ठौर ठौर ज्वालामुखी दीसे दीपमालिकासो शोभित शृंगार हार कुसुम सुवाससो ॥ केशौदास आसपास लसत परमहंस देवी को सदन किधों शरद प्रकाश सो ॥ १५ ॥ केशव जगत ईश कमला समेत तहाँ जागे ज्योति जल थल विमल विलास सो॥ वंदतहैं भूतनाथ भाँति भाँति विधियुत देखियतु देतु दीप अघ ओघ नाश सो॥ दिशिदिशि सुमन सफूले हैं प्रभाव जाके वरण वरण वहु विशद हुलास सो ॥ जाहि जग लोचन विलोकि सुख पावै क्षीर सागर उजागर की शरद प्रकाशसो ॥ १६ ॥ चँवकि चिकुर चारु चन्द्रमुखी चन्द्रिका

दोहा—उद्यम युत सतसंगयुत, देखि विवेक अखेद ॥
करि प्रणाम अति दूरिहिं, बैठे भ्रम अरु भेद ॥ १२ ॥

भ्रम ॥ स्वागता—महामोह महिमंडल लीनो ॥ तुमहिं राज यह आयसु दीनो ॥ तजो आजु शिवकी रजधानी । जाइ रहो जहँ श्रीविधि वानी ॥ १३ ॥

भेद—हिय होई जासों कछु नेहु ॥ हमहिं आजु श्रद्धा गहिदेहु ॥ महाराज तुमको पहिरावे ॥ गहो पाइ उठि जो घर आवे ॥ १४ ॥

सोरठा—महाराज मन तात, महामोह की बात सुनि ॥
धीरज उर अवदात, पठए उत्तर देन तब ॥ १५ ॥

दोहा—धीरज गये जु तिहि सभा, जहाँ पापकी गाथ ॥
महामोह बैठे तहाँ, असतसंगके साथ ॥ १६ ॥

धैर्यउवाच—शासना दई विवेक राज राज है कृपाल ॥ छोड़ि देहु जीव को रिता करे महा विहाल ॥ दूरिकै सबै विचारु भाजि जाहु सिंधु पार ॥ जौ न जाहु विष्णु भक्ति अग्नि तेज होउ छार ॥ १७ ॥

दोहा—कोप कर्‌यो यह बात सुनि, गहो गहो जनि जाइ॥
वीर धीर धरि दीह दुख, गयो गयंद ढहाइ ॥ १८ ॥ शोर भयो दुहुँओर तव, उतरे गंगा पार॥ गए विन्दुमाधव निकट, श्रीविवेक तिहि वार॥ १९॥ शस्त्र छोरि करजोरि तव, विनती करी विवेक॥ मनसा वाचा कर्मना, केशव भाँति अनेक २०॥

विवेक ॥ भुजंगप्रयात—महादेव है जू महादेव धारे ॥

फूलि गनो ॥ आनँद भूलि कै भौंरनि के मिसु गावतहैं वड़ भाग मनो ॥ वाहु लतानि उठाइ कै नाचत केशव रॉच: त हीत घनो ॥ वागनि शीतल मंद सुगंध समीर लसै हरि भक्त मनो ॥ ५ ॥

दोहा—पार देखि वाराणशी, डेरा कीनो वार ॥ महामो: ह नरपाल तव, दल रोकियो अपार ॥ ६ ॥

भुजंगप्रयात ॥ प्रवोधो दया एक वाराणशीहै ॥ सखीसी सदासंग गंगालसीहै ॥ रुके जो महामोह ले भूमि अच्छा॥ महादेव मानो रची रामरच्छा ॥ ७ ॥

दोहा—महामोह पठए तहाँ, भ्रम अरु भेद वसीठ ॥ शोभित हुते विवेक जहँ, परम धर्म के ईठ ॥ ८ ॥

रूपमाला छंद—देखियो शिवकी पुरी शिवरूपही सुखदानि ॥ शेष पै न अशेष आनन जाइ वेप वखानि ॥ न्हात सन्त अनंत वेप तरंगिणीयुत तीर ॥ एक पूजत देवता इक ध्यान धारणधीर ॥ ९ ॥ एक मंडित मण्डली महँ करतवेद विचार॥एक नाम रटैं पढ़ैं श्रुति शुद्ध सारणसार ॥ एक दंड धरे कमंडलु एक खंडितचीर ॥ एक संयम नियमदादिक एक साधि समीर ॥ एकहैं अनुरक्त कर्मनि एक नित्य विरक्त ॥ विन्दुमाधव केउ माधवके कहावत भक्त ॥ १० ॥

तोटक छंद—अति भूवपुरी सम मानि तवै ॥ इन भाँतिनसों अवलोकि सवै॥नृपनायकके दरवार गए ॥ गुदरे तव भीतर वोलि लए ॥ ११ ॥

विवेकउवाच–सुनो ईश यास्तोत्र को जो सुनैगो ॥ पढ़ावै पढैगो गुनावै गुनैगो ॥ सबै संपदा सिद्धि ताको क-रोजू ॥ सदामित्र ज्यों शत्रुताको हरो जू ॥ ३० ॥

श्रीविंदुमाधव ॥ दोहा–होइ प्रबोध उदै हिये, तेरे केशव राइ॥याहि पढ़ै अति प्रीतिसों, सो वैकुंठहि जाइ॥३१॥ विदा-विन्दुमाधवदई, तबहीं बार बिचार॥गए विवेक विशेष मति विश्वनाथ दरबार ॥ ३२ ॥

चामर ॥ पापके कलाप मारि तापके प्रताप तारि ॥ शोग रोग भोगको अयोग दुःखदोषदारि ॥ जानके विमान भंजि गंजि मूढ़ गूढ़ गाथ ॥ राखिलेहु राखि लेहु राखिलेहु विश्वनाथ ॥ ३३ ॥ धर्म्म ते विधर्म ते अधर्मधर्मते विचारि॥ भेद ते विभेद ते अभेद के प्रकाशकारि ॥ कालते अकाल ते विकालते त्रिकाल नाथ॥ राखि लेहु राखि लेहु राखि लेहु विश्वनाथ॥ ३४ ॥ शर्म्म ते अशर्म्मते सुनो अशेष श-र्म्मदानि ॥ भूखते पियासते संताप तोप ते बखानि ॥ वृद्धि ते समृद्धि ते प्रसिद्ध ते प्रसिद्ध नाथ॥ राखिलेहु राखिलेहु राखिलेहु विश्वनाथ ॥ ३५ ॥ मर्णते सुजन्म ते कुजन्म ते सदा सनेह ॥ तात मात मोहते विमोहते महावि-देह ॥ लोकते अलोकते त्रिलोकते त्रिलोकनाथ ॥ राखिले-हु राखिलेहु राखिलेहु विश्वनाथ॥ ३६ ॥ मित्र दोष मंत्र दोष राज दोष ते कृपालु ॥ देवदोष विष्णुदोष ब्रह्मदोष

महादेव ह्वै कै महीदेव पारे ॥ महामोह काटे लिये नाम आधो ॥ प्रवोधो उदो देहि श्री विंदुमाधो ॥ २१॥ धरा धार धारी निराधार धारी ॥ सदा ब्रह्मचारी व्रत स्त्री विहारी ॥ भये सर्व्व विद्या भये नाम आधो ॥ प्रवोधो उदो देहि श्री विंदुमाधो ॥ २२ ॥ अरूपी चिदानंद जोतिप्रकाशी ॥ विरूपी जगद्रूप चिद्रूपवाशी ॥ कृपा के करो मुक्ति गीधो अगाधो ॥ प्रवोधो उदो देहि श्रीविंदुमाधो ॥ २३ ॥ अनंगी अनंगादि ज्योतिप्रकाशी॥अनंताभिधेयं अनंताधि वाशी॥म-हादेवहू की प्रवाधा निवाधो ॥ प्रवोधो उदो देहि श्री विंदु माधो ॥ २४ ॥अमेयं प्रवर्ज्जी अनाद्यन्तरन्ता ॥अशेषप्रहारी दशग्रीव हन्ता ॥ अलच्छीनिलच्छीनिकी सिद्धि साधो ॥ प्रवोधो उदो देहि श्रीविंदुमाधो ॥ २५ ॥ त्रिदेवः त्रिकालः त्रयीवेद कर्त्ता ॥ त्रिश्रोता कृती सूत्रयी लोकभर्त्ता ॥ कृ-पाकै कृपापात्र कीनेनिपाधो ॥ प्रवोधो उदो देहि श्री विन्दु माधो ॥ २६ ॥ तपी तिव्र तापी तपस्याधिकारी ॥ परब्रह्म जूब्रह्मदोष प्रहारी ॥ किए पार संसार व्याधो निपाधो॥प्रवो-धो उदो देहि श्री विंदुमाधो ॥ २७ ॥ अधर्मी उधारो तिहूँ लोक गामी ॥ रची नित्य वाराणशी राजधानी ॥ हरो पीर मेरी रमाधो उमाधो॥प्रवोधो उदो देहि श्रीविंदुमाधो ॥२८॥

विंदुमाधव—विवेकाग्र ह्वै विज्ञ विज्ञप्ति कीनी ॥ सुनी विंदुमाधो सबै मानि लीनी ॥ कृपाकै कह्यो मांगियै विन्दु माधो ॥ प्रवोधो उदो देहि श्रीविन्दुमाधो ॥ २९ ॥

अच्छवेस्नान प्रत्यक्ष अंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४६ ॥ गिराधौ रमाधो उमाधो अनन्ना ॥ स्मरे देवि तो नाम ब्रह्मांडरत्ना ॥ कहे राइ केशौ विवेक प्रसंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४७ ॥

श्रीगंगोवाच ॥ दोहा–सर्व भाव तु सर्वदा, पावन केशव राइ ॥ यह अष्टक नितप्रति पढ़ै, सो नित गंगान्हाइ ॥ गंगा जू हि प्रणाम करि, केशव उतरे पार ॥ जात विवेकहि कटक में, दुंदुभि वजे अपार ॥ ४८ ॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां चितानंदमग्नायां श्रीविंदु माधव विश्वनाथ गंगास्तुति वर्णनंनाम एकादशःप्रभावः ॥ ११ ॥

दोहा–युद्ध वर्णिवो द्वादशें, महामोह की हारि ॥ केशव राइ विवेक को, जय वर्णिवो विचारि ॥ १ ॥

रूपमालाछंद–हयहींस गर्जि गयंद घोष रथीनिके तेहि काल ॥ बहुभेवरुंज मृदंग तुंग वजी वड़ी करनाल ॥ बहुढोल दुंदुभि लोल राजत विरुद वंदि प्रकाश ॥ तहँ धूरि भूरि उठी दशोंदिशि पूरियो सुअकाश ॥ २ ॥

दोहा–महामोह तव कोह करि, पठए दूत प्रचंड ॥ धर्म कर्मयुत युद्ध को, पटु पाखंड अखंड ॥ ३ ॥ तव विवेक प्रति युद्धको, आगम सुनत नसेत ॥ पठई तहाँ सरस्वती, सन्मुख सशर निकेत ॥ ४ ॥

ते दयालु॥विद दोष ते अनाथ दोपतें अदोपनाथ॥ राखिलेहु राखिलेहु राखिलेहु विश्वनाथ ॥ ३७ ॥

विश्वनाथ ॥ दोहा—राखिलेउँ तोकों सदा, सबते केशवराइ ॥ याहि पढ़े प्रति वासराहि, सो सबहीं सुखपाइ ॥३८॥ पाइ प्रबोध उदो हिये, विश्वनाथ ये हर्षि ॥ गंगा जूको जाइ पुनि, करे प्रणाम महर्षि ॥ ३९ ॥

भुजंगप्रयात—शिरश्चन्द्रकी चन्द्रिका चारु हाशे ॥ महापातकी ध्वांतधामप्रणाशे ॥ फणी दुग्धभावे अनंगारि अंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४० ॥ धरा मध्य ब्रह्माण्ड को भेदि आई ॥ जगज्जीव उद्धार को वेद गाई ॥ मही निर्गुनै स्वप्रकाशे विहंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४१ ॥ तजे देह देही पयो मध्य न्हाहीं ॥ ततो भेदि कै न्याइ ब्रह्माण्ड जाहीं ॥ भवच्छेदिकै तिव्र तुंगे तरंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४२ ॥ चले निश्चले निर्मले निर्विकारे ॥ असंसार संसार मध्येकसारे ॥ अमेय प्रभावै अनन्ते अनंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४३॥ सदा सर्व दोषादि संसोष कारे ॥ महामोह मातंग अंग प्रहारे ॥ चिदानन्द भावेधि शान्ते सुरंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४४ ॥ धरा लोक पाताल स्वर्ग प्रकाशे ॥ मनो वाक कायाज कर्म प्रणाशे ॥ जगन्मातु भावे सदा शुद्ध अंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४५ ॥ सुने स्वप्नहू में विलोके स्मरेहू ॥ क्षिए होत निष्काम नामे रहेहू ॥ करे

ए सूरति आपनि एरे॥ क्रोध विरोध भए भ्रम भेद सो काम कहा बपुरा गुनिएरे ॥ ११ ॥

दोहा—पुण्य पाप सुख दुख जुरे, आलस उद्यम तत्र॥ गर्व प्रणयनय मान मन, कलह काम एकत्र ॥ १२ ॥ योग वियोग सुयोग सों, बहु वियोग अरु भोग ॥ राग विराग धिराग सो, काटिनरोग अरोग ॥ १३ ॥ अनाचार आचार अरु, सदाचार विभिचार॥ सत्य असत्यनि आदिदै, नित्यानित्य प्रहार ॥ १४ ॥ महामोह तब झुकि उठे, लखि सतसंग विवेक ॥ भरहराइ भट भगि चले, कहा अनेकरु एक ॥ ॥ १५ ॥ तुमुल शब्द दुहुँदिश भयो, भूतल हल्यो अकाश ॥ देव अदेवनि जानियो, भयो विवेक विनाश ॥ १६॥ ब्रह्मदोष तब आपने, वंशहन्यो करिकोह ॥ जाइ पिताके पेट में, भागि चल्यो महामोह ॥ १७ ॥

रूपमाला—रण जीति खेत बजाइ दुंदुभि जीउलै सुख पाइ॥ करिगंग को हरको रमापति को प्रणाम बनाइ ॥ बहु दै द्विजातिनि दान वंदिनिसों पढ़ाइ सुगीत ॥ तब राज राज विवेक मंदिर में गए सँग मीत ॥ १८ ॥

दोहा—जय को करि अविवेक अरु, दै शिर तिलक प्रभाउ॥ कही बात सतसंग प्रभु, अरिको करो उपाउ ॥ १९ ॥

रूपमालाछंद—शत्रु को अरु अग्नि को रणको बँचे ...शेषु ॥ होइ दीरघ दुःखदायक तुच्छकै जनिलेषु॥ नी-

रूपमाला छंद—शिर धर्म शास्त्र मुखेन्दु सुन्दर वेद लोचन तीनि ॥ हरिभक्ति को महिमा हृदयहनि केत वादि कवीनि ॥ सांख्य वाहुकनाद भाषित भाष्य न्याय सुनाद॥ रणशोभमान सरस्वती जनु अंविका अविषाद ॥ ५ ॥ सो गदादिक भागिगे सवहू न मागध इंग ॥ सिंधुपार गये तिएक अनेक वंग कलिंग ॥ पामरादि दिगम्बरादि कपालकादि अशेष ॥ मारए अरु मार वार गए तिनीचनि भेष॥६॥

दोहा—निंदक एकादशिनि के, मध्यदेशमेंवार ॥ अरु पाखण्ड धर्म सव, गए सिंधुके पार ॥ ७ ॥ जव आयो रण लोभ तव, आयो दीरघदान ॥ देखन लागे देवगण, वल विक्रम परिमान ॥ ८ ॥

दानउवाच ॥ सवैया—स्योवसुदेउ सवै पशु केशव रोमन सूतनि पाट जटे पट ॥ भोजन भाजन भूपण देहरे काटह कोटिन याचक शंकट ॥ पुत्रनि देहु कलत्रनि देहुरे प्राणनिदेहुरे देहु लगीरट ॥ लोकनि को भय लोपि विलोकिये दीह दरारनि दारिद के घट ॥ ९ ॥

दोहा—आए क्रोध विरोध सव, कीने क्रोध अपार ॥ सहनशील संयुक्त तहँ, आए वस्तु विचार ॥ १० ॥

वस्तुविचार ॥ सवैया—मारिये काहेको क्यों मरै केशव ऐसो उपाउ न जी जनिएरे ॥ एकते रूप अनेक भए सव ५ पुराणनिमें सुनिएरे ॥ थावर हूं चर हूं जलहूं थल देखि

ोए सूरति आपनि एरे॥ क्रोध विरोध भए भ्रम भेद सो काम कहा वपुरा गुनिएरे॥ ११॥

दोहा—पुण्य पाप सुख दुख जुरे, आलस उद्यम तत्र॥ गर्व प्रणयनय मान मन, कलह काम एकत्र॥ १२॥ योग वियोग सुयोग सों, वहु वियोग अरु भोग॥ राग विराग धिराग सो, काटिनरोग अरोग॥ १३॥ अनाचार आचार अरु, सदाचार विभिचार॥ सत्य असत्यनि आदिदै, नित्यानित्य प्रहार॥ १४॥ महामोह तव झुकि उठे, लखि सतसंग विवेक॥ भरहराइ भट भगि चले, कहा अनेकरु एक॥ ॥ १५॥ तुमुल शब्द दुहुँदिश भयो, भूतल हल्यो अकाश॥ देव अदेवनि जानियो, भयो विवेक विनाश॥ १६॥ ब्रह्मदोप तव आपने, वंशहन्यो करिकोह॥ जाइ पिताके पेट में, भागि चल्यो महामोह॥ १७॥

रूपमाला—रण जीति खेत बजाइ दुंदुभि जीउलै सुख पाइ॥ करिगंग को हरको रमापति को प्रणाम बनाइ॥ वहु दै द्विजातिनि दान वंदिनिसों पढ़ाइ सुगीत॥ तब राज राज विवेक मंदिर में गए सँग मीत॥ १८॥

दोहा—जय को करि अविवेक अरु, दे शि
कही वात सतसंग प्रभु, अरिको करो

रूपमालाछंद—शत्रु को अरु
नशेषु॥ होइ दारिद्र दु ...

रूपमाला छंद–शिर धर्म शास्त्र मुखेन्दु सुन्दर वेद लोचन तीनि ॥ हरिभक्ति को महिमा हृदयहनि केत वादि कवीनि ॥ सांख्य वाहुकनाद भाषित भाष्य न्याय सुनाद ॥ रणशोभमान सरस्वती जनु अंबिका अविषाद ॥ ५ ॥ सोगदादिक भागिगे सबहू न मागध इंग ॥ सिंधुपार गये तिएक अनेक वंग कलिंग ॥ पामरादि दिगम्बरादि कपालकादि अशेष ॥ मारए अरु मार वार गए तिनीचनि भेष॥६॥

दोहा–निंदक एकादशिनि के, मध्यदेशमेंवार ॥ अरु पाखण्ड धर्म सब, गए सिंधुके पार ॥ ७ ॥ जव आयो रण लोभ तव, आयो दीरघदान ॥ देखन लागे देवगण, वल विक्रम परिमान ॥ ८ ॥

दानउवाच ॥ सवैया–स्योवसुदेउ सवै पशु केशव रोमन सूतनि पाट जटे पट ॥ भोजन भाजन भूषण देहरे काटह कोटिन याचक शंकट ॥ पुत्रनि देहु कलत्रनि देहुरे प्राणनिदेहुरे देहु लगीरट ॥ लोकनि को भय लोपि विलोकिये दीह दशरनि दारिद के घट ॥ ९ ॥

दोहा–आए क्रोध विरोध सब, कीने क्रोध अपार ॥ सहनशील संयुक्त तहँ, आए वस्तु विचार ॥ १० ॥

वस्तुविचार ॥ सवैया–मारिये काहको क्यों मरै केशव ऐसो उपाउ न जी जनिएरे ॥ एकते रूप अनेक भए सब पुराणनिमें सुनिएरे ॥ थावर हूं चर हूं जलहूं थल देखि

ए सूरति आपनि एरे॥ क्रोध विरोध भए भ्रम भेद सो काम कहा बपुरा गुनिएरे ॥ ११ ॥

दोहा–पुण्य पाप सुख दुख जुरे, आलस उद्यम तत्र॥ गर्व प्रणयनय मान मन, कलह काम एकत्र ॥ १२ ॥ योग वियोग सुयोग सों, बहु वियोग अरु भोग ॥ राग विराग धिराग सो, काटिनरोग अरोग ॥ १३ ॥ अनाचार आचार अरु, सदाचार विभिचार॥ सत्य असत्यनि आदिदै, नित्या-नित्य प्रहार ॥ १४ ॥ महामोह तब झुकि उठे, लखि सतसंग विवेक ॥ भरहराइ भट भगि चले, कहा अनेकरु एक ॥ ॥ १५ ॥ तुमुल शब्द दुहुँदिश भयो, भूतल हल्यो अकाश ॥ देव अदेवनि जानियो, भयो विवेक विनाश ॥ १६ ॥ ब्रह्मदोप तब आपने, वंशहन्यो करिकोह ॥ जाइ पिताके पेट में, भागि चल्यो महामोह ॥ १७ ॥

रूपमाला–रण जीति खेत बजाइ दुंदुभि जीउलै सुख पाइ॥ करिगंग को हरको रमापति को प्रणाम बनाइ ॥ बहु दै द्विजातिनि दान वंदिनिसों पढ़ाइ सुगीत ॥ तब राज राज विवेक मंदिर में गए सँग मीत ॥ १८ ॥

दोहा–जय को करि अविवेक अरु, दै शिर तिलक प्रभाउ॥ कही बात सतसंग प्रभु, अरिको करो उपाउ ॥ १९ ॥

रूपमालछंद–शत्रु को अरु अग्नि को रणको बँचे अशेषु ॥ होइ दीरघ दुःखदायक तुच्छकै जनिलेषु॥ नी-

ति भाषत वेद है नृपधर्म शास्त्र पुराण ॥ हों निवेदन ताहि ते किय विज्ञ जानि सुजान ॥ २० ॥

राजोवाच ॥ दोहा–भली कही यह बात तैं, अब मोसों समुझाइ ॥ कहो जाइ हरि भक्ति सों,करै विनाश उपाइ॥२१॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां चिदानंदमग्नायां विवेक जय वर्णनोनाम द्वादशःप्रभावः ॥ १२ ॥

दोहा–मनहिं आनि समुझाई हैं, गिरा गूढ़ मति साधि ॥ माया दरशन करहिंगे,तेरह में ऋषिगाधि ॥ १ ॥

रूपमालाछन्द–भीम भाँति विलोकिये रणभूमि भूअतिअंत ॥ श्रोणकी सरिता दुरन्त अनन्तरूप सुनन्त ॥ यत्र तत्र धुजा परे पट दीह देहनि भूप ॥ टूटि टूटि परे मनो बहुवात वृक्ष अनूप ॥२॥ पुंज कुंजर शुभ्र स्यन्दन शोभियै अतिशूर ॥ ठेलि ठेलि चले गिरीशनि पेलि शोणितपूर ॥ ग्राह तुंग तरंग कच्छप चारुचमर विशाल ॥ चक्रसे रथ चक्र पैरत गृद्ध वृद्ध मराल ॥ ३ ॥

हरिलीला छन्द–हा काम हा तनय क्रोध विरोध लोभ॥ हा ब्रह्म दोष नृपदोष कृतघ्न क्षोभ ॥ मोको परी विपति को न छुड़ाइ लेइ ॥ कासोंकहों वचन कौन वचाइ देइ ॥ ४ ॥

संकल्पउवाच ॥ दोहा–महाराज समुझो हिये, कछू न कीजै शोक ॥ चिरंजीव प्रभु चाहियै, कालिह होइगो लोक॥ ॥ ५ ॥ पठइ दई हरि भक्ति तहँ, सरस्वती वड़भाग ॥ उप- ५..न मनमूढ़को, उपजावन वैराग ॥ ६ ॥

रूपमाला छन्द–पुत्र मित्र कलत्र के तजि वत्स दुःसह सोग॥कौनके भट कौन की दुहिता मृपा सब लोग॥होत कल्पसतायु देव तऊ सबै नशिजात ॥ संसारकी गति जानि के अब कौनको पछितात ॥ ७ ॥

दोहा–एक ब्रह्म साँचो सदा, झूठो यह संसार॥कौन लोभ मद कामको, को सुत मित्र विचार ॥ ८॥ तुम्हैं गए तजि वार बहु, तुमहुँ तजे बहुवार॥तिनलगि सोच कहा करो, रे वावरे गँवार ॥ ९ ॥

मनउवाच–शोक विदूपित उरसि अब, नहिं विवेक अवकाश॥ केवल प्रेम प्रकाश को, समुझतु मोह विलाश॥१०॥

सरस्वती॥नाराचछंद– हिये विना परेसु को जु प्रेम वृक्ष लाइयै ॥ मनोभिलाप लाख नीर सींचि कै वचाइयै ॥ अकालकाल अग्निदोपपाइ कै सहूँ जरै॥ त्रिलोककै अशेप शोक फूल फूलिकै फरै ॥ ११ ॥

मनउवाच॥ दोहा–यह इक वातभली भई,श्रीभगवतीकृपाल ॥दीनो दरशन आनि अब, तुम हमको इहिकाल॥१२॥

सरस्वती ॥ दोहा–होनहार जग वात कछु, ह्वैही रहै निदान ॥ब्रह्माहू मेटन लगै, तउ न मिटै परवान ॥ १३ ॥

मन ॥ दोहा–देवी कहियै कौन विधि, मेरो मारिवो होइ॥ जाइ मिलौं लोभादिकनि, इहाँ मरै को रोइ ॥ १४ ॥

देव्युवाच–यह जग जैसे धूरिकण, दीहवाच सव होइ ॥ को जानै उड़िजातकहँ, मरे न मिलई कोइ ॥ १५ ॥

मनउवाच—काहेते प्रभुता बढ़ति, दिन दिन होति प्रकाश॥ देवी कहियै करि कृपा, किहिते होत विनाश॥१६॥

देव्युवाच—आयुर्बल कुलशोभ श्री, प्रभुतादिक तरु जान॥ ब्रह्मभक्ति जल शक्तिते, बाढ़त है दिनमान॥ १७॥ नित्यग्रात तू सत्य यह, मानो मन अवदात॥ ब्रह्मदोष के अग्नि कण, सब समूल जरिजात॥ १८॥

रूपमाला छंद—ब्रह्मदोष प्रवृत्तिके कुल आनि भो अवतार॥ पत्रपुष्प समूल कारण वंश भो सब छार॥ ब्रह्म भक्ति निवृत्तिके कुल कल्प वेलि समान॥ ताप ताप प्रभावके बल बढ़तु है दिन मान॥ १९॥

दोहा—ब्रह्मदोष जिनके हिये, उपजत क्यों हूँ आनि॥ तिनके कुलके नाशमन, मनते नियत बखानि॥ २०॥ पातकको नहिं जानहीं, सपने हूँ सब साधु॥ दोषन से संसर्ग के, जिहि जाको आराधु॥ २१॥

मनउवाच—देहु कृपा करि भगवती, मोकहँ सो उपदेश॥ जिहि ममता मिटि जाइ सब, उपजत जामे क्लेश॥ २२॥

रूपमाला छंद—आपुते उपजे कहो मम गोत एक सुजान॥ एक पुत्र बखानिये अरु एक जूक प्रमान॥ पोखियै सुत क्यों तजौं सब जूक जाति अखेद॥ शोचनीय अशोचनीय न मूढ़मानत भेद॥ २३॥

दोहा—मन पुत्रादिक जो सबै, यद्यपि जगत अनित्त॥ [illegible]न और कछू न अब, आवे मेरे चित्त॥ २४॥

सरस्वती–मोहमनी माया वशी, औरन मनमें आइ ॥ ताके संभ्रम विभ्रमनि, भ्रमे न महि अकुलाइ ॥ २५ ॥ जे जगमें जन मत्त हैं, तिनके केशवअंत ॥सवही सवको सर्वदा, माया परम दुरन्त ॥ २६ ॥

मन–मायाको संक्षेप सों, कहिये कछू विलास ॥ जानि युक्त क्रम छाड़िये, उपजै चित्त उदास ॥ २७ ॥

सरस्वती ॥ दोधक–संसृति नाम कहावति माया ॥ जानहु ताकहँ मोहकी जाया ॥ संभ्रम विभ्रम संतति जाकी ॥ स्वप्न समान कथा सव ताकी ॥ २८ ॥

दोहा–ताकी परम विचित्रता, जानि परै कछु तोहिं ॥ सोइ कथा अव सव कहों, जो वूझी है मोहिं ॥ २९ ॥

दोधक–भूतल मालव देश वसेजू ॥ तामहँ ब्राह्मण गाधि वसेजू ॥ सोदर सुंदरि वंधु तजे जू ॥ वोधको कानन जाइ सजे जू ॥ ३० ॥ सुंदर स्वच्छ सरोवर देख्यो ॥ शीतल साधु तपोमय लेख्यो ॥ तामहँ पैठि तपोव्रत लीनो ॥ सोतहँ यक्ष जलै घर कीनो ॥ ३१ ॥

दोहा–ताके धीरज देखिकै, ह्वै कृपालु भगवंत ॥ देख्यो गाधि अगाधिमति, दरशन दयो अनंत ॥ ३२ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ सुंदरी छंद–वाहर आवहु विप्र तजो जल॥ आनि तपोजलको गहिजै फल ॥ माँगहु जो जियमाँझ रह्यो वसि ॥ आनि लहो भगवंत कह्यो हँसि ॥ ३३ ॥

गाधिरुवाच ॥ रूपमाला छंद—विश्वके हिय पद्म के अलि सर्वदा सर्वज्ञ॥सर्वदा सबके हितू तुमको न जानत अज्ञ॥ दीन देखि दया करी प्रभु नित्य दीनदयाल ॥ देहु जू बर एक मोकहँ विश्वके प्रतिपाल ॥ ३४ ॥

दोहा—अद्भुत माया रावरी, महामोह तम मित्र ॥ देख्यो चाहत हौं कछू, ताको जगतचरित्र ॥ ३५ ॥

सरस्वती छंद—एवमेव हरि हँसि कह्यो, पीछे भए अदृष्ट॥ तादिनते ताके भई, हरि माया अति इष्ट ॥ ३६ ॥

सुंदरी—एक द्योस जल मध्य रह्यो जब ॥ कै सिगरी विधि ध्यानकरयो तब॥आपुहिं आपनही बरहीघर ॥डीठि गिरयो गतप्राण परयोधर ॥३७॥ रोवत बंधु अशेष बढ्यौ दुख ॥ चुंबति गोद लिए जननी मुख॥लेगये लोग सबै सरितातट॥वारि दयो लगि रोवनकी रट ॥३८॥ जाइ चंडाल को पुत्रभयो मुनि॥व्याहकरयो पितु मातु बड़ो गुनि॥क्रीड़तु है वन वीथिनि मैं किल ॥ ज्यों संग काक विलोकिय कोकिल ॥ ३९ ॥ लेतरुणी तरुणे अनुरागनि ॥खेलत डोलत बाग तड़ागनि॥ फूलनिमें दोउ फूले फिरैं तन ॥ ज्यों अलिनी अलिसाथ रमै वन ॥ ४० ॥

दोहा—एकदिना त्रिय पुत्र ले, गई पिताके गेह ॥ तब ता केशव वंश को, काल वश्य भइ देह ॥ ४१ ॥

रूपमालाछंद—छाँड़िगो जबहूं न मंडल तात मात वियोग ॥ कीर मण्डल त्यों चल्यो मुनि पुण्य काल सँयोग॥

कालके वश राज भो तिहि देशको तिहिकाल ॥ लेगए गहि ताहि भूप भयो सुबुद्धि विशाल ॥ ४२ ॥ छत्र चामर शीश दे भये मंत्रि मित्र संयुक्त ॥ पाइ घोड़े मत्त दन्ती दुःखते भये मुक्त ॥ संगले बहुसुंदरी वन बाग जाइ तड़ाग ॥ नृत्य गीत कवित्व नाटक रंग राग सभाग ॥ ४३ ॥

सवैया–अक्षकुमार सो यक्षसुतानिमें ऐननिमें कर शाइलसोहै ॥ राशिभिवेशिनि सोसुमलाल मुनैअनि में कल कोकिलसोहै ॥ केशवराइ तजे अलिनी मलिनी अलिसो मलिनीनिमें सोहै ॥ काम कुमारसो कीर महीपति राजकुमारिनिके सँगसोहै ॥ ४४ ॥

दोहा–संग चले ता नृपति भव, कीर देशको जाइ ॥ आठ वरस लगि राजकिय, शत्रु अनेक नशाइ ॥ ४५ ॥ एक दिवस ता श्वपचकी, तरुणी पुत्र समेत ॥ जाति हुती घर आपने, उतरी बाग निकेत ॥ ४६ ॥

सुंदरी–भूप गयो तरुणी सँग ले सब ॥ भेंटभई तरुणी युत सो तब ॥ पुत्र त्रिया पहिचानि लगे उर ॥ रोइ उठी तरुणी तब आतुर ॥ ४७ ॥

दोहा–रानिन मंत्रिन मित्रजन, जान्यो जाति चंडारु ॥ सुंदरि सुतले संग घर, आयो नृप मतिचारु ॥ ४८ ॥ रानिन अपनी शुद्धलगि, कीनो अग्निप्रवेश ॥ पीछे मंत्री मित्र जन, दुखित भयो सब देश ॥ ४९ ॥ ताके पीछे श्वपचहूँ, कीन्हीं मनमें लाज॥जरचो अग्निमें आपुहीं, छोड़ि सबै सुखसाज५०॥

तारकछंद—यहि बोध प्रबुद्धि सुगाधि भयोजू ॥ भ्रम भार विचार न चित्त छयोजू ॥ अब जीवत हों किधों ईशमरयोहों ॥ गहि लेइको मोहिं प्रवाह परयोहों ॥ ८१ ॥

दोहा— जलते निकस्यो आश्रमहिं, गाधि गयो अकुलाइ॥ संभ्रम चित्त न छाँड़ई, बहुत रह्यो समुझाइ ॥ ८२ ॥ अतिथि एकदिन गाधिके, आयो बुद्धि अगाधि ॥ विधिसों आसन अर्घ्य दै, दूरिकरी मगआधि ॥ ८३ ॥

सुंदरीछंद—मूल नए फलफूल धरे सब ॥ भोजनकै द्विज भृत्त भए जब ॥ बूझतगाधि तिन्हैं बुधि धारन ॥ दुर्बल विप्र कहो किहि कारन ॥ ८४ ॥

विप्रउवाच ॥ रूपमालाछंद—भूमि लोकनि में भलो इक कीर देश सुदेश ॥ भोग योग समृद्धि लोगनि दुःखको नाहिं लेश ॥ मास एक बसे तहँ हम पूज्यमान सुबुद्धि ॥ गूढ़ मूढ़ चंडार भो नृप वर्ष अष्ट कुबुद्धि ॥ ८५ ॥ जाति जानि परी खिस्याइ तज्यो सबै तिहिं राजु ॥ अग्निमध्यप्रविष्टभो सुख मंत्रि मित्र समाजु ॥ सुंदरी सिगरी तजी द्विज एक बुद्धिअगाधु ॥ देखिकै तिनको भए सब दुःख दुःखितसाधु ॥ ८६ ॥ संसर्ग दोष निवारिबे कहँ क्षिप्र जाइ प्रयाग ॥ स्नान दान अनेकधा तप साधियो बड़भाग ॥ भक्षु ह्यां हम भक्षियो मन इच्छि कै सुख पाइ ॥ दुःख दुर्बल ह्वैगए यह बात वर्णि न जाइ ॥ ८७ ॥

तारक—विप्रमहामुनिकी सुनि वानी ॥ बात सबै तिन

सत्य कै मानी ॥ अद्भुत भाँति भई दुचिताई ॥ काहु पै क्यों हूं कही नहिं जाई ॥ ५८ ॥ अपनी गति देखन को उठि धायो ॥ तबहूँ नकै मंडल विप्र बुलायो ॥ जाइ चंडारके मंदिर देख्यो ॥ वृतंत सुन्यो सब सांचु कै लेख्यो ॥ ५९ ॥ हूँन ते कीरक देश गयोजू ॥ बात सुने सब तुल्य भयोजू ॥ देखि चल्यो फिरि विप्र सशंक्यो ॥ वीच चँडार के पुत्र विलोक्यो ॥ ६० ॥ देखत दौरि सुकंठ लग्यो जू ॥ विप्र बच्याइ छुड़ाइ भयो जू ॥ रोवत पीछे पुकारत आवै ॥ तात तजो जनि टेरि सुनावै ॥ ६१ ॥ खेलत हो तहँ राज अहेरो ॥ सो सुनि आरत शब्द घनेरो॥ब्राह्मण भागत जात विलोक्यो॥ दौरि कै राजकै लोगनि रोक्यो ॥ ६२ ॥ एकहि ठौर करे जन दोऊ ॥ पूछन बात लगे सबकोऊ ॥

राजोवाच ॥ ब्राह्मण तूकहि काहिते भाग्यो ॥ पीछे तुबालक काहे ते लाग्यो ॥ ६३ ॥

बालक—दीनदयालु पिता यह मेरो ॥ मो कहँ देहु कृपाकरि हेरो ॥

ब्राह्मण ॥ हौंद्विज मालव देश रहौंजू ॥ काननमें व्रत जाल बहौं जू ॥ ६४ ॥ को यह राज नहों पहिचानो ॥ काहेते बापु कहै सो न जानौ ॥ जाति चंडार सुविप्रन होई ॥ हूँनेक जानतहै सब कोई ॥ ६५ ॥ बांधि दुहूँन तहाँ पहुँचायो ॥ कैदुहुँ देशके बोलि पठायो ॥ ६६ ॥

दोहा—भामिनि ब्राह्मण के कहे, जाति चंडार चंडार॥राजा

वेगि बोलाइयो, दुहुँजनको परिवार ॥ ६७ ॥ राजा दोऊ राखियो, न्यारे न्यारे ठौर ॥ भाँति भाँति करि बूझियो, एकै कहैं न और ॥ ६८ ॥

दोधकछंद–बंधु दुहूँ जनके जब आए ॥ बोलि लिए तब दोउ दिखाए ॥ विप्र वशिष्ठते विप्र बखाने ॥ वेष चंडार चंडारहि माने ॥ ६९ ॥

दोहा–मालववासी मुनि कहे, कीर देश चंडार ॥ राजा थाके न्याउ करि, होइ नहीं निरधार ॥ ७० ॥ द्विजको गाधि न थापहीं, थापहिं जाति चँडार ॥ झूठो द्विज साँचो श्वपच राजा कर्‍यो विचार ॥ ७१ ॥ डारो याहि कराह में, तप्ततेल जब होइ ॥ जौं न जरै तौ विप्रहै, जरै चँडार सुहोइ ॥ ७२ ॥ कीरदेश्युवाच ॥ जरिहौं नाहिं कराहमैं, कीजै राज विचार ॥ याको कर्म दुरन्तहै, अति चेटकी चंडार ॥ ७३ ॥

रूपमालाछंद–कीर देश नृपाल भो इहिं भोग कीन अपार ॥ आइ बालक बागमें पहिचानियो तिहिंबार ॥ राज लोग जर्‍यो सबै इहऊ जर्‍यो मतिचार ॥ आनिधों द्विज चेटकी यह शुद्ध बुद्ध चंडार ॥ ७४ ॥

गाधिरुवाच–राज राजन हों जर्‍यों नहिं मर्‍योहों तिहिकाल ॥ हों चंडार न चेटकी सुनि भूप बुद्धि विशाल ॥ अपलोक भाजन लोक में अवहों भयों जिहिं पाप ॥ चित्तमें यहऊ न जानत देउँ कौनहि शाप ॥ ७५ ॥

दोहा–पुरखा गत को विप्रहों, जानत नहीं विकार ॥ हूँन कौर के कहतहैं, नृप चेटकी चंडार ॥ ७६ ॥

रूपमालछंद ॥ हाथ पाइँनि एक काटत नाक कान-नि एक ॥ आंखि काढ़त एक डारत प्राण लेत अनेक ॥ वृद्ध वालक ज्वान जे जन जानिये नर नारि ॥ मारु मारु रटैं पढ़ैं सव भाँति भाँतिनि गारि ॥ ७७ ॥

दोधकछंद–मूड़िशिखा उपवीत उतारौ ॥ गादह जाइ चढ़ाइ सँवारौ ॥ पाइनि नील करौ मुखकारौ ॥ पर्वत ऊपर ते धर डारौ ॥ ७८ ॥ मुंडनईश शिखा जव जानी ॥ आइ अकाश भई नभवानी ॥ भूतल भूप न भूलहु कोई ॥ब्राह्मण गाधि चंडार न होई ॥ ७९ ॥ वाणी अकाश सुने भ्रम भा-ग्यो ॥ राजहिं को ऋषि ब्राह्मण लाग्यो॥आशिप दै वन गाधि गएजू ॥ सवै भ्रम चित्तके दूरि भये जू ॥ ८० ॥

दोहा–गाधि करचो तप जाइ कै, अवनि अनंत अगाधु॥ प्रगट भए भगवंत तहँ, सुन्दर श्री सुख साधु ॥ ८१ ॥

गाधिरुवाच–कौन पुण्य प्रिय दरश दिय, श्वपच कियो किहि पाप ॥ मोसों वेगि कहो मिटै, जाते सव परिताप॥८२

श्रीभगवानुवाच–गाधि अगाधि पुनीत तुम, चित्त करो भ्रमनाश॥माया दरशन तुम कह्यो, ताके सवै विलास॥८३॥ पुत्र कलत्रनि आदि दै, झूठो सव संसार॥जाको देखो स्वप्न सो,सांचो ब्रह्मविचार ॥ ८४ ॥ जन्म मरण तेरो मृपा, श्वपच

कीर नृप वेष ॥ झूठो सिगरो नाउ है, माया कर्म अलेख ॥ ॥ ८५ ॥ ताते तुम भ्रम छाँड़िकै, होहु ब्रह्म सों लीन ॥ यह कहि अन्तर्ध्यान तब, भए भगवंत प्रवीन ॥ ८६ ॥ संभ्रम छाँड़ि अशेष तब, साधी शुद्ध समाधि ॥ जीवनमुक्त भयो फिरै, जग में ब्राह्मण गाधि ॥ ८७ ॥ जैसो गाधि चरित्र सब यह मन मया विलास ॥ ताते माया को तजो, भजिये नित्य प्रकास ॥ ८८ ॥

इति श्रीमिश्रकेशवदास विरचितायां चिदानंदमग्नायां विज्ञानगीतायां गाधिमाया विलोकनं नाम त्रयोदशःप्रभावः ॥ १३ ॥

उपजे गो पांचौ दहे, मनके अंग विराग ॥ व्यास पुत्र शुकदेव को, सुनि चरित्र जग जाग ॥ १ ॥ माया को समुझो सबै, देवी मृषा विलास ॥ एको नहिं चितलाइये, मन क्रम वचन प्रकास ॥ २ ॥

देव्युवाच ॥ दण्डक—सबको समान असमान मानियै प्रमान अति न प्रमान जग जा कहँ करत है ॥ स्वारथहूँ देइ परमारथहूँ देइ देइ स्वारथहूँ औगुणनि गुणनि गहतहै ॥ सांचो झूठे ईठ कहूं डीठितहूं डीठतु न अजरु जरनि जरयो अमर मरतहै ॥ हारि सों लगाउ होइ मानससो केशौराइ ·न· · लाये मन मानस जरतहै ॥ ३ ॥

केशव ॥ दोहा ॥ लागि गयो यह वचन मन, भूले कुल अनुराग॥ कह्यो गिराको गूढमत, उपजि परचो वैराग॥ ४॥

वैराग लक्षण ॥ कुण्डलिया–देही अविनाशी सदा, देह विनाश विचार ॥ केशवदास प्रकाश वश, घटत बढ़त नहिं वार॥ घटत बढ़त नहिं वार वार मति बूझि देखि सब ॥ वेद पुराण अनंत साधु भगवन्त सिद्धि अब ॥ वेद पुराण अनन्त कहत जो ब्रह्म सनेही ॥ यों छाड़त नाहिं सन्त देह ज्यों छाड़त देही॥ ५ ॥

दण्डक–अनहीं ठिक को ठगु जानै न कुठौर ठौर ताही पै ठगावै ठेलि जाहि को ठगतुहै ॥ याको तौ डरानि डरु डगण डगत पलु डरके डगानि डारि डोंड़ी ज्यों डगतुहै ॥ ऐसे वसवास ते उदास होहिं केशौदास कसन भगतु कहि काहेको खगतुहै ॥ झूठौ हैरे झूठो जग राम की दोहाई काहू सांचे को बनायो ताते सांचो सो लगतुहै ॥ ६ ॥

सवैया– भूरहुँ भूरि नदीनि के पूरनि नावनि में बहुतै बनि वैसे ॥ केशवराइ अकाश के मेह बड़े बवघूरणि में तृण जैसे ॥ हाटनि बाटनि जात वरातनि लोग सबै बिछुरे मिलि ऐसे ॥ लोभकहा अरु मोह कहा जग योग वियोग कुटुंबके तैसे ॥ ७ ॥

सुंदरीछंद–काहूँ करचो शव ते चल योवन ॥ छाड़न चाहतु है यह मोतन ॥ जानि सबै गुण शील सुभाइनि ॥ सज्जन को अति दुर्जन गाइनि ॥ ८ ॥

दोहा--पल शोणित पंचालिका,मल संकलित विशेष॥ योवनमें तासों रमत, भ्रमर लतानिं विशेष ॥ ९ ॥ देवी कहि वैराग यो, सांची है यह वात ॥ तदपि तुम्हें आश्रम विना, रहनो नाहीं तात॥१०॥घरनी विन घर जो रहै, छाँड़ै धर्म अधर्म ॥ वनिता तजि जो जाइ वन,वन के निःफलकर्म ॥११॥

रूपमाला—है निवृत्ति पतिव्रता नियमादि पुत्र समेत ॥ योवराज विवेक को मिलि देहु देह निकेत ॥ वेद सिद्धि सगर्भ हेतु पतिव्रता शुभ वाद ॥ जाइ है सुप्रवोध पुत्रहिं विष्णु भक्ति प्रसाद ॥ १२ ॥

मन॥ दोहा—उर प्रवृत्ति की वासना, सुनियै देवि सुभाउ ॥ अव न लेत सखि स्वप्नहूँ, मुख निवृत्ति को नाउँ ॥ १३ ॥ अहंकार की होति जव, वारिद अवलि प्रवृत्ति ॥ जामें तृष्णा मंजरी, क्यों सूखति भवचित्ति ॥ १४ ॥

सुंदरीछंद—चंचलता सव को उठि धावति ॥ आदरहीन नहीं फल पावति ॥ जो कुल जाति अशुद्ध वखानहुं ॥ लाज विहीन तौ तृष्णहिं जानहुँ ॥ १५ ॥

समानिकाछंद ॥ लीन चित्तहू करै ॥ फूल सों न्रहीं डरै ॥ शूरअंश ज्यों सजै ॥ प्रात फेरि पंकजै ॥ १६ ॥ देविहों कहा करौं ॥ चित्तमें महा डरौं ॥ जग्गमै न सुःख है ॥ यत्र तत्र दुःखहै ॥ १७ ॥

सवैया—गर्भ मिलैइरहै मलमें जग आवत कोटिक कष्ट ... ॥ को कहै पीर न वोलि परै वहु रोग निकेतन ता-

रहेजू ॥ खेलत मात पिता न डरै गुरुगेहनिमें गुरु दण्ड
हेजू ॥ दीरघ लोचनि देवि सुनो अब बाल दशा दिन दुः-
नहेजू ॥ १८ ॥

दोधकछंद-जौं मन में मति की मलिनाई ॥ होति हिये
वेत को चपलाई ॥ काहू गणै न सुवर्ग भरी यों ॥ आव-
ते है वरषा सरिता ज्यों ॥ १९ ॥

सवैया-काम प्रताप के ताप तपे तनु केशव क्रोध
वेरोध सनेजू ॥ जारेतु चारु चिताई विपत्तिमें संपति गर्व-
र काहू गनेजू ॥ लोभते देश विदेश भ्रम्यो भव संभ्रम वि-
भ्रम कौन भने जू ॥ मित्र अमित्र ते पुत्र कलत्र ते योवन
में दिन दुःख घनेजू ॥ २० ॥

दोहा-जहाँ भामिनी भोग तहँ, भामिनि विनु का भोग॥
भामिनिछूटेजग छुटे, जगछूटे सुखजोग ॥ २१ ॥ जितने थिर
चिरजीव जग, अध ऊरधके लोक ॥ अजर अमर अज अमित
जन, कवलित कालसशोक ॥ २२ ॥

सवैया-शेषमई कवरी रसना नल कुण्डल सूरज सो-
मसँचेजू ॥ मेषल ब्रह्मकपालनिकी पद नूपुर रुद्र कमाल
रँचेजू ॥ पंकजविष्णु कपालनि की वनमालन केशव काहू
वचेजू ॥ हस्तक भेद दशोंदिशि दीसत ऊरधहूं अध
मीचु नँचे जू ॥ २३ ॥

दोहा-देवीसो उपदेश दे, जनम मरण मिटि जाइ॥काल-
हि को जो काल कर, ताहि रहों मिलिजाइ ॥ २४ ॥ व्यास

पुत्र शुकदेव सम, सुखदा मति सुगँभीर ॥ व्यासपुत्रकी यह दशा, कहि माता मतिधीर ॥ २५ ॥

सरस्वती ॥ दोधक—एक समै शुक चित्त विचारे ॥ बाढ़े विराग बढ़ो ज्यों तिहारे ॥ आपुनहीं अपनी मतिजानो ॥ स-त्यस्वरूप हियेमहिं आनो ॥ २६ ॥

दोहा—तब ताके विश्वासको, बूझे शुक पितुव्यास ॥ उप-जतहै जग कौनते, कहा विलात प्रकास ॥ २७ ॥

दोधकछंद—व्यास सबै शुक आशय पायो ॥ भूपति सा-धु विदेह बतायो ॥ वै तुमको सुत उत्तरुदैहैं ॥ पूछहु जाइ महासुख पैहैं ॥ २८ ॥

तोटकछंद—तबही सुविदेह के गेह गए ॥ नृप द्वार तबै थिर होत भए ॥ तब द्वारपहीं नृप सों गुदरे ॥ शुकदेव अबै दरबार खरे ॥ २९ ॥

सुंदरीछंद—उत्तर राज कछू न दयो जब ॥ ठाढेहि वासर सात भए तब ॥ रावर में नृप बोलि लिये गुनि ॥ ठाढ़ किये परदा तटलै मुनि ॥ ३० ॥ सात बितीति भए जब वासर ॥ जाइ किये तब आँगन में थर ॥ वासरसात तहीं सुविहाने ॥ साधु विदेह महीपति जाने ॥ ३१ ॥ सुंदरि आइ सुगंधनि लीने ॥ यौवन जोर स्वरूप नवीने ॥ मज्जन कै तिन्ह न्हान कराए ॥ अंग अनेक सुगंध चढ़ाए ॥ ३२ ॥ भोज-नतौ बहु भाँति जिवाए ॥ दर्पन पान खवाय दिखाए ॥ वस्त्र नवीन सबै पहिराए ॥ सुंदर साधु स्वरूप सुहाए ॥ ३३ ॥

रूपमालाछंद–नाचि गाइ बजाइ बीननि हाव भाव ब-ताव ॥ मंदहास विलाससों परिरंभनादि प्रभाव ॥ कै थकीं सब भाँति भाँति रहस्य लीनि बनाइ ॥ शुद्धहोतु न चित्त जों बहु बल्लरी तरुपाइ ॥ ३४ ॥

दोहा–बहु तै निन्दाकै थकीं, चित्त एकही रूप ॥ सुख दुख चित्त न पाइए, पाँइपरे तवभूप ॥ ३५ ॥

विदेह ॥ तारकछंद–कहिये जु कछू मुनि जालगिआए ॥ अपने हम पूरव पुण्यनि पाए ॥ किहिते उपजै जगराज बखानो ॥ अरु क्यों विनशै किहि माँझ समानो ॥ ३६ ॥

दोहा–सोवह कैसे पाइये, बूझन आयो तोहिं ॥ भूल्यो जहँ तहँ भ्रमतहों, पार लगावहु मोहिं ॥ ३७ ॥

विदेह ॥ दोहा–पायो हुतो जुपाइबे, सुनियै श्रीशुकदेव ॥ यह सुनि सुनि मारग लगे, सुखपायो नरदेव ॥ ३८ ॥ जाइ मेरुके शिखरपर, पूरण साधि समाधि ॥ धरी धीर सब धर्म तजि, परब्रह्म आराधि ॥ ३९ ॥ बरप अनेक सहस्र तहँ एक भाँति भव भूप ॥ क्रम क्रम दीपक ज्योति ज्यों, मिलै आपने रूप ॥ ४० ॥

देव्युवाच–तेसैतुमहूँ समुझिमन, दुख सुख मानि समान॥ तजि संकल्प विकल्प सब, पौरुप बात प्रमान ॥ ४१ ॥

मन–जित लै जैहै बासना, तित तित ह्वैहैंलीन ॥ पौरुप बपुरा क्योंकरै, जीव बापुरा दीन ॥ ४२ ॥

देव्यु–दुविध वासना होति है, शुभ अरु अशुभ प्रमान॥ अशुभै शुभकरि मानियै, निराधार मन जान॥ ४३॥

एक काल ब्रह्मा सभा, वैठेहैं मतिधीर॥ मैं बूझी जग जीव की, क्यों हरि हो प्रभु पीर॥४४॥ मुक्ति पुरी दरवार के चारि चतुर प्रतिहार॥ साधुनके शुभ सङ्ग अरु, समसंतोष विचार॥ ४५॥

वसुकला–तिनमें जग एकहु जो अपनावै॥ सुखही प्रभु द्वार प्रवेशहि पावै॥ ४६॥

दोहा–जो इनको संग्रह करै मन वच छांड़नि छाँड़ि॥मिलै आपने रूपको, सकल वासना छाँड़ि॥ ४७॥ मेरे घर धन पुत्र त्रिय, यह वंधन मनमान॥ दृश्यादृश्य सुब्रह्महै, यहै मुक्ति जियजान॥ ४८॥ जाते उपज्यो ताहि मिलि, अनल ज्वाल परिमान॥ यह कहि भई सरस्वती, केवल अंतर्ध्यान॥४९॥ देवीके उपदेश यों, शुद्धभयों मननाथ॥ शुद्धभए कैसीभई, नृपविवेककी गाथ॥ ५०॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां चिदानंदमग्नायां मनशान्ति वर्णनोनामचतुर्दशःप्रभावः॥ १४॥

पंचदशें मनशुद्धता, जीव विवेक विचार॥ परमदेव पूजा सबै, कहियो चार विचार॥१॥ शुद्ध भयो मन जानि जब, देवीके उपदेश॥ महापुरुषकी दृष्टितव, परचोसुकामसुवेश॥ २॥ पाँइनि लागे परन जव, प्रभुके आपु नरेश॥ प्रभु वरज्यो हो शिष्य तुम, गुरु कीजे उपदेश॥ ३॥

विवेक ॥ वार वार जिहि होत है, जन्म मरन सो देह ॥ मनसा वाचा कर्मणा, तासों करै सनेह ॥ ४ ॥

जीव ॥ याही देह सुनो सुमति, ज्यों पावे विन सुःख ॥ शोक हिये उपदेश ज्यों मृत्यु न परसै दुःख ॥ ५ ॥

विवेक ॥ दोहा—हृदय वृक्ष सों वासना, लता न लपटति जाहि ॥ राग दोप फल ना फलै, मृत्यु न मारै ताहि ॥६॥ उरसि विवेक समुद्र को, डसै न वाड़व कोपु ॥ ताको तन को मृत्युपै, होइ न कवहूं लोपु ॥७॥ परमानंद पियूष के, कणको पावे स्वाद ॥ ताके तनुकोमृत्यु पै, दयो न जाइ विपाद ॥८॥ क्रम क्रम साधै देहइहि, केशवप्राणायाम ॥ कुंभक पूरक रेचकनि, तौ पूजै मन काम ॥ ९ ॥

जीव—कहो सृष्टि यह कौन है, होत कौन में लीन ॥ पुण्य पाप को फल कहो, देत सुकौन प्रवीन ॥ १० ॥

विवेक ॥ रूपमालाछंद—तम तेज सत्त्व अनंतु अव चाहंतु है जु अमेय ॥ सर्वशक्ति समेत अद्भुत है प्रमान अभेय ॥ नित्यवस्तु विचार पूरण सर्व भाव अदृष्ट ॥ पुंश नारि न जानियै सुनि सर्व भाव अदृष्ट ॥ ११ ॥

दोहा—ताके अद्भुत भाव ते, भए सरूप अपार ॥ विष्णु आँनि परमानु लै, उपजत लगी न वार ॥१२॥ रक्षक कीने विष्णु विधि, करता हर हरतार॥ दण्डधरन सवको रचे, धर्मराज मति चारु ॥ १३ ॥ अवलोकत रवि शशि फिरत, निशि दिन धर्माधर्म ॥ इहि विधि केशव समुझिवे, सवलोकनिके कर्म ॥ १४ ॥

प्रभापूर्ण संसारके दुःख हर्त्ता॥कहो देव पूजा करों ईशकैसे॥ सिखावो सुमोसों महादेव तैसे॥ ३५॥

श्रीशिव॥दोहा—केशव छूटे जगत ते, कीजे जाकी सेव॥ सोई देव बताइयै, महादेव जगदेव ॥ ३६॥

दंडक—ऋपि ऋषिराजवृद्ध केशव प्रसिद्ध सिद्ध लोकलोक पाल सब कोऊ न प्रबल है ॥ वरुण कुबेर यम अनिल अनल जल रवि शशि सुरपति जाको दीने बलहै ॥ कौन सों कहत देव कौनकी सिखावो सेव जार को वासना मूल मलिन धवल है ॥ शेख धरु नागधरु नागमुख ब्रह्म विष्णु इनको कलेवरु तौ कालको कवरु है॥ ३७॥

वशिष्ठ ॥ भुजंगप्रयात—सुनो ईश तावत् कहों देवको है ॥ सदासर्व संपूजिवे योग जोहै ॥ कृपाकै कहो हों कहा देव जानो ॥ महादेव जाको महादेव मानो ॥ ३८॥

श्रीशिव ॥ नगस्वरूपिणी—अजन्मु है अमनुहै ॥ अशेषजंतु सर्न है ॥ अनादि अंतहीनु है ॥ जुनित्यही नवीनुहै॥ ॥ ३९ ॥ अरूप है अमेयहै ॥ अमायहै अमेयहै॥निरीह निर्विकार है ॥ सुमध्य अध्यहारहै॥ ४०॥ अकृत्त मैं अखण्डित्वै ॥ अशेष जीव मण्डित्वै ॥ समस्त शक्ति युक्तहै ॥ सुदेव देव मुक्त है ॥ ४१ ॥

दोहा—ताकी पूजा करहु ऋषि, कृत्रिम देवगण छांड़ि ॥ मनसा वाचा कर्मना, निपट कपट को खाँड़ि ॥ ४२ ॥

वीरसिंहोवाच ॥ दोहा—देव अरूप अमेय हैं, कहै नि-रीह प्रकाश ॥ सर्व जीव मण्डित कहौ, कैसे केशवदास॥४३॥ ज्यों अकाश घट घटनिमें, पूरण लीन न होइ ॥ यों पूरण संदेहमें, रहै कहै मुनिलोइ ॥ ४४ ॥

वशिष्ठ—कहि प्रभु पूरण देवको, कैसे पूजन होइ ॥ हमैं सुनावो सुगम मग, ज्यों पूजै सब कोइ ॥ ४५ ॥

शिव ॥ दोधक—आनहु ज्योति हिये अविनाशी ॥ अच्छ निरंजन दीपप्रकाशी ॥ निश्चलवेप समाधि विहारै ॥ वासना अंग पतंगनि जारै ॥ ४६ ॥ शुद्धस्वभाव के नीर नहावै ॥ पूरण प्रेम समाधिहि लावै ॥ फल मूल चिदानँद फूलनि पूजै ॥ और न केशव पूजन दूजै ॥ ४७ ॥

दोहा—इहि पूजन जो पूजई, केशव अर्ध निमेष ॥ मनहु सदक्षिण बहु करै, राजसूय सविशेप ॥ ४८ ॥ इहई साधन शुद्धतप, इहई योग वियोग ॥ यहै अनन्यनि को मरमु, जान-तहैं मुनि लोग ॥ ४९॥ इहि विधि पूजा हम करत, अनुदिन मुनि ऋपिराज ॥ कर्त्तुम कर्त्तुम अन्यथ्या-करण भए सुर-राज ॥ ५० ॥ अखिल वासना जाति जरि, अखिल जन्मकी क्षिप्र ॥ पूजाशालग्रामकी, पूजा क्रम क्रम विप्र ॥ ५१ ॥ तीनिवर्ण पूजैं शिला, प्रतिमा शूद्र प्रमान ॥ महादेव यह कहि भये, ऋपिको अंतरध्यान ॥ ५२ ॥

हरिगीतिका—तेहि दिवसते इहि भाँति पूजन पूजिकै दिन-राति॥ जोई चहै सोई लहै कहि केशव सुबहुभाँति ॥५३॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां विवेकजीव सम्वाद वर्णनोनामपंचदशःप्रभावः ॥ १५ ॥

दोहा—नृपति शिखीध्वज षोडशें, जीतेगो संसार ॥ निज तरुणी उपदेश ते, ताको गूढ़ विचार ॥ १ ॥ रानीके उपदेशते, ज्यों जीत्यौ नरनाथ ॥ त्यों अब बुद्धि विलासिनी, बल जीतहु गणनाथ ॥ २ ॥

जीव—राजा रानीकी कथा, कहो कृपा करि आजु ॥ जाते मेरे चित्तमें,उपजै बोध समाजु ॥ ३ ॥

विवेक—शात अतीते मनु सुमति,द्वापर पूर्व प्रवेश ॥ नृपति शिखीध्वज तब भये, केशव मालव देश ॥ ४ ॥ सुराष्ट्र देशाधिपत्तिकी, चूड़ाला इहि नाम ॥ कन्या सकल कलावती रूप शील दुतिधाम ॥ ५ ॥

रूपमाला छंद—दामिनी चल चारु खंजन दाड़िमी फटि-जात ॥ चंद्रमा घटिजातुहै जिय फूल फुलि कुँभिलात ॥ कोकिलाको कालिमा तनुमार बान अदृष्ट ॥ ह्वैगए दुख जासुकै यह जानियै जग इष्ट ॥ ६ ॥

दोहा—छातिनिछेद सुरारसम, डारतहै करि छार ॥ गए दिगंत निहंश, अरि ताके दुख तेहि बार॥७॥मुनिकन्यनि सँग

सीखियो,तिहिं सब प्राणायाम॥ताते पाई सिद्धि सब,पूरण काम अकाम ॥८॥ नृपति शिखीध्वज की भई, रानी रूप समान॥ तिनिसों मिलि तिनि भोगए, भूतल भोग विधान ॥ ९ ॥

चामर–एक काल एक आरसी विपे दुहूँ जने ॥ आपने मुखारविंद देखियौ प्रभासने ॥ कन्त को कछू प्रिया प्रभाव हीन देखियो॥नारि को महा प्रभा समेत देव लेखियो॥१०॥

राजा ॥ दोहा–रानी सुनि या वाल ते, तेरे तन इक रीति ॥ काहे ते तुम श्रीमती, रहो कहो करि प्रीति ॥११॥

रानी ॥ रूपमालाछंद–सृष्टिको जो प्रकाश नाश विलास जानत मित्त ॥ भोग योग अयोग के सुख दुःख मोहिं न चित्त ॥ नित्य वस्तु विचार है न जरा जुरा न कराल ॥ हों रहों तिनि ते सुनो पति श्रीमती सब काल ॥ १२ ॥

राजोवाच ॥ दोहा ॥ सुख है सुन्दरि धर्म फल, ताहि न सादर लेहु ॥ उदासीन के भाव में, मिलै माँझ दुखदेउ॥१३॥

रानी॥राजा कछू दुराहयै, जाके मन कछु और ॥ नारिनिके एकै शरन, पति सुनियै नृप मौर ॥ १४ ॥ कुवजै कल ही काहली, कुटिल कृतघ्न कुरूप ॥ सपने हूँ न तजै तरुणि कोढ़ीहू पति भूप ॥ १५ ॥

श्रीभागवते यथा श्लोक-दुःशीलोदुर्भगो वृद्धो जडो रुग्णोऽधनोपि वा ॥ स्त्रीभिःपतिर्न हातव्यो लोके नरकभीरुभिः ॥१६॥

दोहा–पुनि तुमसे नृप नाथ शुभ, सुंदर भव गुण लीन॥ सब सुख दाता सर्वदा, एक विवेकविहीन ॥ १७ ॥

राजा–काहे ते तुम प्रीतमा, उदासीनमय जोग ॥ राजा है प्रभु करत हो, रंकनि केसो भोग ॥ १८ ॥ कालि जुकीने कर्म प्रभु, तेई कीजत आजु ॥ आजु राजु सोई करत,काल्हि करहु गे काजु ॥ १९ ॥

सवैया–ठाढ़ेहिं खैयतु बैठिहिं खैयतु खात परेहू महासुख पायो॥ खातहिं खात सबै मरिजात सुखैबोई पीवो मेरे पुनि भायो॥ आवत जातनिरे दिवि केशव कौनहिं कौन कहा नहिं खायो॥ खैबो तऊ न उबीठतु है जग श्री जगदीश बुरे ढँग लायो ॥ २० ॥

दोहा--इहिविधि बीते काल बहु,लह्यो जुनहीं अलक्ष्य ॥ भक्षत हो प्रभु करभ, ज्यों फिरि फिरि भक्ष्याभक्ष्य ॥ २१ ॥ जोहीं जानो कर्म सब,सबै जगत के कंत॥ आदिसरस मध्यम विरस, अति नीरसहै अंत ॥ २२ ॥ आदि अंत मध्यहुँ सरस, नित्य नएई भोग ॥ तिन्हहिं भोग जो भूप तुम, बूझि बूझि मुनि लोग ॥ २३ ॥ सुनि सुनि सुंदरि को वचन, भोगनि जानि अशर्म ॥ आरंभे नरनाथ तव, नित्य नएई कर्म ॥ २४ ॥

विवेक–तीरथ न्हाए विविध पुनि, ऊपर वल आरण्य ॥ अभय दान सो दान सब,दए नृपतिमणि धन्य॥२५॥ज्यों ए जम्बूद्वीपके, ऋषि ऋषीश सब विप्र ॥ जीते देश विदेश नृप, नृपनायक रति क्षिप्र ॥ २६ ॥ यज्ञ अशेष विशेष सो तजि भजि सुर सुरनाथ॥ निज मंदिर आए तबै, राजा

उत्तम गाथ ॥ २७ ॥ दीन दुखित कायर कुमति, सूम अ-
नाथ अपार ॥ गुंग पंगु बहु मूढ़ जन, अंध लोग अविचार॥
॥ २८॥ देश नगर अरु ग्राम के, कहा पुरुष कह वाम ॥
मनभायो पायो सबै, कीने सबै अकाम ॥ २९ ॥ मंत्री मित्र
जु पुत्रजन, मुनिगण प्रथम बनाइ ॥ पीछे कीनो तिलक
शिर, रानी सब सुखदाइ ॥ ३० ॥

राजा—मनसा वाचा कर्मना, रानी मन अवदात ॥
जोई मांगे सुन्दरी, सोई देहैं बात ॥ ३१ ॥

रानी—जीत्यो जम्बूद्वीप सब, शत्रु मित्र परिवार ॥ बुधि
बल विक्रम साहसे, त्यों जीतो संसार ॥ ३२ ॥ दै वर राजा
चित्त में, कीनो यहै विचार ॥ जो छाड़ों घर घरनि अब, तो
जीतौं संसार ॥ ३३ ॥

सुन्दरी छन्द—सोइ रही जब सुंदरि जानी ॥ यामिनि
में बहु जो मन मानी ॥ राज तज्यो सिगरी रजधानी ॥ जा-
इ महावन रैनि बिहानी ॥ ३४ ॥ मंदरके तट पर्णकुटी
करि ॥ तामहिं दण्ड कमण्डलु को धरि ॥ माल हिये मृग
चर्म धर्यो तन ॥ दोइक तो फल फूल के भोजन ॥३५ ॥

दोहा—स्नान करत पहिले पहर, कुसुम गहत युग याम ॥
तीजे पूजत देवफल, मूलनि चौथे याम ॥ ३६ ॥

दोधक—जागि उठी जबही निशि रानी ॥पीवितु सेज वि-
लोकि डरानी ॥ प्रीतम की पनहीं जब देखी॥ कौरिक यु-
क्ति हिये महि लेखी ॥ ३७ ॥ मोकहँ छोड़ि गए नृप कान-

न ॥ ज्यों नलिनी तजि भौंर गजानन ॥ हौं अब जाउँ जहाँ कहुँ भूपति ॥ है पत्नी कहँ पीव सदा गति ॥ ३८ ॥

दोहा—पत्नी पति विनु दीन अति, पति पत्नी विनुमन्द ॥ चन्दविना ज्यों यामिनी, ज्यों यामिनि विनुचंद ॥ ॥ ३९ ॥ पत्नी पतिविनु तनु तजै, पितु पुत्रादिक काइ ॥ केशव ज्यों जलमीन त्यों, पतिविनु पत्नी आइ ॥ ४० ॥ मनसा वाचा कर्मणा, पत्नी के पति देव ॥ अन्नदानतप सुरनि की, पतिविनु निःफल सेव ॥ ४१ ॥ राज काज जिनिको लगैं, बोले मंत्री मित्र ॥ तिनके शिर सुख पाइकै, शोचे राज चरित्र ॥ ४२ ॥

चंचरीक—जोगके विलाश नारि जाइ कै अकाश सो ॥ देखियो प्रकाश ईश ऐनचर्म वासमो ॥ मण्डियोदरीनिवासु आसुछाँडु सुंदरी ॥ ऐन नाभिलेप लाल ऐन की तुचाधरी ॥४३॥

दोहा—ईश कुमण्डल छाँड़िकै, लयो कमंडलु आनि ॥ जगदंडनि के दंड तजि, दारु दंड लै पानि ॥ ४४ ॥

विवेक—नरदेवी नरदेव पै, देव पुत्र के रूप ॥
गई प्रगट तिहि निकट तब, अवलोकी पटभूप ॥ ४५ ॥

हरिगीताछंद—अति गौर गूढ़ अनंग के अँग अंग रूप तरंग ॥ मुकुतानके उरहार लोचन श्वेत चारु सुरंग ॥ उपवीत उज्ज्वल श्वेत अम्बर बालवेष कुमार ॥ नरदेव आसन उठ अवलोकि देवकुमार ॥ ४६ ॥

दोहा—दीने आसन अर्घ नृप, कीने दीह प्रणाम ॥ बैठे दोऊ देव दुति, पूछि कुशल गुणग्राम ॥ ४७ ॥ प्रगटत पर-शुभ अपर शुभ, परशुराम से व्यक्त ॥ शोभित वेद व्यास से, सकल लोक व्यासक्त ॥ ४८ ॥

नाराच—शुकप्रकाश है हिये सुज्योतिरूप लीनहो ॥ वि-चित्रबुद्धिअत्रिहो त्रिलोक शोक हीन हो ॥ वशिष्ट हो कि निम्मि हो कि आदिब्रह्म देवसो ॥ पराशरे पराश बुद्धि विज्ञ देव देवसो ॥ ४९ ॥

चंचरी—गर्गहो निशर्गभाव सर्व अप्रमान हो ॥ अंगिरा गिरा थिरा गिरीशके प्रमान हो ॥ कश्यपू कि वश्यकै अदेव देव छंडियो ॥ जन्हु हो कि जन्हु भूवि शृज्य दुष्ट दण्डियो ॥ ५० ॥

गीतिका—यमदग्नि हो कि शमाग्नि उत्तम शुद्ध सन्तकमा-नियो ॥ सिंधु सोपि लयो सबै कि अगस्त्यऐ मन मानियो॥ मुनि मारकण्ड विहीन हो मुनि मारकण्ड बखानिये ॥ मतिश्रोत इंद्रिनि धोत गौतम केश मानकि मानिये ॥ ५१ ॥

दोहा—कैधों विश्वामित्र हो, संतत विश्वामित्र ॥ पूज्ये पू-जक ते भए, जिनिके अमित चरित्र ॥ ५२ ॥ यद्यपि चतु रानन महा, चतुरानन करि हीन ॥ सोहतवेदव्यास से, नाहिं न मायहि लीन ॥५३॥ कैहो ऋषि ऋषिराज तुम, देव अदेव कि सिद्ध॥ हमसों प्रकट सुनाइयै, अपनो नाम प्रसिद्ध॥५४॥

देवपुत्र ॥ तोमर—सुनिशुद्धमानस अंश ॥ नरदेवदेव प्र-शंश ॥ सुरलोकते मतिधीर ॥ हम आइयो तवतीर ॥५५॥

दोहा—महादेवको पुत्र हौं, मानसीक सुनुराज ॥ कौन काज आए कहो, काननमें मुनि साज ॥ ५६ ॥

राजा ॥ रूपमालाछंद—जीति देश विदेश त्यों जग जीति वैशह काज ॥ हों शिष्यधुजनाममालवदेश को अधिराज ॥ जीति हो जगु क्यों कहो गुरुके विना उपदेश ॥ पक्ष नाहिंन चक्षु भूपति ज्ञान को न प्रवेश ॥ ५७ ॥

दोहा—ज्ञान गुरू पै सीखियै, जब उपजै विज्ञानु ॥ तब अधिकारी होहुगे, भूपति जिय में जानु ॥ ५८ ॥

राजा ॥ तारकछंद—तुमहीं मुनि मित्र पितायुत मेरे॥ सिखवो उपदेश सबै हित केरे ॥ जिहिते सब ज्ञान प्रयोग नि जानो ॥ अति श्रीपरमानँदको सुख मानो ॥ ५९ ॥

देवपुत्र ॥ दोहा—राजाएक कथा सुनो, सहसा कर्मविधान ॥ जाते सहसाकर्म सब, छाँड़ौ बुद्धि निधान ॥ ६० ॥

तारक—हुतो इक भूपके वारन नीको ॥ अतिसुंदरशूर मनोहर जीको ॥ तेहि ऊपर एक महावत सोहै ॥ जनु मेघ चढ़्यो मघवा मनु मोहै ॥ ६१ ॥ अधरात भए वनकी सुधिआई ॥ गजराज गिरयो जब ग्रीव कँपाई ॥ ६२ ॥

रूपमाला—छोड़ि जीवत ताहि खंभहि तोरि गौवन माँह ॥स्यो जंजीरनिसो इग्यो गिरिके गुहा गुरु माँह ॥ मुरछाहि जागे उठिगयो गजपाल राजदुवार ॥ संग लै चतुरंग सेनहिं आइगो तिहिवार ॥ ६३ ॥

दोधकछंद—देखितिन्हैं तरुके गणतोरे ॥ मारे मनुष्य

घने घन घोरे ॥ जोर घटाइ गए नगरी लै ॥ राखियो दीरघ खात दरीलै ॥ ६४ ॥ आवै न जाइ तहाँ जन कौनो ॥ लजत लैरह्यो खातके कोनो ॥ ६५ ॥

दोहा–सुख विलास सन्मान अति, तोई गए सुजान ॥ भूपण भोजनहूँ मिटे, सबै राज सुखकाम ॥ ६६ ॥

तारक–गजपाल सुतो गजको मनुजानै ॥ खंभनहीं नृपमोह बखानै ॥ शंकर होइ न वास न जानो ॥ भूपति चित्त अदृष्ट न आनो ॥६७॥ नाहिंने मोह समूल उखारचो ॥ नाहिंने शत्रु वड़ो मनु मारचो ॥ कानन माँझ सुवास न आए॥ कैसे अदृष्ट पै जात बचाये ॥६८॥ केशव कैसहु कर्म के लीने॥ देशहिं जाहु जो योग विहीने ॥ लोक करै उपहास तुम्हारे ॥ रोके रहैं न बड़े अरु बारे ॥ ६९ ॥

दोहा–ज्यों न होइ गज की कथा, सो कीजो नृपनाथ ॥ ज्ञान विना वन घोर है, जौ लों लज्जा साथ ॥ ७० ॥ सुखही में दुख जीतिहो, घरही में वनमानि ॥ क्रम क्रम होउ उदास नृप, तब सेवो वन आनि ॥ ७१ ॥ सहसा कर्म न कीजई, सहसा ज्ञान विज्ञान ॥ जब केवल हिंसा घटी, छाड़ि दये भव ध्यान ॥ ७२ ॥ ताते राजा छाड़ि हठ, जैये अपने धाम ॥ ज्ञान सीखि वन आइये, तब पूजे मन काम ॥ ७३ ॥ एक कहों अज्ञान की, औरो कथा विचारि ॥ तब कीजो विज्ञान को, संग्रह मन तम जारि॥७४॥एक हुतो धरणी धनिक सब सुख पूरणगेह॥छाँड़ि गयो वन गहवरनि, चिंतामणि संदेह७५

दोधक–संपति सुंदरि के सुख छाड़े ॥ जाइ महागिरि के पदमांड़े ॥ देखि मनै मन मोह्यो महाई ॥ चिंतामणि मग में तिहिपाई ॥ ७६ ॥

दोहा–चिंतामणि को पाइ कै, छूवै नहीं जु हाथ ॥ अनजानत ताके मते, छोड़िगयो नरनाथ ॥ ७७ ॥ कौनहुँ एक अभाग ते, चिंतामणि ते भागि ॥ पाई आगे काच मणि, सो लीनी पौ लागि ॥ ७८ ॥

दोधक–ता मणि हेतु कछू न विचारचो ॥ वालक ते वढ़ि यों धनडारचो ॥ निर्द्धन ह्वै करि वेंचन धायो ॥ पाईफजीहति वित्त न पायो ॥ ७९ ॥

दोहा–तैसे परमानंद लगि, राज तज्यो सुखकंद ॥ वड़ी फजीहति होइ ज्यों, सुक्खुन परमानंद ॥ ८० ॥ ताते तुम गृह जाहु नृप, सीखहु गुरु सों ज्ञान ॥ पुनि तुम सर्वस त्यागकै, जीतो जगत प्रमान ॥ ८१ ॥

राजा–हों नमुरचो वा वालते, कवहुँ कौनहूं कर्म ॥ अवहों कैसे मुरकिहों, राजपुत्र इहि धर्म ॥ ८२ ॥ राजाजी की शासना दान, प्रतिज्ञा भंग ॥ तोको करै मरै नहीं, श्वान सियार प्रसंग ॥ ८३ ॥ राजतज्यो सब वंधुजन, धन धरणी वर नारि ॥ और जो सर्वस त्याग है, मोसों कहो विचारि ॥ ८४ ॥

देवपुत्र–जाको राजा संग है, ताको तजि अनुराग ॥ पर्णकुटी खग मृगनि क्षिति, कैसो सर्वस त्याग ॥ ८५ ॥ यह ... राजा तजि गयो, पर्णकुटीतर खंड ॥ जाइ शिला तल

पौढ़ियो, मनमें बोधु अखंड ॥ ८६ ॥ देवपुत्र तहँई गयो जहँ राजा मतिवन्त ॥ देखि देवपुत्रहिं भयो, उर आनंद अनंत ॥ ८७ ॥

राजा–पर्णकुटी दै आदिमें, कीनो सर्वस त्याग ॥ छाँड़ो दंडकमंडलै, मृगज तुचा अनुराग ॥ ८८ ॥ छांड़ि छयो तिनहूँ तवै, महाराज मतिधीर ॥ देवपुत्र तहँई गयो, जहँ नृप धरे शरीर ॥ ८९ ॥

राजा–दण्ड कमंडलु मृगतुचा, एऊ तजे सुभाग ॥ दुख सुख क्षुधा पिपाश छिन, कैसे सर्वस त्याग ॥ ९० ॥

विवेक–देवपुत्र तहँई गयो, जहँ नृप द्वंद्वज हीन ॥ यथा लाभ सन्तोष हो, सर्वस त्याग प्रवीन ॥ ९१ ॥

देवपुत्र–जाते इंद्रिय व्याकुला, तासों तजि अनुराग ॥ तव कहिवो नरदेव माणि, साँचो सर्वस त्याग ॥ ९२ ॥

विवेक–जब लाग्यो देहे तजन, महाराज मतिधारि ॥ देवपुत्र तव वरजियो, वोल्यो वचन विचारि ॥ ९३ ॥

देवपुत्र–देहत्याग नहिं कीजई, कीजै चित्तहि त्याग ॥ चित्तत्यागते जानिवो, सांचो देही त्याग ॥ ९४ ॥

राजा ॥ दोधक–चित्त सरूप सु मोहिं सुनावो ॥ क्यों तजिये वहई समुझावो ॥

देवपुत्र–वासना चित्त सरूप है सांचो ॥ ताको अहंपद वीरज वाचो ॥ ९५ ॥

दोहा—चित्त अहंपदवीजको, कीजै पाश विनाश ॥ नृपवर तवहीं होइगो, सर्व्वस त्याग प्रकाश ॥ ९६ ॥

विवेक—इहि विधि सर्वश त्यागिके, भयो परमस पद लीन ॥ देवपुत्र उपदेश ते, सुनि प्रभु प्रगट प्रवीन ॥ ॥ ९७ ॥ तृष्णा कृष्णा पटपदी, भय भ्रमरनि मति मंडि ॥ को जाने कित उड़ि गई, हृदय कमलको छंडि ॥ ९८ ॥ राजश्री सुनि सांपिनी, क्रोधादिक अहि लीन ॥ आवत उर गरुडध्वजै, कब ह्वैगई विलीन ॥ ९९ ॥ अमित अविद्या राक्षसी, प्रेत सहित पाखंड ॥ राम निरंजन ररत मुख, उदरिगई सतखंड ॥ १०० ॥

सुंदरी छंद—नैननि मीलनकै अघमोचन ॥ जाइ मिल्यो अपने पद सों मन ॥ संतत निश्चल ह्वैहि रह्यो तनु ॥ काढ्यउकीरि शिला तनुसों जनु ॥ १०१ ॥ सुंदरि ऐसिदशा जब देखी ॥ आपने भाग दशा मनलेखी ॥ राज जगावन को मति कीनी ॥ सिंहनि नादनिसों मति भीनी ॥ १०२॥ कैसहुँ ध्यान विधान न छूटै ॥ अच्युत को रस अद्भुत लूटै ॥ देवज शामज शब्द सुनायो ॥ याक्रमहीं क्रम भूतल आयो॥१०३॥देवतनूज तहीं ढिग देख्यो॥मित्र मनो वच काय कै लेख्यो ॥ तेरे प्रसाद महाप्रभु पायो ॥ मो जयके यश भूतल छायो ॥१०४॥ और कछू अब जो उपदेशो ॥ पूरण ज्ञान महा मन लेशो॥जानिवे हों सुसवै अब जान्यो ॥

मोहि मिटी सबकी पहिचानो ॥ १०५ ॥ आइ गए तबहीं सुरनायक ॥ संग लिये त्रिय को गणभायक ॥ सुंदरि नाचति वीन बजावति ॥ पंचमके सुर उत्तम गावति ॥ १०६॥ हाव विभाव प्रभाव करै सब ॥ मोह विधान थकी करि कै अब ॥ राजहि यों जग मोहन के रस ॥ क्योंकहि जात कहो तिन सों बस ॥ १०७ ॥

इन्द्र उ० ॥ साधु अगाधु चल्यो नृप नायक ॥ देवपुरी अब है तुम लायक ॥ भाँतिनि भाँतिनि भोग करो सब ॥ देवपुरी अभिलाप करौ अब ॥ १०८ ॥

राजा ॥ देवपुरी को देवको, को भोगी को भोग ॥ हम सों प्रगट सुनाइये, साधु असाधु जे लोग ॥१०९॥ करि प्रणाम यह बात सुनि, इंद्र गए उठि धाम ॥ रानी मनसुख पाइयो,सफल भए मन काम॥११०॥देवज को तनु छाँड़िके, चूड़ाला धरि रूप ॥ गई प्रगट जहँ शोभियै, भूतल भूपण भूप॥१११॥

राजा ॥ दोधक–रानि विलोकि कह्यो नृपसांई॥सुंदरिह्याँ किहि कारण आई ॥ पूजि सबै तुव चित्त की इच्छा ॥ और कछू अब देहि न शिच्छा ॥ ११२ ॥

रानी–जानु न देवजको वपु मेरो॥मैं प्रभु संग न छाड़िहौं तेरो ॥ मैं जुदई ढिठई तजि लाजा ॥ सोक्षमिबी विनती यह राजा ॥ ११३ ॥

राजोवाच ॥ नाराच–उधारि नर्कते सुधारि दिव्यलोक

देवी—यह अपराध अगाध सव, महामोह को जानि ॥
दोष कछू न विवेक को, काल वाल अनुमानि ॥ ८ ॥

शान्ती—पियदेवीहि उराहनो, ऐसे थल जिनि देहु ॥
तून कछू जानति सखी, हों जानति कै देहु ॥ ९ ॥

गीतिका—शील है कुलनारिको यह आपदा सहिलेइ ॥ काल काटै काल पै नहिं नेकु काटन देइ ॥ हाव भाव विभाव करि कै वश्यकै पतिलेइ ॥ जाइयै सुप्रोध पुत्रहि नित्य आनँद देइ ॥ १० ॥

दोहा—वेद सिद्धि हँसि उठि चली, शांती जननी साथ ॥
जहाँ विवेक विशेष मति, कहत जीव सों गाथ ॥ ११ ॥

शान्ती ॥ रूपमालाछंद—वेद सिद्धि करे प्रणामहिं ईश-नेकु निहारि॥मातु है यह ज्ञानदा अव चित्त माहँ विचारि॥ देवि सों जननीनिशों दिन दीह अंतर मानि ॥ मातु वंधति मोह वंधन देवि काटति जानि ॥ १२ ॥

केशव—मनहीं माँझ विवेक को, करै प्रणाम अशेष ॥
अवनत मुख वैठी अवनि,वेदसिद्धि शुभ वेष ॥ १३ ॥

जीव—माता कहिये दिवस वहु, कीने कहाँ व्यतीत ॥
वेद ग्रहनि मठ शठनि मुख, सुनि मुनि मानसमीत ॥ १४॥
तत्त्व तुम्हारो तव तहाँ, काहु शम दवो मात ॥ नहि नहिं द्राविड़ दक्षिणी, अक्षर स्वच्छवचात ॥ १५ ॥

भुजंगप्रयात—धरें एनचर्मस्सदा देह सोहैं ॥ जहाँ अग्नि

तीनो द्विजातीनि मोहैं ॥ चहूँ ओर यज्ञ क्रिया सिद्धि धारी ॥ चलेजात में वेद विद्या निहारी ॥ १६ ॥

दोहा—मोसों बूझीबात तिनि, कौने हो तुमलीन ॥ मैं उनको उत्तर दयो, सुनियै नित्य नवीन ॥ १७ ॥

सरस्वतीछंद—नारायणादिक सृष्टि है जिनते प्रसिद्ध प्रवीन ॥ निर्लेप निर्गुण ज्योति अद्भुत ताहि में मनदीन ॥

दोधक—ज्योति निरीह निरंजन मानी ॥ तामहिं क्यों ऋषि इच्छ बखानी ॥ क्यों तिहिते भव भेदहि जानो ॥ ईश अकर्त्ताहि जो जिय मानो ॥ १८ ॥

विवेक ॥ दोहा—यज्ञहु की विद्या भई, निपट कुतर्कनि लीन ॥ होम धूम ते मलिन तनु, यद्यपि हुती प्रवीन ॥१९॥

रूपमालाछंद—ज्योति अद्भुत भावते भए विष्णु पूरक मानि ॥ मायाहि त्यों अवलोकियो जग भयो मायकु जानि ॥ जो कहों वह जानिये जड़ क्यों करै जग जोइ ॥ पाइ चुम्बक तेज ज्यों जड़ लोह चेतन होइ ॥ २० ॥

दोहा—ताते यज्ञनिकी सखी, जानो जगत प्रकाश ॥ जो फल दीजै ईश को, तौ तबहीं भव नाश ॥ २१ ॥ यह सुनि तब हों उठि चली, ता यज्ञनि की सृष्टि ॥ एक देश तिथि परिगई, मीमांसा मम दृष्टि ॥ २२ ॥

रूपमालाछंद—कर्तृ कर्म विभाव को अधिकार भोजन पाइ ॥ देखि अंगन सों मिली उपदेश देति बनाइ ॥ मोहिं

पूछि उठी कहौ तुम कर्तृ कौन विचार ॥ मैं कह्यो उनसों वहै सब उत्तरनि को सार ॥ २३ ॥

दोहा—अन्ते वासिनि सुनतहीं, तन मन पायो मोद ॥ देखि परस्पर तब करयो, मेरो अति अनुमोद ॥ २४ ॥

हीर—एक जीव अंध एक जगतसाखि कहतहैं ॥ एक काम सहित एक नित्यकाम रहित हैं ॥ एक कहत परम पुरुष ‹‹ड दान लीनहै ॥ एक कहत संग रहित क्रिया कर्म हीनहै ॥ २५ ॥

दोहा—विदामाँगि तबहीं चली, हों तिनते अकुलाइ ॥ देखी विद्यातर्क की, बहुत शिष्ययुत जाइ ॥ २६ ॥

रूपमाला—एक विश्व विशेष वस्तु विकल्पना जिय जानि ॥ एकनाथ परायना अरु बाद वृद्ध बखानि ॥ एक थाप तु आपने परपच्छ दोष बितानि ॥ एक मायहि ईश सों कहैं एक चित्त प्रमानि ॥ २७ ॥

दोहा—तिनिमो बूझी देवि कहि, कौनहिं हौ तुम लीन ॥ यह सुनि मैं उत्तरदयो, उनको वहै प्रवीन ॥ २८ ॥ उन मोसों उपहाससों, बात विचारि कहीसु ॥ विश्वहोत परमानते निर्मितकारण ईशु ॥ २९ ॥ क्यों अविनाश अरूप सो, करिकै रूप प्रकार ॥ अविनाशी सो करत अब, युक्तायुक्त विचार ॥ ३० ॥

विवेक—एक तर्क विद्या सबै, यहौ न जानत मूढ़ ॥ मू-

ढ़ौ तौलौं शश्व सो, जौलौं सत्य न गूढ़ ॥ ३१ ॥ भ्रमही ते जो शुक्ति में, होति रजतकी युक्ति ॥ केशव संभ्रम नाश ते प्रगट शुक्ति की शुक्ति ॥ ३२ ॥ रजत जानि ज्यों शुक्ति में, भ्रमते मनु अनुरक्त ॥ भ्रम नाशे ते रजत हूँ, छीवत नहीं विरक्त ॥ ३३ ॥ अविकारी जगदीश है, भ्रमही ते सविकार ॥ केशव कारी रजनि में, सूझत सर्प विकार ॥ ३४ ॥

रूपमालाछंद–निकलंक है सुनिरीह निर्गुण शान्त ज्योति प्रकाश ॥ मानिहै मन मध्य ताकहँ क्यों विकार विलाश ॥ होति विष्णुपदी न म्लान कलिकल्मषादिक पाइ॥ राह छाह छुवै न श्यामल सूर क्यों कहिजाइ ॥ ३५ ॥

देव्यु ॥ दोहा–गही गहो तत्र सवनि मिलि, मोसों कह्यो रिसाइ ॥ गई दण्डकारण्य हों, भाँतिनिते अकुलाइ ॥ ॥ ३६ ॥ लई राम रक्षा तबै, हों बचाइ मुनिसाखि ॥ कंठ लगाइ लई लपकि, गीता के गृह राखि ॥ ३७ ॥

गीतो ॥ अप्रमाण मन तुम करे, माता जे जग जन्तु ॥ नरक पराहिं गे जन्म बहु, जिनको नाहीं अन्तु ॥ ३८॥ इहि विधि हों अपनी कथा, कहों कहाँ लगि ईश ॥ तुम अंतर्यामी सदा, जानत हौ जगदीश ॥ ३९ ॥ सुनि सुनि देवी के वचन, उर आयो कछु ज्ञान ॥ प्रश्न करी तव ज्ञान की जिहिं उपजै विज्ञान ॥ ४० ॥

जीवउवाच–ज्ञान ज्ञान की भूमिका, हमहिं सुनाउ सुजान ॥ सुनत नशै अज्ञान सब, जाते बाढ़ै ज्ञान ॥ ४१ ॥

देवउ ॥ जीव सुजाग्रत एक अरु, दूजो जाग्रत जानु ॥ महासुजाग्रत तीसरी, जाग्रत स्वप्न वखानु ॥ ४२ ॥ स्वप्न पाँचईं है समुझि, स्वप्नो जाग्रत षष्ट ॥ प्रभा सुषुप्ता सातईं सुनो सदा मतिनिष्ट ॥ ४३ ॥ सात भाँतिको मोह यह मिले अनेक प्रकार ॥ बाँधि महाप्रभु आनिये, सोहतुभाँति अपार ॥ ४४ ॥ सहित वासना गर्भ में, प्रथम मोह अज्ञान॥ वीजे जागत युक्त यह, ताको नित्य वखान ॥ ४५ ॥ गर्भ थंभ वरु आपनो, कहि जानत मन मोह ॥ महा जाग्रत ज्ञान है, पूर्व वासना छोह ॥ ४६ ॥ सोहों जाको यह सबै हों प्रभु ए सब दास ॥ महाजाग्रत मोह यह, वर्णतकेशवदास ॥४७॥ तन्मय ह्वै कै करत है, मन अभिलाष विलाश ॥ जानो चौथो नाम यह, जाग्रत स्वप्न प्रकाश ॥ ४८ ॥ समुझाये समुझै हिये, भूलि जाइ पुनि चित्त ॥ स्वप्न जाग्रत मोह की, छठी भूमिका मित्त ॥४९॥ आया पर नहिं जानई, कहै और की और ॥ यहै सुषुप्ता सातईं, मोह कहत शिरमौर ॥५०॥ ज्ञान ज्ञानकी भूमिका, मैं वरणी सविशेष ॥ कहों ज्ञानकी भूमिका, सात सुनो शुभ वेष ॥५१॥ प्रथम शुभे- . जानवी, पुनि सुविचार न आन ॥ तीजी है तन- , केशवराइ प्रमान ॥ ५२ ॥ चौथी ; :

अशंशक्ति को जानि ॥ छठी अर्थ आभावना, सप्त तुर्यको मानि ॥ ५३ ॥ श्रवण मूढ़ जो हौं रहों, बूझो शास्त्र सुसाधु॥ याही सों सब कहत हैं, शुभ इच्छातम बाधु ॥५४॥ इच्छायुत वैराग को, करै जु चित्त विचार ॥ सदाचारको वेदमत, यह विचारनाचार ॥ ५५ ॥ अति विचार ते होति है, इंद्रिय कर्म विरक्त ॥ सूक्षम रूप हिये धरे, तन मानसा प्रसक्त ॥५६॥ सूक्षम रूप प्रकाशते, महा शुद्ध मन होत ॥ शुद्ध सत्व हिय आवई, सत्वापत्ति उदोत ॥ ५७ ॥ केशव सत्वापत्ति ते, छूटि जात सब संग ॥ झूठो जानै जगतको, आसंशक्ति भुअंग ॥ ५८ ॥ रमै आतमा राम मन, दुख सुख भूलहि चित्त॥ परइच्छा इच्छा करै, छठी भूमिका मित्त ॥ ५९ ॥ तुर्यावस्था सातई, जाते जीवनमुक्त ॥ ताते ऊपर होति है, अति विदेहता युक्त ॥ ६० ॥ सुनि विदेह की युक्ति जग, राज्य कर्‌यो प्रहलाद ॥ तैसे तुमहूं शुद्ध मन, राज्य करो अविपाद ॥ ६१ ॥

राजावीरसिंहोवाच—एक भूमिका दूसरी, तीजी आवै कोइ ॥ कालवश्य भयो बीचहीं, ताकी का गति होइ ॥ ६२ ॥

केशव ॥ रूपमाला—लोक लोक रमै विमान चढ़्यो बढ़्यो बहुरंग ॥ मेरु मंदर भूमिमें सुर सुंदरी बहु संग ॥ कर्म उत्पन्न है शुभ पंडितनिके गेह ॥ धर्म शास्त्र पढ़ै रटै बहु ज्ञानही सह नेह ॥ ६३ ॥

दोहा—केशव पूरण ज्ञान ते, परिपूरण विज्ञान ॥ चिदानंदके रूपसों, जाइ लगो मतिमान ॥ ६४ ॥

इति श्रीचिदानंदमग्नायां विज्ञानगीतायां अज्ञान ज्ञान चतुर्दश भूमिका वर्णनं नाम सप्तदशःप्रभावः॥१७॥

दोहा—जीवउवाच—क्यों विदेह की रीति सों, राज्य करचो प्रहलाद ॥ देवी हमैं सुनाउ ज्यों, ज्ञान बढ़ै अविपाद ॥ १ ॥

देव्युवाच—हिरण्यकश्यपु हति प्रभु, जब भए अंतर्ध्यान ॥ उपज्यो उर प्रहलाद को, शोक विलास प्रमान ॥ २ ॥

प्रह्लाद उवाच—नमो नारायणाय यह, मंत्र बसो मम चित्त ॥ केशवदास अकाश ज्यों, सदा बसत सब चित्त ॥ ३ ॥ केशव अबहों विष्णु ह्वै, करों विष्णु की सेव ॥ विष्णु भये विनु विष्णुकी, सेवा निःफल देव ॥ ४ ॥

रूपमालाछंद—विष्णुह्वै पुनि विष्णु सूरति को हिये महँ आनि ॥ सर्व भावनि सर्वथा करि पूजियो हरिमानि ॥ राति द्योस मनो मई हरि सेव सो रतिमंडि ॥ राज काजनि छाँडिकै अरु और ग्रंथनि छंडि ॥ ५ ॥ देशके अरु ग्राम केशव लोग एक प्रकार ॥ विष्णु भक्त भए महाचित माहँ हीन विकार ॥ देवलोक प्रसिद्ध केशव ह्वै गई यह बात ॥ क्षीरसागर को गए सब देवता अवदात ॥ ६ ॥

देव०—दोधकछंद—हौ प्रभु देवनि के रखवारे ॥ देव वि-

दूषण मारनि हारे ॥ होत जुदैयत भक्त तुम्हारे ॥ देवनिपै तेइ जात न मारे ॥ ७ ॥

श्रीविष्णु–देव विषाद तजो जिय भारे ॥ भक्त सदा प्रहलाद हमारे ॥ दैयत भक्त अभक्त सदाई ॥ मोकहँ जानहु देव सहाई ॥ ८॥ श्री भगवंत जहाँ पगुधारे ॥ आपु तहाँ प्रहलाद विचारे ॥ विष्णुहिं देखतहीं सुख पायो ॥ पूरणकै वहुधा गुण गायो ॥ ९ ॥

प्रह्लाद ॥ रूपमालाछंद–नाथ नाथ विनाथ नाथ अनाथ नाथ सुसिद्ध ॥ देव देव विदेव देव अदेव देव प्रसिद्ध ॥ लोकपालकपालहो सवकाल काल मुरारि ॥ देहु जू वर विश्वनायक चित्त वृत्ति विचारि ॥ १० ॥

दोहा–सुरकुल कमल दिनेश सुनि, दितिकुल कमल हिमेश ॥ देहु देहु नाइकु निरखि, चित्त वृत्ति लवलेश ॥ ११॥ दास चित्त चातकहि प्रभु, वोलि उठे घनश्याम ॥ माँगि सुमति प्रह्लाद वरु, जासों तुमसों काम ॥ १२ ॥

प्रह्लादउवाच–सुनि सर्वग सर्वज्ञ निज, नित्य सत्य सुवेस ॥ सवते नीको होइ कछु, सो दीजै उपदेश ॥ १३ ॥

श्रीविष्णु ॥ परम भक्त प्रह्लाद सुनि, सरस विष्णुपद इष्ट॥ परमानँद मय देखि पुनि, परमानँद की सृष्टि ॥ १४ ॥

देव्यु०–विष्णुहि होत अदृष्ट पुनि, तवहीं श्रीप्रह्लाद ॥ पद्मासन सों वैठिकै, करि विचार अवदात ॥ १५ ॥

प्रह्लादउ०—जाहि विश्वमें हों नहीं, अरु ब्रह्मा परयन्त॥ सबमेंहै सब बाहिरो, होतिहि रूप अनन्त॥ १६॥

दोधक—चंचल जौन प्रमान जु देखो॥ रूप न आपनो रूपक लेखो॥ शब्द न गंध न है रस नीको॥ हेरतु वारस लागत फीको॥ १७॥ निर्ममशब्द सबै तन शोभै॥ भूलिहुँ इंद्रिय लोभ न लोभै॥ बाहर भीतर व्यापक जोहै॥ एक निरीह निरंजन सोहै॥ १८॥ मोमहिंहै जुहों जामें रहोंजू॥ आपुहि आपने काम लहोंजू॥ दूसरे और न जाकहँ बूझों॥ एक चिदानँद रूप अरूझों॥ १९॥

दोहा—चिदानंद संभोगमय, एक रूप अति शुद्ध॥ अखिल दृष्टि ऊपर लसै, मेरी दृष्टि प्रबुद्ध॥ २०॥

दंडक—जाको नाहीं आदि अंत अमित अवाधि युत अकल अरूप अज चित्तमें अतुर है॥ अमर अजर अज अद्भुत अवर्ण अग अच्युत अनामय सुरसना ररतु है॥ अमल अनंग अति अक्षर असंग अरु अस्तुत अदृष्ट देखिवेको परसतुहै॥ विधि हरि हर वेद कहत जोसि सोसि केशौराइ ताकहँ प्रणामहि करतुहै॥ २१॥

दोहा—महामोह अहिराजसों, कोप कंचुकनि गात॥ आवतहीं गरुड़ध्वजै, जान्यो नहीं विलात॥ २२॥ निपट अहंकृत पक्षिणी, मम उर पिंजर छाँड़ि॥ कोजाने कित उड़िइ, तृष्णा राजनि खाँड़ि॥ २३॥

देव्युवाच ॥ दोहा-यहि विधि श्री प्रहलाद सब, केशव चित्त विचारि ॥ चिन्तत रूप समाधि वित, रहे शरीर विसारि ॥ २४ ॥

रूपमाला-गिरिशृंगसे प्रभु चित्त कारक चित्रियो जनु चित्र ॥ तहँ वर्ष पंच सहस्र बीति गए सुनो मखमित्र ॥

दोहा-भयो तबै पातालमें, महाराज कुलदेव ॥ भयो विष्णुके चित्तमें, कछू सोचको लेश ॥ २५ ॥

श्रीविष्णु ॥ तोटकछंद-प्रभुको प्रहलादहिलीन भए ॥ दिति सून सबै इहि पंथ रए ॥ निर्वेद भये दिवि देवनिको ॥ अस्तभयो शशि सूरजको ॥ २६ ॥ विनु सूरज क्यों भुवलोक लसें ॥ भुवलोकनसे सब लोक नसें॥ हम एक इहाँ केहि भाँति बसें ॥ अध ऊरधहूं जलजाल ग्रसें ॥ २७ ॥

दोहा-हमको देवी शासना, सुनियतहै इतिरीति ॥ रक्षहु जग आकल्पलों, दुष्ट अनेकानि जीति ॥ २८ ॥

देव्युउ० ॥ रूपमाला-चित्त मध्य विचारियो हरि सर्व देव समेत ॥ पक्षिराज चढ़े गए प्रहलाद भक्त निकेत ॥ चौंर ढारत सिंधुजा जय शब्द बोलत सिद्ध ॥ नारदादिक विप्र मान अशेष भाव प्रसिद्ध ॥ २९ ॥

श्रीविष्णुउ० ॥ दोहा-परमभक्त प्रहलाद तुम, संतत जीवनमुक्त ॥ देह त्याग यह काल सुनि, तुमको नाहीं युक्त ॥ ३० ॥ राजदयो आशिष दयो, नारायण सविशेष ॥ सूरज

शशि जौं लगि रहैं, तौलौं राज अशेप ॥ ३१ ॥ राज्य कर्‍यो प्रह्लाद यों, अहंकार को छाँड़ि ॥ त्यों तुमहूं या लोक में, राज्य करो अरि खांड़ि ॥ ३२ ॥

वीरसिंह–लीन परमपदसों हुती, पूरण दृष्टि विशुद्ध ॥ फिरि तव ह्वाँतें बूझिये, कैसे होहिं विरुद्ध ॥ ३३ ॥

केशव ॥ शुद्ध वासना रहति है, इहई बात प्रमान ॥ निज आतम सम सव लखत, नीचरु ऊंच महान ॥ ३४ ॥ वाते जीवनमुक्त सम, फिरत जगत सानंद ॥ चाहे तज्यो शरीर को तवहिं तजै नृपचंद ॥ ३५ ॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां प्रह्लाद चरित्र वर्णनं
नाम अष्टदशःप्रभावः ॥ १८ ॥

दोहा–उनईसमें वर्णिवो, वलि को अतिविज्ञान ॥ ब्रह्म भक्त हरि भक्त को, कहिवो सवै विधान ॥ १ ॥ ज्यों साध्यो वलि आपुही, त्यों साधो विज्ञान ॥ कहियै माता करि कृपा वलि विज्ञान विधान ॥ २ ॥

दे॰यु॰ ॥ सुंदरीछन्द–पुत्र विरोचनके वलि दानव ॥ वंदत ताहि सुरासुर मानव ॥ ख्यालहिं लोक विलोक लये सव ॥ एकहि छत्र त्रिलोक छए तव ॥ ३ ॥ भक्तिके वश्य करे हरि श्री हरु ॥ दैयतु भूतल स्व [illegible] अ-
: तीनिहुँ लोकनि ॥ दैयतवास [illegible]

दोहा—वरपै दशकोटिक करचो, भलो राज्य वलिराज ॥ धर्म्म चल्यो चौहूँ चरण, तिहूँ लोक सुखराज ॥ ५ ॥

रूपमालाछन्द—रत्न शृंग सुमेरु के पर बैठिकै इक काल ॥ वुद्धि वृद्धि भई हिये महँ भाँति भाँति विशाल ॥ वलि राज ॥ भोग मैं वहु भोगए, तिहुँ लोक को करिसाज ॥ तृप्ति होति न चित्त में यह कौनु है सुखसाज ॥ ६ ॥

दंडक—चलिकै विमान दिशि दिशिजसु मढ़ि मढ़ि वाढ़ि वाढ़ि युद्ध जुरि वैरी वहु मारे हैं ॥ केशौदास भूपण विधान परिधान गान भामिनी सहित तिहुँ लोकनि विहारे हैं ॥ जल दल फल फूल मूल पटरस युत व्यंजन अनेक अन्न खाइके विगारे हैं ॥ तदपि न भागी भूख चित्त न विशुद्ध होत सकल सुगंध दुरगंध कैकैडारे हैं ॥ ७ ॥

देव्यु० ॥ दोहा—यह विचारि गुरु पै गये, कीने विविध प्रणाम ॥ वात आपने चित्त की, कहन लगे गुणग्राम ॥ ८ ॥

वलिराजो० ॥ तारक—सुनियै चितदै यह वात महागुरु ॥ सव दूरि करे सुरलोकनिके सुर ॥ अव मो मत लीने चले हर श्रीहरि ॥ विधि वश्यकरे वहु यज्ञनि को करि ॥ ९ ॥ भय भागि हरी निदरचो सुरनायक ॥ और है जीतिवे को कोइ लाइक ॥ कहियै सुकृपा करि ताहि करों वश ॥ अति सोधकरों जगती अपने यश ॥ १० ॥

शुक्र—है इक देश विशाल महामति ॥ सव देशनि ऊ-

पर देश महाअति॥ सूरज सोमको अस्त उदोतु न॥ नित्य प्रकाश निशानिशहोतु न ॥ ११ ॥ है न तहाँ सरिता गिरि कूप न ॥ भूमि अकाश न सिंधु सरूप न ॥ काम न क्रोध न लोभ न मोह न ॥ वंधन पाप अपाप प्रवोध न ॥ १२ ॥

दोहा—राजा है ता देशको, सव समान सर्वज्ञ ॥ अजित अनन्त अमेय है, जानत नाहिं न अज्ञ ॥ १३ ॥ ताके मंत्री एक है, कर्त्तम कर्त्तु समर्थ ॥ प्रगट अन्यथा करन अरु, जानत अर्थ अनर्थ ॥ १४ ॥

वलिराजोवाच—नाम कहा ता देशको, मंत्री को कहि आसु ॥ कौन धाम वा राजको, मोते अजित प्रकासु ॥१५॥

शुक ॥ रूपमाला—आनंदमय वह देश है तिहुँलोक को अतिइष्ट ॥ राजा तहाँ द्विवल पूरण सर्व भाइ निदिष्ट ॥ मंत्री प्रभाव प्रसिद्ध है इहि नाम अद्भुत भेष ॥ कर्त्तार पालक विश्ववालक युक्ति शक्ति अशेष ॥ १६ ॥ शासना जिनकी भवैं शशि सूर वासर राति ॥ शेषनाग सदा रहैं धरणीधरें इक भाँति ॥ मेड़ छाँड़ि सकैं न सिंधु वहै निरंतर वायु ॥ छ्वैसकै काल न वीच प्राणनि क्षीणता विनु आयु ॥ १७ ॥

सवैया—केशवदास अकाशमें शब्द अकाशन शब्द प्रकाशु न जानतु ॥ तेज वसे तरु खण्डनि में तरु खंडनि तेजनि को पहिचानतु ॥ रूप विराजत चित्रनि में परि चित्रन रूप चरित्र वखानतु ॥ त्यों सव जीवनि मध्य प्रभाव

 न जीव प्रभाव न मानतु ॥ १८ ॥

दोहा—जाकी सत्ता ते लगतु, साँचो सो संसार ॥ जैवै को तादेव नृप, कीजै चित्त विचार ॥ १९ ॥

बलिराजो—जौं दई प्रभुता सबै प्रभु ह्वै कृपालु सुभाउ ॥ मोहिं देहु बताइ सो थल बेगिदै जिहि जाउ ॥ कौन भाँति सुजीतिये प्रभु दीजिये समुझाय ॥ मंत्र यंत्र तपादिते तेहि माहँ चित्तलगाय ॥ २० ॥

शुक्र॥दोहा—ब्रह्म भक्ति हरिभक्ति प्रभु, कैसे होहिं प्रसन्न ॥ सोईमति उपदेशिए, मन क्रम वचन प्रसन्न ॥ २१ ॥ ब्रह्म भक्ति कीने नृपति, उपजि परे हरिभक्ति ॥ ताते पहिलेही तुम्हैं, हों सिखऊँ द्विजभक्ति ॥ २२॥

दोधक—विप्रनि की सब सीख सुनो जू ॥ ब्राह्मण ब्रह्म समान गुनो जू॥ देहु सबै इक दुःख न दीजे ॥ आशिपसो चरणोदक लीजे ॥ २३ ॥ छाँड़ि अहंकृत विप्रनि पूजो ॥ भूतलमें एइ देव न दूजो ॥ काम सबै तेहि पूजन पूजैं ॥ ब्राह्मण पावहु पूजन दूजैं ॥ २४ ॥

रूपमाला—निग्रहानुग्रह जो करे अरु देइ आशिपगारि॥ सो सबै शिरमानि लीजै सर्व्वथा मनुहारि ॥ जानि उत्तमविष्णुजू भृगु को धर्‍यो उर तात ॥ सर्वभाव अजेयता तिन पाइयो यह वात ॥२५॥ पंगु ब्राह्मण गुंग अंध अनाथ राज कि रंक ॥ अज्ञ होहि कि विज्ञ भेद न मानिये करि शंक ॥ पू-

जियै मन वचन कर्मनि प्रेम पुण्यप्रमान॥ सावधान ह्वै सेइए सब विप्र ब्रह्मसमान ॥ २६ ॥

दोहा—कहै भागवत मैं असम, गीता कहै समान ॥ अप्रमान कौनहिं करौं,कौनहिं करौं प्रमान ॥ २७ ॥

शुक्र दोहा—दोऊ वचन प्रमाण हैं, अपनो विषयनि पाइ॥ इह जानो हरि भक्ति पर, समुझो सुख सुखदाइ ॥२८॥ गायत्री संयुक्त हैं,सबै विप्र हरि भक्त ॥ वेद पुराणनि में कहे,चारोवि-प्र अभक्त ॥२९॥ तिन्हैं छाँड़ि संपूजिये, बामन ब्रह्म सरूप॥ कबहूं भेद न मानियै, विप्र होत युगरूप ॥ ३० ॥ श्रुति स्मृति शास्त्रनि सुनि समुझि,कर्म करै प्रतिकूल ॥ हरि पद विमुख जो विप्रहैं, नरकनि को अनुकूल ॥ ३१ ॥ पति संगा अपवित्र नृप, तिनिहूं को हित हेरि ॥ स्मृतिश्रुति शास्त्रनि करत हैं, ताकी निन्दा टेरि॥३२॥चारि कर्म युत विप्र कुल, जो कैसोई होइ॥सबही को गुरु सर्वदा,सबते पावन सोइ३३॥

वलिराजो॥ चारि कर्म ते कौन हैं, तिन ते होत अभक्त॥ हम सों कहि समुझाइयै, जिय में ह्वै अनुरक्त ॥ ३४ ॥

शुक्र—हरि को हिय जानै नहीं, द्विजकर्मनि अनुरक्त ॥ जनक जननि कहँ देतदुख, माठा पत्य अभक्त ॥ ३५ ॥ इ-नको दूर न छाड़ियै, कीजै द्विज आशक्ति ॥ त्रिविध पाप मिटि जाहिं उर, उपजि परे हरिभक्ति ॥ ३६ ॥ अकल अविद्या रहित है, श्रद्धायुत हरिभक्त ॥ साधो नवधा अंग ˘ ,तजि सबसों आशक्त ॥ ३७ ॥ नव रस मिश्रित साधि नृप

नवधा भक्ति प्रमानु ॥ दानव मानव देवगण, भक्त कमल हरिभानु ॥ ३८ ॥ जीतहुँ अद्भुत श्रवण सों, सुमिरण करुणा जानि ॥ सहित युगुप्सा दासता, पाद भजन भय मानि ॥३९॥ वंदन वीर शृँगार सों, अर्चन सख्यसहास॥ रौद्र कीर्त्तन सम सहित, आत्मनिवेद प्रकाश ॥ ४० ॥

रूपमालाछन्द—दीन स्मर दीन वत्सल नाम नाम निदान ॥ कर्म अद्भुत भाव सों सुनि नित्य वेद पुरान ॥ छाँड़ि मानज मानसो उपमा न कीजै दास ॥ पाद सेवहु ब्रह्म को तजि सर्व भावनि त्रास ॥ ४१ ॥

दोहा—कीरति पठि नीरस कहै, रुद्र रूप मनु जीति ॥ मन जीते उर उपजि है, परब्रह्म सों प्रीति ॥ ४२ ॥

रूपमालाछन्द—काम क्रोधहि जीति कै मद लोभ मोह निवारि ॥ मित्र ज्यों हँसि मग्न आनँद अँचि साजि शृँगारि ॥ रूप संवर संदि सों वहु आपुयो अनयास ॥ पाइ पूरण रूपको रमि भूमि केशवदास ॥ ४३ ॥

देव्यु० ॥ दोहा—शुक्राचारज के कहे, वलि साधी सव रीति ॥ शुद्ध भयो मन सर्वथा, वढ़ी ब्रह्म सों प्रीति ॥ ४४ ॥ तैसे तुमहूँ छाँड़ि भ्रम, होउ ब्रह्म सों लीन ॥ पावहु परमानंद ज्यों, संतत नित्य नवीन ॥ ४५ ॥

इति श्रीचिदानंदमग्नायां विज्ञानगीतायां वलिचरित्र वर्णनंनाम एकोनविंशतितमःप्रभावः॥ १९॥

दोहा—सृष्टि वीज के वीज को, ताके वीजहि जानि ॥ ॥ जीवउ० ॥ कौन वीज ता वीजको, ताको वीज वखानि ॥१॥

देव्यु—युक्त शुभाशुभ अंकुरनि, वीज सृष्टि को देहु ॥ भावाभाव सदानिमें, सुख दुखदा इह गेहु ॥ २ ॥

चंचरी—वीज देह को विदेह चित्त वृत्ति जानिए ॥ जाहि मध्य स्वप्न तुल्य सम्भ्रमादि मानिए ॥ दोइ वीज चित्तके सुचित्त है सुनो अवै ॥ एक प्राणस्पन्द है द्वितीय भावना सवै ॥ ३ ॥

रूपमालाछंद—चंद सूरहि चंद कै मग सुष्मनागतदीश ॥ प्राणरोधन को करै जेहि हेत सर्व ऋषीश ॥ चित्त शोधन प्राण रोधन चित्त शुद्ध उदोत ॥ व्याधि आदि जरे जरा युत जन्म मरण न होत ॥ ४ ॥

पादाकुल—यद्यपि तीरथ नीरनिसेवहु ॥ सकल शास्त्र मय देवनि देवहु ॥ यद्यपि चित्त प्रवोध न वोधिय ॥ तद्यपि चित्त निरोधन रोधिय ॥ ५ ॥ यद्यपि ज्ञान वियोग धरा वढ़्यो ॥ तवहूँ सोदर साथ सदा वढ्यो ॥ यद्यपि जर्जद शेष वखानिय ॥ तवहूं चित्त सुमित्त न मानिय ॥ ६ ॥

दोहा—दोइ वीज हैं चित्त के, ताके वीजनि जानि ॥ सो संवेद वखानिये, केशवराइ प्रमानि ॥ ७ ॥ वीजु सदा संवेद को, संविद वीज विधान ॥ संविज अरु संघात को छाँड़त हैं मतिमान ॥ ८ ॥ संविद को वितु वीज है, ताके

सत्ता होइ ॥ केशव राइ बखानियै, सो सत्ता विधि दोइ ॥ ॥ ९ ॥ एक सु नाना रूप है, एक रूप है एक ॥ एक रूप संतत भजो, तजियै रूप अनेक ॥ १० ॥ एक काल सत्ता कहै, विमति चित्त को ताहि॥एक वस्तु सत्ता कहै, चित सत्ता चित चाहि ॥ ११ ॥ ताको वीजु न जानिये, जाकी सत्ता साधु ॥ हेतु जु है सब हेतु को, ताही को आराधु ॥ १२.॥

सुंदरीछंद–संगुवै अर्थ अनर्थ बढ़ावत ॥ संगुवे वस्तु विचार पढ़ावत ॥ संगुवे भुक्त लताकहँ वारण ॥ ताते करौं प्रभु संगु निवारण ॥ १३ ॥

जीवउ०॥ दोहा–संशय तृणचपदाहिकै, देवि सुनो सुखदाइ॥ संग कहावतु है कहा, कहि माता समुझाइ॥१४॥

दोधकछंद–एक सुराज सुसंगु कहावै ॥ एक संग इह देह कहावै ॥ और बासना संग तजो जू ॥ जीवनमुक्त प्रभाव भयो जू ॥ १५ ॥

दोहा–नशे वासना गंधको, संग सबै नशि जात ॥ निशा नशे नाशि जात ज्यों, निशिचरको संघात॥ १६॥

जीव–महामोह तम चंदके, तिनकी संगति ज्योति ॥ ता देही को देहकी,कहो कौन गति होति ॥ १७ ॥

देव्युवाच–संगनशै जिहि भाँति ज्यों,उपजै पाप अपाप॥ तिनि सों लिप्ति न होहिं ते, ज्यों उपलनि को आप ॥१८॥

वीरसिंह–वेद कहै शिव सो सदा, सब विधि जीवनमुक्त॥ कहि केशव कैसे भयो, ब्रह्म दोष संयुक्त॥ १९॥

केशव–अकस्मात जो अशुभ शुभ, उपजि परे कहुँ आनि॥ तौ वह लिप्त न होइ जो, शिव कीनो यह जानि२०॥

वीरसिंह–महाप्रलय करतार को, कैसे बंधन होइ॥ हम सों कहि समुझाइये, कहिय दोष क्यों होइ॥ २१॥

केशव॥ रूपमालाछंद–ईशको जगदीशको यह शासना सब काल॥ मारि आशु अधर्म को करि धर्म को प्रतिपाल॥ पाप को तिहि हेत ते तिनि कऱ्यो आशु विनाश॥ धर्म को जग मध्य में सुनि कीन पुंज प्रकाश॥ २२॥

दोहा–दुहूं भाँति की शासना, मनोभाव भयमानि॥ जौ न मानिये सर्वथा, प्रभु को देहु बखानि॥ २३॥ प्रभु को कह्यो करै न यह, अधिकारीनि अधर्म॥ ताते राखे लोक में, लोकाधिप को धर्म॥ २४॥ देव जुरायो ईशको, रूप सुताहि प्रकाश॥तेहीते संसार को, ह्वैहै आशु विनाश २५॥ जैसे देवनि देवमणि, करत यदपि जगदीश॥ तैसे अपने रूप को, जतन करो तुम ईश॥ २६॥

जीवउ०–जो हरि भक्ति वियोग की, कैसे साधत साधु॥ कैसो तिनको रूप है, कहिये देवि अगाधु॥ २७॥

देव्यु॥ रूपमालाछंद–एक जीव प्रवृत्त एक निवृत्त जा- सुजान॥ सर्व सों अपवर्ग सों रत होत हेत बखान॥ हैं

कहाँ अपवर्ग केशव नित्य संश्रृति लोक ॥ स्वर्ग भोगनि भोगवै जगते निवृत्ति विलोक ॥ २८ ॥ स्वर्ग नर्कनि जात आवत को फजीहति होइ॥ आइये जिहि लोक ते नहिं जीव चारै कोइ ॥ आगिले मरिहैं मरत अव पाछिले परतच्छ ॥ मेटिये मरिवो वखानु निवृत्ति ये मतिअच्छ ॥ २९ ॥

दोहा—क्यों तजिये कुल राग अरु, क्यौं तजिये संसार॥ या विचार ते होति है, प्रथम भूमिका चार ॥ ३० ॥

रूपमालाछंद—लोभ दंभ मदादि मान विमोह क्रोध विहीन ॥ वेद भेद विचार धारण ध्यान कर्महि लीन ॥ वस्तु सिद्ध प्रसिद्ध साधन साधिवे कहँयुक्त ॥ भूमिका यह दूसरी जव होइ जी अनुरक्त ॥ ३१ ॥

त्रिभंगीछन्द—निर्दे वहु वारनि करि निर्द्धारनि वस्तु विचारनि संसारनि ॥ फल फूल अहारी विपिन विहारी तजि विविचारी मतिवारनि ॥ तजि दुख सुख साथनि नाथ अनाथनि गुण गण साथनि श्रीनाथनि ॥ भ्रम भार अमीतनि मोह वितीतनि इंद्रिय जीतनि दिन वीतनि ॥ ३२ ॥

दोहा—पाइ तीसरी भूमिका, केशव होत प्रबुद्ध ॥ असंसंभ द्वै भाँति के, मो पै सुनि मति शुद्ध ॥ ३३ ॥

एक होइ साधारणे, दूजो संश्रृति जानि ॥ तिनके रूप प्रकार अव, तुम सों कहो वखानि ॥ ३४ ॥

रूपमालाछंद— भोगता करता न हों अव वाध वाधक

होन ॥ व्याधि आधि वियोग योग अभोग भोगनि कोन ॥ संपदा विपदा सबै सुख दुःख आवत जात ॥ एक पूरव कर्म ते भ्रमिये न कौनहुँ जात ॥ ३५ ॥

दोहा—इहसाधारण जानिबो, असंसंगु इत्यादि ॥ कहौं दूसरो चित्त दै, सुनिये देव अनादि ॥३६॥ चारि चहूं भीतर जजो, अधऊरधन दिशानि ॥ नाहीं अर्थ अनर्थ में, ना जड़ अजड़नि मानि ॥ ३७ ॥ जाकी प्रभा प्रकाशिये, अस्ति अनंत असाधु ॥ सबते न्यारो सर्वदा, असंसंगु सो साधु ॥३८॥

विजय—चित्त सुनाल के अग्रलसे बहु कंठव कष्ट विलास विलासे ॥ कारण कोमल पल्लव केशव दास संतोष सुवासनि वासे ॥ भूत असंग की तीसरि भूमि मिले अलि अद्भुत संश्रृतिनासे ॥ भूप विवेक हिए सरसी महँ मित्र विचार प्रकाश प्रकाशे ॥ ३९ ॥

दोहा—प्रथम भूमिका अंकुरै, दूजी होत प्रकाश ॥ फले तीसरी भूमिका, फल अद्भुत अविनाश॥४०॥ भासतुहै अद्वितीय उर, द्वैतनुसे अकुलाइ ॥ लोक विलोके स्वप्नवत, भूमि चतुर्थीपाइ ॥ ४१ ॥ तृतिया जाग्रत सम लसै, चौथी स्वप्न समान ॥ जानि सुषुप्तक पाचईं, भूमि विभाग प्रमान ॥४२॥ छूटि जातहै आपुते, ग्रंथि सुसब अनयास ॥ जीवन मुक्त दशालसै, छठी भूमि भ्रम नास ॥ ४३ ॥ सुवद सप्तमी भूमिका, निश्चल चित्त विलास ॥ चित्रदीपकी ज्योति तव

पूरण परम प्रकास ॥ ४४॥ अंतर बाहिर हीनिहै, पूरण बाहिर अंत ॥ जल थल घट आकाश ज्यों, पूरण पूरणवन्त ॥ ४५ ॥ पाइ सतमी भूमिका, भक्ति न होत विदेह ॥ देवरूप स्वच्छंद जग, रहत विपिन अरु गेह ॥ ४६ ॥

जीव—हमको देवीकरि कृपा, कहो देवको नाम ॥ जिनको करि उच्चार मुनि, पल पल करत प्रणाम ॥ ४७ ॥

देव्यु ॥ भुजंगप्रयात—कहैं एक तासों शिवे शून्यएकै ॥ कहैं काल एकै महाविष्णु एकै ॥ कहैं अर्थ एकै परब्रह्म जानो प्रभा पूर्ण एकै सदा शून्य मानो ॥ ४८ ॥

दोहा—एक आतमा कहतहैं, एक कहैं चित भक्त ॥ इहि विधि नाना नाम जग, लसत सबै अनुरक्त ॥ ४९ ॥ अमित अमेय अरूपके, ऐसेहैं सबनाम ॥ मुनि भक्तनिहे गहि लए महाराज गुणग्राम ॥ ५० ॥ भक्ति योगकी भूमिका,इहिविधि साधन साधु॥होत पार संसारके,यदपि अनंत अगाधु॥५१॥

सवैया—पाइ पदारथ कुंभ निरै दिवि सुंडि त्रिधा वरुनी जनिऐजू ॥ कर्म अकर्म दियो बन जीभ पियास क्षुधा भवमें भनिऐजू ॥ लोक विभेदति वासना वासु दरी मनु दीरघमें गनिऐजू ॥ इच्छगजी मदमत्त बनी तनमें शर धीरजसों हनिएजू ॥ ५२ ॥

दोहा—जीवन इच्छहि छुरित मन, आवत कब जबदीन॥ इच्छा तजि जे चलतहैं,परम इच्छ परवीन ॥ ५३ ॥ तजे न

करिबो कर्म को,जब लगि जगत प्रकाश ॥ ह्वै जैहै जब एकता सहजै कर्म विनाश ॥ ५४ ॥

इति श्रीचिदानंदमयायां विज्ञानगीतायां योगसप्त भूमिका वर्णनं नाम विंशतितमःप्रभावः ॥ २० ॥

दोहा—एकवीशमें वर्णिबो, महामोह परिहार ॥ उत्तर मनुको सृष्टिको, राम नाम निस्तार ॥१॥ अहंकार द्वै भाँति है, ताहि तजों केहि भाव ॥ कहो देव तुम करि कृपा, उपजै ज्ञान प्रभाव ॥ २ ॥

देवउ०—तीनि भाँति त्रैलोक्य में, अहंकारके भेव ॥ द्वैशुभ संतत समुझिये, अशुभ तीसरो देव ॥ ३ ॥

रूपमाला—हों अरूप अमेय हों जड़ चेतनादिहु अंत ॥ शोभिए जग मध्य हों जगु मोहिं मांझ लसंत ॥ भोगता करता न हों अब टोहिये सु उपाउ ॥ हों भयो जिहिते सुहों कि रहों कि देहु कि जाउँ ॥ ४ ॥

अथ अशुभ ॥ देश ग्राम पुरीन को पति बड़ो है सुनरेश ॥ पुत्र मित्र कलत्र को प्रभु हों भलो शुभ वेश ॥ सूर हों सर्वज्ञ हों बलवान हों धनवान ॥ मोहिं पूजहु मो विना जग और को भगवान ॥ ५ ॥

दोहा—आदि अहंकृत द्वै भले, परमानन्द निकेत ॥ हंकार जो तीसरो, सोई बंधन हेत ॥ ६ ॥ सात्विक राजस

तामसै, एकहोत गति धीर ॥ तजियै राजस तामसै, सतगुण भजिये वीर ॥ ७ ॥ सब मेरोई रूप है, सब को हों हितवन्त ॥ अहंकार कासों करों, तजि पूरण भगवन्त ॥ ॥ ८ ॥ जहों अहं मम जीतिहो, अखिल लोकमणिमित्र ॥ धूम धोर हरिसे तहीं, देखो अमित चरित्र ॥९॥ सकललोक ए वसत हैं, अहंकार आधार ॥ ताहि नशतहीं नशत ज्यों, पटु प्रवोध भ्रमभार ॥ १० ॥

तारक—कवहूं यह सृष्टि महाशिव ते सुनि ॥ कवहूँ विधि ते कवहूँ हरिते गुनि ॥ कवहूँ विधि होत सरोरुह के मग ॥ कवहूँ जल अंवर ते कहिये जग ॥ ११ ॥ कवहूँ धरणी पल में मय पाहन॥कवहूँ जल मय मृण मै अरु कंचन॥१२॥ हरते विधि हैं कवहूँ विधिते हर ॥ हरते हरि जू कवहूँ हरि ते हर ॥ १३ ॥

दोहा—करियै करता मारियै, कवहूँ मारनिहार ॥ कवहूँ पालक पालियै, विना नियम संसार ॥१४॥ पालक संहारक रवन, भक्षक भक्ष अपार ॥ सवहींको सव जानियै, विना नियम संसार ॥ १५ ॥ पालक संहारक रचक, भक्षक रक्ष अपार ॥ सवही सवको होतहै, को जानै कै वार ॥१६ ॥ वड़ी फजीहति जगतकी, भाँति अनेक अरूप ॥ एक रूप तवते जुहै,अच्युत रूप अनूप ॥ १७ ॥

नृपवीरसिंह—ऐसोई जो जीवहै, अज निरीह निर्लेप ॥ कोजग वद्ध अवद्धहै, कीजै भ्रम विच्छेप ॥ १८ ॥

केशव—जगको कारण एक मन, मनको जीत अजीत ॥ मनको मन मुनि शत्रुहै, मनहींको मन मीत ॥ १९ ॥ मनको रूप अरूपहै, जैसोहै आकाश ॥ वढ़त वढ़ाए बुद्धि के, घटत घटाए आस ॥२०॥ मनकी दीन्हीं गांठि प्रभु, मनहीं पै छुर आउ ॥ ज्यों मल मलहीं धोइए, विषहीं विष सु उपाउ॥२१॥

वीरसिंह—संतत जीव चिदंश जग, पाप पुण्यके भोग ॥ कहो कौन को होत है, ज्यों समुझैं सब लोग ॥ २२ ॥

केशव—जोई करै सुभोगवै, यह समुझो नृपनाथ ॥ स्वर्ग नर्क बंधन मुकुत, मानो मनकी गाथ ॥ २३ ॥

वीरसिंह—अंग भंग है देह को, पीड़ित देखिय देह ॥ मनको कैसे मानियै, मेटो यह संदेह ॥ २४ ॥

केशव मिश्र—जिनि जिनि अंगनि सों मिलै, करत शुभा शुभ चेतु ॥ भोग करत तिनहीं मिल्यो, सह संगति को हेतु ॥ २५ ॥ हरे हरे मनु ऐंचि कै, कीजै मन को हाथ ॥ इंद्रिय सर्प समान हैं, गारुड़ मन के साथ ॥ २६ ॥

सवैया—फूलत हो सुख देखि न भूलहु लाभु यहै भली बात सिखावो ॥ जौं ललकै अपमारग को मनु तौ दुखदै संतमारग लावो ॥ मूढ़न साथ परे फिरि हाथ न आई है नाथन माथ नशावो ॥ नो कुल को अवलोकि कै केशव बालन ज्यों मन क्यों न पठावो ॥ २७ ॥

दोहा—कौन तजै मन संग जो, कौन संग मन होइ॥ सदा जीव उन संग है, जग परिपूरण सोइ ॥२८॥

रूपमालाछन्द—जीव सों चिद्रूप सों, इतनो सुअंतर जानि॥ विष्णु सों अरु जीव सों तितनो महामति मानि॥ जीव सों मनसों तितो मनु सों विकल्पनि जानि॥ संकल्पसों अरु सृष्टि सों तितनो विशेष वखानि॥२९॥

दोहा—क्रम क्रम सब को छाँड़ियै, ममता प्रभु मति युक्त॥ अहंकार परिहार कै, ह्वै जीवनमुक्त ॥३०॥

जीवउ०—हम सों कहि समुझाइये, जीवनमुक्त विदेह॥ जाहि सुने ते होइगो, शुद्ध भाव इहि देह ॥३१॥

देव्यु॥ जीवनमुक्त लक्षण ॥ सवैया—लोक करै सुख दुःखनि कै जिनि राग विरागनि या महँ आने ॥ डारै उपारि समूल अहंतरु कंचन कांचन जो पहिचाने॥ बालक ज्यों भवै भूतल में भव आपुनसे जड़ जंगम जाने॥ केशव वेद पुराण प्रमाण तिन्हें सब जीवनमुक्त वखाने॥३२॥

विदेह लक्षण ॥ सवैया—देखतहूँ अनदेखतहूँ लिपि रूपक सेन सरूप को धावै॥ आपु अनिच्छ चले परइच्छ को केशवदास सदापति पावै॥ कर्म अकर्मनि लीन नहीं निज पायज ज्यों जल अंक लगावै॥ ह्वै अति मत्त चिदानँद मध्यनि लोग सदेह विदेह कहावै॥३३॥

हरिगीती—जीवन मुक्त विदेह के सुनि सकल लक्षण जानि-

ये ॥ छाँड़ि जगत मिथ्या सकल महात्यागी मानिये ॥ लोभ मोह मद काम क्रोध की कामना उपजै डरें॥ लोक अलोक विलोकत जे सब साधना समेत गुरे॥ सुनिये कछू अरु देखिये वाणी वस्तु बखानिये ॥ छाड़े जु मानि मिथ्या जगत महात्यागी मानिये ॥ ३४ ॥

केशव ॥ दोहा—यह सुनि सब झूठो लग्यो, दयों परमपद वित्त ॥ उपजी विद्या बोधमय, भूलि गयो सुतमित्त ॥ ३५ ॥

नाराच—नशी कुबुद्धि राति निन्द कल्पना समेतहीं ॥ विमोह अंधकार गो पतालके निकेतहीं ॥ विभाति ज्ञान नित्यके विनोद लोभहे भयो ॥ प्रबोधको उदै विलोक ज्योतिवन्त ह्वैगयो ॥ ३६ ॥

दंडक—जैसे भट साजि सैन हाथलै हथ्यार रण भारे भारे अरिगण जीति जीते मनको ॥ मारतंडमंडलको भेदत अखंड मति भूलि जात पुत्र मित्र सब देवगनको ॥ तैसे सत संग श्रद्धा विवेक वैराग बुद्धि छाड़िके धरेई वेद सिद्धि सो साधनको ॥ केशौदास हरिकी भगतिके प्रसाद भयो जीवन मुकुत मिलि आतमाके जनको ॥ ३७ ॥

दोहा—जैसे बंधन हेत तन, क्षेत्र छुरिनिसे मारि ॥ बंधन काटे बंदि के, छूटे भगति विसारि ॥ ३८ ॥ तौलों तम राजै तमी, जौलौं नहिं रजनीश ॥ केशव ऊगे तरणिके, तमुतमीन तमीश ॥ ३९ ॥ ऐसोह्वै जग में रहै, सबसों वैर

नं नेह ॥ छाँड्यो चाहै जगत को, तबहीं छाड़े देह ॥ ४० ॥ यहि विधि सों हरिभक्ति करि, साधु होत सब भक्त ॥ सबै ब्रह्मचारी गृही, दान प्रशस्त विरक्त ॥ ४१ ॥

वीरसिंह—ऐसी ह्वै है जब दशा, तब तौ अति बड़भाग ॥ कौन भाँति बनवास बिन, घरहीं हरिसों राग ॥ ४२ ॥

केशव॥सवैया—निशि वासर वस्तु विचारहि कै मुख सांचु हिये करुणा धनु है ॥ अघ निग्रह संग्रह धर्म कथानि परिग्रह साधुनिको गनुहै ॥ कहि केशव भीतर योगजगै अति बाहिर भोगनिसों तनुहै ॥ मन हाथ सदा जिनके तिनके बनहीं घरहै घरही बनुहै ॥ ४३ ॥

वीरसिंह ॥ दोहा—कठिन रीति यहऊ कही, घरहीं माँझ विरक्ति॥हमसनि पर ज्यों होइ त्यों, कहियै श्रीहरिभक्ति४४॥

केशवमिश्र ॥ चंचरी—आदि देव पूजि पुंज रामनाम लीजई ॥ न्हान दान धर्म कर्म छद्म छाँड़ि कीजई॥सत्य बोलियै सदा विपत्ति संपदानि सो ॥ राज राज वीरसिंह चित्त शुद्ध होइ सो ॥ ४५ ॥

वीरसिंह॥दोहा—राम नाम को तत्त्वसब,हम सों कहो अशेष ॥ चित्त हमारो सुनतही, शुद्ध होत सविशेष ॥ ४६ ॥

केशवमिश्र—ऋषि वशिष्ठ सों विनय कै, बूझेहु हे मुनि मग्न ॥ राम नाम महिमा सुनहु, वीरसिंह शत्रुघ्न ॥ ४७ ॥

शत्रुघ्नउवाच—कहो वशिष्ठकुल इष्ट मति, राम नामको भेद ॥ जाहि सुने ते जाइगो, सबै चित्त को खेद ॥ ४८ ॥

वशिष्ठ उवाच—जब वेद पुराण नसैहैं ॥ जप तीरथ मध्य-बसैहैं ॥ सो उपदेश कुमारि किवारे ॥ तब कलि केवल नाम उधारे ॥ ४९ ॥

दोहा—मरणकाल कोऊ कहै, पापी सों भयभीत ॥ सुख-ही हरिपुर जाइगो, गावै सब जग गीत ॥ ५० ॥ राम नाम के तत्त्व को, जानत को न प्रभाउ ॥ गंगाधरके धरनिधर वाल्मीकि मुनिराउ ॥ ५१ ॥

केशवमिश्र—वीरसिंह नृपसिंह मणि, मैं वरणी हरिभक्ति ॥ जाहि सुने सहसा सुमति, ह्वै हैं पापविरक्ति ॥५२॥ जीत्यो मोह विवेक ज्यों, पाइ बोध को भेव ॥ त्योंतुम जीतो शत्रु सब, राजवीरसिंहदेव ॥ ५३ ॥

भुजंगप्रयात—लहै संपदा आपदा को नसावे ॥ सदा पुत्र पौत्रादिकी वृद्धि पावै ॥ पढ़ै बुद्धि वैराग्यकारी अभीता ॥ सुनावै सुनै नित्य विज्ञानगीता ॥ ५४ ॥

दोहा—सुनि सुनि केशव राइ सों, रीझि कह्यो नृपनाथ ॥ माँगि मनोरथचित्त के, कीजै सबै सनाथ ॥ ५५ ॥

केशवमिश्र—वृत्ति दई पुरुखानि की, देऊ बालनि आसु॥ [illegible] आपनो जानि कै, गंगा तट देउ बासु ॥५६॥ वृत्ति दई

पदवी दई, दूरि करो दुख त्रास ॥ जाइ करो सकलत्र श्रीगंगा तट वस बास ॥ ८७ ॥

इति श्रीमिश्रेकशवदासविरचितायां चिदानंदमग्नायां विज्ञानगीतायां एकविंशःप्रभावः ॥ २१ ॥

दोहा ॥ अंक व्योम वसु भू वरष, पौष पक्ष उजियार ॥ तिथि त्रयोदशी पूर्ण भा, शुभ गीता बुधवार ॥ १ ॥ विदित देशकारूषमें, छत्रधारि अवनीश ॥ लेखत भयो वसंतऋतु आयसु लय निज शीश ॥ २ ॥

इति विज्ञान गीता समाप्ता॥

१ मलद

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.
खेमराज श्रीकृष्णदास
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना-मुम्बई.



केवल ६ छः रु० रक्खागयाहै, उत्तम जिल्दबंधी है, आशा है कि सज्जन पुरुष शीघ्र उक्त ग्रंथके गुण ग्रहण करके मेरे परिश्रमको सफल करेंगे ॥

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत सटीक रामायण

श्रीयुतपं० ज्वालाप्रसादकृतसंजीवनीटीका ॥

लीजिये महाशय! कविशिरोमणि तुलसीदासजीकी अपूर्व कविताका अक्षरार्थ भाषामृत भी लीजिये, सम्पूर्ण क्षेपकोंसहित और श्रुतिस्मृतिपुराणोंके अद्भुत दृष्टांतों सहित जिसमें सम्पूर्ण शंका समाधानका विवरण है, तुलसीदासजीका समग्र जीवनचरित्र, माहात्म्य, चतुर्दश वर्ष वनवासका तिथिपत्र और अष्टम रामाश्वमेध लवकुशकाण्ड भी अक्षरार्थ सहित सम्मिलितहै, गूढार्थ, अक्षौहिणीकी संख्या, प्रश्नावली, भजनमाला, प्रभाती आदिके सिवाय परम मनोहर फोटोग्राफके विचित्र चित्र भी हैं, सूर्य्यवंशका वृक्ष और हनुमान्‌जीकी चित्रित प्रतिमाहै इन सबके सिवाय कठिन २ शब्दोंका बड़ा कोश भी लगाया गयाहै. ऐसी रामायण आजपर्य्यन्त अन्यत्र कहीं नहीं छपी देखतेही तन मन प्रसन्नहोगा मूल्य ८ रु० है जिल्द चित्रित सुनहरी परम मनोहर है ॥

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण.

संस्कृत मूल और भाषाटीका सहित खुलापत्रा ॥

कविकुलतिलक आदिकवि महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण समग्र ग्रंथ माहात्म्य और अनुक्रमणिका टिप्पणी शंका समाधानसहित परमपुष्ट मोटे और चिकने कागजपर सुवाच्य मनोहर अक्षरोंमें छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुतहै-हिन्दोस्थानमें आजपर्य्यंत इसका ऐसा भाषानुवाद नहीं हुआथा इसकी टीका अत्युत्तम परम सुगम और ललित मनरंजन शब्दोंमें विद्वद्वर शिरोमणि श्रीयुत पं० ज्वालाप्रसाद मिश्रजीने अत्यन्तही उत्तम की है पद पदका अर्थ दर्पणवत् झलकायाहै सकल गुणआगरी नागरीकी पूरी लालित्यता सर्वांगरूपसे दरशायी है यह बालसे वृद्धतकको परमोपयोगी है कथा बांचनेवाले विद्वानो को इससे बहुतही लाभ प्राप्त होवेगा केवल अक्षरमात्रका बोध होनेसेही सज्जनजन इस रामायणका पारायण सहजमें कर सकेंगे और कथा बाँचकर धन यश लक्ष्मीके भागी होंगे ऐसा सुंदर मनोहर रमणीक ग्रंथ होनेपर भी सबके सुगमार्थ आश्विनशुदी १०तक

